कैंसर

आयुर्वेद, आधुनिक चिकित्सा, अनुसंधान, औषधी, उपचार

कैंसर उन्मूलन के लिए समर्पित संस्था श्री नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान का प्रकाशन

प्रकाशक :

श्री नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान

मोतीबोर का खेड़ा, तहसील-आसींद

वाया - रायला, जिला-भीलवाड़ा (राजस्थान)

टोल फ्री नंबर. : 84484-49569

ई-मेल : shreenavgrahaashram2017@gmail.com

वेबसाइट: www.shreenavgrahaashram.org

फेसबुक : Shree Navgrah Ashram

इंस्टाग्राम : Shree Navgrah Ashram

कॉपीराइट © श्री नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान

प्रथम संस्करण : 10000
द्वितीय संस्करण : 10000
तृतीय संस्करण : 10000
चतुर्थ संस्करण : 10000
पंचम संस्करण : 10000

लेखक : वैद्य हंसराज चौधरी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : अब्राहिम मिरासी & विजय सिंह चौहान

आवरण : बद्री भडाणा भीलवाड़ा

प्रूफ रीडिंग : हरीश जी पंवार, विजयपाल जी वर्मा & महावीर गुर्जर

मुद्रक

मूल्य : ₹350/-

संपादकीय

विकास और तकनिकी के इस दौर मे अनेकों बीमारियां आज भयावह रूप में उभर कर आ रही हैं। कैंसर भी उनमे से एक है। सही मार्गदर्शन के अभाव व चिकित्सा के व्यवसायीकरण के चलते भारत जैसे विकासशिल देशों मे यह स्थिति और भी भयावह हो जाती है। समाज मे व्याप्त डर व भ्रातियों के कारण कैंसर को मृत्यु के पर्याय के रूप मे देखा जाता है। ऐसी स्थिति मे आवश्यकता है कि रोगी व परिजनों मे सही ईलाज व मार्गदर्शन मिले और कैंसर से मुक्त होने के साथ – साथ उसका भय भी समाप्त हो। यह पुस्तक इस उदेश्य की पूर्ति करती है कैंसर के विरूद्व लड़ाई में यह पुस्तक सच्चे सारथी का कार्य करेगी।

कैंसर एक विश्वव्यापी रोग है, जिस के निदान पर विश्व भर मे अनुसंधान चल रहें है। वैसे तो कैंसर की चिकित्सा में ऐलोपैथी उपचार को प्राथमिकता दी जा रही है, लेकिन ऐलोपैथी चिकित्सा की जटिलताओं और दुष्प्रभावों के कारण आज सम्पूर्ण विश्व की दृष्टी आयुर्वेद पर है। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति प्रकृति के सिद्धातों पर आधारित है तथा प्रकृति द्वारा प्रदान औषधियों व विधाओं से कैंसर जैसे रोग का निवारण करती है। आयुर्वेद के इन्ही सिद्धातों को आधार बनाकर **वैद्य हसंराज चौधरी** ने विश्व को कैंसर मुक्त बनाने का संकल्प लिया। इस संकल्प को पूरा करने के लिए इन्होने 2014 में श्री नवग्रह आश्रम की स्थापना की और विगत 10 वर्षों से आयुर्वेद से कैंसर, किडनी, लकवा, मिर्गी, शुगर, जैसे जटिल रोगों की सफल चिकित्सा कर रहे हैं। वैद्य हसंराज चौधरी द्वारा कैंसर के उपचार सहित कैंसर के रोकथाम के लिए सेमिनारो का आयोजन करना, कैंसर के प्रति लोगों को जागरूक करना और समय–समय पर पत्र – पत्रिकाओं व पुस्तको का प्रकाशन किया जाता रहा हैं।

भारत में कैंसर के विषय मे दो प्रकार की मानसिकताएं देखने को मिलती है, जो कैंसर रोगी का भविष्य तय करती है। पहली मानसिकता उन रोगीयों के साथ देखने को मिलती है जिनमे शिक्षा का अभाव है अथवा पैसे का अभाव है। ये अंध विश्वास जैसे दैविय प्रकोप, नीम–हकिम बाबा आदि के चक्कर मे पड़ते हैं। और समय पर रोग की पहचान व उपचार न होने के कारण रोगी मरणासन्न स्थिति मे पहुँच जाता हैं।

दूसरी समस्या है अधिक पैसा, अधिक ज्ञान, इससे परिजन अथवा रोगी समझता है कि कैंसर को पैसे से ठीक किया जा सकता है और अन्त में ऐसी स्थिती मे पहुँच जाता है। जिसमे ना रोगी रहता है न पैसा।

अब दोनो ही स्थिति में जो समानता वो है **जानकारी का अभाव।** कैंसर अंधविश्वास अथवा अधिक पैसा खर्च करके ठीक नही किया जा सकता है। कैंसर को ठीक किया जा सकता है **समय पर निदान, सही उपचार व सही मार्गदर्शन से।** यह पुस्तक पाठक को कैंसर के लक्षणों की पहचान, सही जांचे, सही उपचार व कैंसर से बचाव का मार्गदर्शन करती हैं। यह पुस्तक कई वर्षों के अनुसंधान व अनुभव का निचोड़ है जो सदैव रोगी के हित मे है और कैंसर के खिलाफ लड़ाई में मील का पत्थर साबित होगी।

हम आयुर्वेद चिकित्सक है और 3 वर्षों से श्री नवग्रह आश्रम मे सेंवारत है। श्री नवग्रह आश्रम से जुड़ने से पूर्व आश्रम नाम सुनकर हमारे भी मन मे संशय पैदा हुआ और हर एक व्यक्ति के मन में भी पैदा होता है कि कहीं कोई झाड़–फुंक का चक्कर नही है, लेकिन जब हम यहॉ पहुचां तो हमारे सभी संशय दूर हो गए। श्री नवग्रह आश्रम पूर्ण रूप से वैज्ञानिक तथ्यों व आयुर्वेद के सिद्धांतों पर कार्य करता है। आश्रम मे स्थित औषधी उद्यान 487 प्रकार के औषधिय पौधे और उनकी जानकारी ज्ञान का खजाना है। यहां स्थित आयुष विज्ञान मन्दिर आश्रम की शोभा बढ़ाता है। वर्षों की कड़ी मेहनत, निरन्तर रिसर्च कार्य और वर्षो के अनुभव को इस पुस्तक के द्वारा साझा किया गया है। यह पुस्तक पाठ्क को कैंसर रोग को समझने, सही उपचार व कैंसर से बचाव में मदद करेगी। इसी के साथ हम तीनों चिकित्सक इस पुस्तक और लेखक के सुखद भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ॰ इन्द्रसैन योगी (BAMS)
डॉ॰ धर्मेन्द्र चौधरी (BAMS)
डॉ॰ पंकज सैनी (BAMS)

अनुक्रमण

क्रं.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	01–02
2.	कैंसर एक–मिथक अनेक	03
3.	क्या कैंसर छूत की बीमारी हैं?	04–05
4.	एलोपैथी और आयुर्वेद के अपने–अपने सिद्धांत	05–06
5.	कैंसर के नाम से आर्थिक खेल	06–07
6.	आयुर्वेद में कैंसर	07–08
7.	वनस्पति शास्त्र और कैंसर	08–09
8.	असामान्य कोशिकाओं का असामान्य विभाजन	09–13
9.	एलोपैथी में कैंसर चिकित्सकों के प्रकार	13–15
10.	कैंसर को सरलता से यूं समझे	15–17
11.	कैंसर है या नही निर्णय कैसे ले	17–22
12.	तम्बाकू छोड़ने के उपाय	22–23
13.	कम उम्र में कैंसर	23–28
14.	कैंसर आंकड़ों की दृष्टि	28–32
15.	मन की बात	32–36
16.	कैंसर आयुर्वेद की दृष्टि में	36–40
17.	आयुर्वेद की 3 जरूरी बातें	40
18.	प्राकृतिक चिकित्सा से कैंसर चिकित्सा	41
19.	कैंसर चिकित्सा में योग व व्यायाम का महत्व	42
20.	एलोपैथी चिकित्सा और कैंसर	43–46
21.	कैंसर और इन्टीग्रेटेड चिकित्सा	47–52
22.	कैंसर में मिले नॉबल पुरस्कार	53–58
23.	कैंसर की जननी तम्बाकु	59–62
24.	कैंसर होने के जोखिम कारक	62–71
25.	कैंसर के है यार	71–85
26.	कैंसर के शुरूआती लक्षण	85–86
27.	कैंसर रोग में आहार (भोजन)	86–93
28.	कैंसर चिकित्सा श्री नवग्रह आश्रम मॉडल	93–99
29.	कैंसर ठीक होता है आस्था सें	99–100
30.	कैंसर उपचार में गौमूत्र	101–104
31.	कैंसर उपचार में शहद	104–106
32.	कैंसर उपचार में गेहूँ के ज्वारे का रस	106
33.	कैंसर की जाँचे व संकेत	107–113
34.	ब्रेन ट्यूमर	114–116

35. आंख का कैंसर 117—119
36. नाक का कैंसर 119—120
37. मुंह का कैंसर 120—125
38. थायराइड का कैंसर 126—130
39. गले का कैंसर 131—133
40. ट्रेकिया (श्वांस नली का) कैंसर 134—135
41. आहार नली का कैंसर 135—139
42. लंग (फेफड़ों) का कैंसर 139—144
43. स्तन कैंसर 144—147
44. पैनक्रियाटिक कैंसर 147—149
45. लीवर कैंसर 149—153
46. पेरिटोनियल (पेट की थैली) का कैंसर 153—155
47. आमाशय का कैंसर 155—156
48. किडनी कैंसर 156—159
49. यूरेनरी ब्लेडर (मूत्राशय) कैंसर 159—162
50. गर्भाशय का कैंसर 162—164
51. सर्वाइकल कैंसर 164—166
52. अण्डाशय (ओवरी) का कैंसर 166—168
53. कोलन कैंसर 168—172
54. प्रोस्टेट कैंसर 173—175
55. रक्त (ब्लड़) कैंसर 175—179
56. बोन (हड्डियो) का कैंसर 180—185
57. स्किन (त्वचा) कैंसर 185—188

प्रस्तावना

कैंसर का नाम सुनना किस को अच्छा लगता हैं, कैंसर शब्द सुनते ही जैसे कोई अनहोनी होने कि आशंका मन में आ जाती हैं। एक तरह से भय और गमगीन वातावरण बनने लगता हैं, इसकी सूचना देने वाला और सुनने वाला दोनो ही पक्ष अपने आपको असहज और असहाय महसूस करते हैं। आज से 40–45 वर्ष पूर्व तो अगर कोई इक्का–दुक्का इन्सान कैंसर के बारे में सुनता कि उस व्यक्ति को कैंसर हो गया हैं तो कुछ लोग तो कैंसर शब्द को हि नहीं समझ पाते और कुछ लोग कहते की जिसको कैंसर हुआ हैं उसने कोई बड़ा जगन्य अपराध किया होगा, उस पाप कि सजा ऊपर वाला उसे दे रहा हैं। यह धारणा बन जाती हैं कि कैंसर के रोगी को तो मरना ही पड़ेगा।

विज्ञान ने काफी अनुसंधान किया आयुर्वेद के वैद्यो और विद्वानों ने अपने ग्रथों को आधार बनाकर अर्बूद कर्करा को समझा, इसकी कमजोरियां समझी, इसके होने के कारणो को समझा और आधुनिक पेथोलॉजी (ऐलोपैथी), आयुर्वेद, नेचुरोपैथी, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी और भी कहीं पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों ने मिलकर सम्पूर्ण विश्व कि सरकारों और निजी दवा बनाने वाली कम्पनियाँ बड़े–बड़े चिकित्सालयों और एम्स (AIIMS) एवं आयुर्वेद विश्व विद्यालयों ने सामुहिक रूप से इन्टीग्रेटेड रिसर्च कार्य शुरू किया और इसके निदान, जाँचे और निवारण चिकित्सा के लिए सभी एक मंच पर आये और आज कि तारीख में मैं दावे के साथ कह सकता हुँ कि अगर रोगियों, सरकारों और रोगियों के परिजनों का पुरा सहयोग मिले तो कैंसर इतना भयभीत नहीं कर सकता हैं, क्योंकि अब कैंसर रोगी बहुत अच्छी संख्या में ठीक होने लगे हैं। रोगी की जिन्दगी की क्वालिटी सुधारी जाने लगी हैं और नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान जैसी संस्थाए आज कैंसर रोगियों के लिए सुखद परिणाम दे रही हैं, कम से कम खर्च में अधिकतम परिणाम प्रदान किए जा रहे हैं। मैने स्वयं ने अब तक 50 से अधीक इन्टीग्रेटेड कैंसर वर्कशॉप(कार्यशालाऐं) ज्वॉइन की हैं और मैरे अनुसंधान कार्य को सम्पूर्ण विश्वस्तर पर आशा की किरण के रूप में देखा जाने लगा हैं।

इस पुस्तक में कैंसर पर किए अनुसंधान कि जानकारी के साथ कैंसर क्या होता, क्यों होता, ठीक क्यों और कैसे होता। किस चिकित्सा पद्धति में इसके अच्छे परिणाम अधीकतम हैं? आयुर्वेद ने विगत वर्षो में कैंसर रोग कि चिकित्सा में अभूतपुर्व कार्य किया हैं, अब सम्पूर्ण विश्व कि सभी चिकित्सा पद्धतियां आयुर्वेद को आशा भरी निगाहों से देख रही हैं और इस की सम्पूर्ण अच्छाईयों को स्वीकार भी कर रही हैं।

इस पुस्तक को लिखते समय 3 बातों का विशेष ध्यान रखा गया हैं, 1. पूर्ण वैज्ञानिक जानकारी। 2. पूर्ण परिणामदायक विधियों को स्पष्टता के साथ समझाना। 3. सरल और सार संक्षेप में स्टीक जानकारी पाठकों तक पहुचां पाए ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास हैं।

इस पुस्तक के आकार लेने में मैरे आश्रम के डॉ॰ पंकज कुमार सैनी, डॉ॰ धर्मेन्द्र कुमार चौधरी, डॉ॰ इन्द्रसेन योगी एवं टाईपींग और डिजाईनिंग में अब्राहीम, विजय एवं बद्री भडाणा का विशेष सहयोग रहा इस पुस्तक की प्रूफ रिडींग के कार्य में भाई महावीर गुर्जर एवं बालप्रसाद का विशेष सहयोग रहा हैं। मैं सभी का हृदय से आभारी हूँ।

यह पुस्तक निर्धन एवं मध्यवर्गीय कैंसर मरीजों के सीमित संसाधनों में उपलब्ध व्यावहारिक इलाज को प्रस्तुत करती है।

कैंसर एक, मिथक एनेक

कैंसर चिकित्सा की सच्चाई, जैसा मैने समझा

इस संसार में कोई भी इन्सान बीमार नही होना चाहता हैं। कोई आदमी मरना नही चाहता हैं। परन्तु लोग बीमार भी होते हैं और मरते भी हैं। बीमारी शब्द सुनते ही आदमी के जेहन में ऐलोपेथी का बड़ा सा चिकित्सालय या सरकारी हॉस्पिटल उसमें डॉ॰ और नर्सो का लम्बा चौड़ा जमावड़ा दर्द से करहाते रोगी और एक लम्बी कतार में लगी हुई मरीजों की लोहे के खाटो पर लगी कतारे अधिकतर रोगी इस उम्मीद से डॉक्टर और नर्सों से बात करते हुए की एक दो दिन में छुट्टी हो जाएगी और आराम से घर जा पाऐगें कुछ दिनों में कमजोरी भी समाप्त हो जाएगी और आगे का जीवन बड़ी आसानी से हंसते–खेलते अपना रूटीन कार्य करते हुए निकल जाएगा। परन्तु एक बीमारी ऐसी हैं, जिसमें हॉस्पिटल तो होता है, डॉक्टर भी होते हैं नर्स भी होती हैं, परिजन भी होते हैं पर घर जाने छुट्टी होने, खुशी रहने, फिर से बीमार नही होने और हंसती–खेलती जिन्दगी नही होने का काफी डर रोगी के चेहरे पर तो संसय और अक्षत मृत्यु भय की मिश्रित रेखाऐं देखी जा सकती हैं। परिजनों के चेहरे पर कैंसर के घातक परिणामों के चलते भारी आर्थिक भार और ठीक होने वाले रोगियों की बहुत ही अल्प संख्या के चलते कलेजा बैठा जाता हैं। परिवार में एक वास्तविक मौत से भी घातक गमगीन वातावरण दिखाई देता हैं। इस प्रकार के वातावरण के लिए जिम्मेदार दो बड़े कारण हैं, पहला कारण कैंसर रोग से पैसा कमाने की प्रवृति और दुसरा कारण साधारण जन मानस में कैंसर रोग के बारे में अल्प जानकारियाँ। सामान्य जनमानस के मन में ये धारण घर कर चुकी हैं कि कैंसर कोई बहुत बड़ी घातक बीमारी हैं इसके ईलाज में 40–50 लाख रू. लगना तो सामान्य बात हैं और इतना पैसा एक सामान्य किसान, मजदूर, वेतन भोगी कर्मचारी या छोटे किराणा व्यापारी के बस का नही होता हैं और इसी कारण वह अपना सब कुछ बेचकर, कर्जा लेकर अपने बच्चों का भविष्य भी अन्धकार मय कर चुका होता हैं।

क्या कैंसर छूत की बीमारी हैं?

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा की बहुत अच्छे पढ़े लिखे प्रोफेसर, लेक्चरार, इन्जीनियर्स आदि लोग भी कैंसर को छूत की बीमारी मानते हैं। वो सामान्य रूप से कहते सुने जा सकते हैं की हमने किसी सेन्टर पर जाँच करवाई तो हमारी जाँचो में कैंसर के किटाणु पाये गये। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं की कैंसर रोगी से हमें डर भी लगता हैं, की कहीं यह बीमारी उसे छुने या उसके साथ खाना खाने से हमें भी हो सकती हैं। जबकि सच्चाई यह हैं की कैंसर का कोई भी जीवाणु, अण्डाणु, कीटाणु, विषाणु, फफुंद होती ही नही हैं, अगर अंग्रेजी भाषा में बात करें तो मतलब कैंसर का कोई भी बेक्टीरिया, वाइरस या फंगस होता ही नही हैं। पर इस रोग के बारे में इन पढ़े लिखे लोगों की यह हालत हैं, जब एक सामान्य किसान या किराणा व्यापारी या मजदुरी करने वाले की जानकारी तो और भी कमजोर होगी ही होगी। अब सवाल उठता हैं की यह जानकारी सामान्य जन मानस तक कैसे पहुँचे और उस जनमानस के मन में बनी सेंकड़ो वर्षो से एक अन्धविश्वास जैसी धारणा के चलते नही चाहते हुए भी रोगी और परिवारजन भय ग्रस्त होने के साथ आर्थिक दिवालियापन की कष्टदायक स्थिति में पहुँच जाते हैं। मेरा स्पष्ट मत हैं की, कैंसर ना तो जानलेवा रोग हैं, ना ही छूत का रोग हैं, बल्कि 27% रोगियों के तो कैंसर शरीर में पाये जाने के बावजूद भी रोगी सामान्य सात्विक और शाकाहारी पौष्टिक भोजन जैसे हरी सब्जियां, बकरी या देशी गाय का दूध और घी सेवन करते हुए अपने रोजमर्रा की जिन्दगी की प्रसन्नचित अवस्था में रहता है। तो उसकी कैंसर से मृत्यु होती ही नहीं है, क्योंकि वह जो नकारात्मक कोशिकाओं ने अपना छोटा–मोटा जमावड़ा जो रक्त या किसी अंग विशेष में जमाया था, वह शरीर की WBC के सकारात्मक प्रतिरोधक क्षमता के चलते रोग एक–दो वर्षो में बीना किसी कीमो, रेडिएशन, सर्जरी या आयुर्वेद व हॉम्योपेथी की औषधियाँ लिए स्वतः ही ठीक हो जाता हैं। इस स्वतः ठीक होने के पिछे शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान का एक सिद्धान्त भी कार्य करता है, वह सिद्धान्त है सप्त धातु सिधान्त जिसमें रस, रक्त, मांस, चर्बी, हड्डी, अस्थि मज्जा, रज या शुक्र

और औज की क्रमशः निर्माण प्रक्रिया के चलते कैंसर स्वतः समाप्त होता हैं। क्योंकि मात्र 10% कैंसर ही घातक श्रेणी में आते हैं और इस 90% रोगियों में 27% तो बीना किसी चिकित्सा के ठीक होता हैं।

ऐलोपैथी और आयुर्वेद के अपने-अपने मूल सिद्धान्त

अब बात करते हैं कैंसर के बारे में एलोपैथी और आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धतियों के पीछे मूल सिद्धान्त क्या हैं, पहले बात करते हैं ऐलोपेथी की इसमें आज की तारीख में कीमो थेरेपी, रेडिएशन, सर्जरी, इम्यूनो थेरेपी टारगेट थेरेपी जैसी विधियां हैं। सर्वप्रथम कीमो थेरेपी की बात करते हैं इस विधी में मुँह के रास्ते गोली या कैप्सूल के माध्यम से या आइ.वि.(IV) इन्टरो विनस के माध्यम से gns बोतल में केमिकल (औषधी) जैसे विनक्रिस्टीन या ब्लास्टिन को सेलाईन जैसे चटाया जाता हैं, इसमें औषधी रक्त में मिलकर कैंसर से प्रभावित और बीना कैंसर प्रभावित दोनो प्रकार की कोशिकाओं को मारने का कार्य करती हैं। सबसे बड़ा नुकसान होता हैं रोगी के शरीर की अधमरी कोशिकाओं का DNA चैंज हो जाता हैं, डबल नुकसान ये होता हैं कि एक तो कैंसर पुरा समाप्त नहीं हुआ और दूसरा हर 6 माह में पुनः कैंसर पैदा होने का खतरा आपने मोल ले लिया। दूसरा बदले हुए म्यूटेशन की वजह से कैंसर जो लोकल था यानी एक ही अंग में था वह बहुत तेजी से अन्य अंगो तक पहुंचकर मेटास्टेटिक यानी सामान्य भाषा में कहुं तो मल्टीपल हो जाता हैं।

अब बात करते हैं रेडिएशन की, यह कीमो की तुलना में कम घातक हैं। अगर रोगी की शारीरिक हालत ठीक हैं, तो 4–5 रेडिएशन साइकिल दी जाने में कोइ अधिक नुकसान नहीं होता हैं ऐसी मेरी मान्यता हैं परन्तु ऐलोपेथी के ओंको रेडियो लॉजिस्ट रोगी को 30–40 तक साइकिल दे देते और रोगी के कैंसर के अंगो में कही वर्षो तक या जीवनभर पुनः चेतना नही आती हैं और रोगी के अन्य अंगो में भी साइड इफेक्ट कई वर्षो तक बरकरार रहते हैं रेडिएशन के 9 माह बाद कभी भी उस स्थान पर या शरीर के अन्य अंगो में कैंसर पुनः जीवित हो जाता हैं और

लोकल कैंसर के साथ मेटास्टेटिक होकर रोगी को पुनः परेशान करने लगता हैं।

सर्जरी (शल्य क्रिया), कैंसर चिकित्सा में एक बहुत बड़ा चर्चा का विषय हैं। मैरी मान्यता हैं की अगर रोगी के ब्लड टेस्ट (CBC) और मार्कर टेस्ट अगर सामान्य रेन्ज में हैं तो सर्जरी करने में अधिक नुकसान नहीं हैं, पर शल्य क्रिया से कैंसर को पूर्णरूप समाप्त नही किया जा सकता हैं। सर्जरी में आयुर्वेद की द्रष्टिकोण पर अगर बात करें तो शरीर के जो गर्भ स्थान हैं उन स्थानों पर अगर कैंसर हैं तो उस स्थान पर शल्य क्रिया नही करें, क्योंकि कभी–कभी इसके बड़े नुकसान दायक परिणाम प्राप्त होते हैं। इसको एक उदाहरण से समझ सकते हैं की ब्रेन कैंसर में एक बार सर्जरी करने पर कैंसर एग्रेसीव हो जाता हैं या रोगी की मृत्यु तक हो जाती हैं।

अब अगर इम्युनो थेरेपी की बात करें तो यह मेरी दृष्टि से मेरी समझ से बिल्कुल बाहर हैं, क्योंकि एक–एक साइकिल के एक डेढ़ लाख रू. हैं और 20–25 साइकिल होने पर रोगी की हालत भी कमजोर हो जाती हैं।

कैंसर के नाम से आर्थिक खेल

रोगी की शारीरिक और आर्थिक हालत पतली होने के साथ इसमें दिए जाने वाले केमिकल से रोगी की पाचन शक्ति भूख लगने की आदत नींद और याददास्त भी कमजोर होने लगती हैं। प्राकृतिक तरीके से हरी सब्जियां और फलों के मिश्रित ज्यूस से शरीर में स्वस्थ कोशिकाओं का निर्माण अधिक वैज्ञानिक सरल और सस्ता हैं, यह प्रमाणित तथ्य हैं।

टारगेट थेरेपी में अमेरीका और कई देशों में बहुत बड़ी–बड़ी मल्टीनेशनल औषधी निर्माता कम्पनियाँ अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से विकासशिल देशों में अपने ऐजेन्टो के माध्यम से अपनी ही लेबॉरेट्रियां स्थापित करके अपनी ही प्रेन्चाइजी (ऐजेन्टशिप) वाले मल्टीनेशनल केटेगरी हॉस्पिटलों में यह टारगेट थेरेपी दी जाती हैं और ऐसा प्रचारीत भी किया जाता हैं, की एक विशेष प्रकार की कैंसर कोशिकाओं के लिए एक विशेष प्रकार के

केमिकल यानी औषधीय तत्व के माध्यम से उस कैंसर को समाप्त किया जाता हैं। टारगेट थेरेपी की एक डोज 2.5 लाख रू. की आती हैं और इसकी 30–40 साइकिल तक होना अनिवार्य बताते हैं, अतः एक करोड़ रू. के आसपास खर्च करके सफलता का अधिकतम प्रतिशत 5% से अधिक प्राप्त नहीं होता हैं, इसमे गरीब व्यक्ति तो सोच भी नहीं सकता हैं और मैरे कैंसर चिकित्सा के अनुभव के हिसाब से अब तक 300–400 रोगी यह थेरेपी करवा कर पुनः कैंसर रिकरेन्स होने की शिकायत के साथ आश्रम से चिकित्सा लेकर अपने आपको कैंसर मुक्त किया हैं।

आयुर्वेद और कैंसर

अब बात करते हैं आयुर्वेद की दृष्टि से कैंसर को समझने की आयुर्वेद के चरक सुश्रुत और पुराने सभी ग्रन्थों में इस रोग को अर्बूद करकरा कहा गया हैं।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति मात्र एक चिकित्सा पद्धति नहीं होकर एक जीवन पद्धति हैं, जिसमें कैंसर सहीत सभी प्रकार के शारीरिक व मानसिक रोगों की ना सिर्फ चिकित्सा की जाती हैं, बल्कि जीवन को आदर्श मूल्यों के साथ जीवन जीने की कला के साथ मोक्ष तक प्राप्त करने की चिकित्सा पद्धति हैं।

चूंकि कैंसर रोग जीवनशैली जैसे भोजन, दैनिक आचरण, विचारधारा, पर्यावरण, आदतों जैसे कई कारणो से कैंसर रोग होता हैं। कैंसर की चिकित्सा जितनी आवश्यक हैं, उससे कई गुना ज्यादा कैंसर फेलने से रोका जाना बहुत आवश्यक हैं। कई देशो और प्रान्तो में यह रोग बहुत विकराल रूप धारण करते हुए महावारी का रूप लेता जा रहा हैं। जैसा की सभी लोग जानते हैं की आयुर्वेद की चिकित्सा लेने से कोई भी साइड इफेक्ट नही होता हैं, क्योंकि आयुर्वेद में और विशेष तोर से वनस्पतियों के हरे ताजा स्वरूप में ज्यूस के रूप में चटनी के रूप में सूखी हुई वनोषधियों का चूर्ण बनाकर क्वाथ(काढ़े) के रूप में औषधियां दि जाती हैं और शहद के साथ कैंसर कीमो औषधी का सेवन कराया जाता हैं। परहेज रखने के साथ–साथ पूर्ण विश्वास के साथ रोगी मन वचन और कर्म से पूर्ण स्वस्थ होने की कामना के साथ

गौमूत्र, हल्दी, तुलसी, गिलोय, सदासुहागन(अर्बूद नाशनी), शीशम, कालमेघ, गेहूँ के ज्वारे, गुगल, कचनार, लहसुन, हरिद्वार तुलसी, पीपल, श्याम तुलसी, नीम, अश्वगन्धा, एलोवेरा, गुलर जैसी कई सर्वसुलभ औषधियों को PPM(पार्ट पर मिलीयन) सुत्र के अनुसार बहुत समय से रिसर्च कार्य का इतने सुखद परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। जिसमें लाखों परिवार का पैसा बच रहा हैं, रोगी की जान बच रही हैं और इन दोनो कारणो से लाखों परिवार बच रहे हैं।

आयुर्वेद के कई ग्रन्थो आयुष मंत्रालय के निर्देशन में देश की कई अच्छी कॉलेजो के साथ श्री नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान जैसी संस्थाऐं शास्त्रों के अनुरूप शास्त्रीय ज्ञान के साथ आधुनिक चिकित्सा पद्धति को आधार में रखते हुए अपना कैंसर चिकित्सा प्रोटोकॉल तैयार किया और सम्पूर्ण विश्व में कैंसर पर मिले नॉबल पुरूषकारों की वैज्ञानिक जानकारियों का पुर्ण पालन करवाते हुए आधुनिक रसायन शास्त्र, जीवविज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान एवं कैंसर चिकित्सा में जितने सफल डॉक्टर और वैज्ञानिक हुए हैं उनकी रिसर्च को आश्रम चिकित्सा प्रणाली में समावेश करके डॉ॰ राजीव भाई दीक्षित के कैंसर मुक्त विश्व के सपने को हम पुरी जिम्मेदारी और तत्परता से पुरा कर रहे हैं।

वनस्पति शास्त्र और कैंसर

अब मैं आपको एक सिद्धान्त जो की वनस्पति विज्ञान का मूल सिद्धान्त हैं। एक पेड़ के उदाहरण से समझाने का प्रयास करता हूँ, अगर आप एक पेड़ को मानव शरीर के सम्मान समझते हैं तो, यह उदाहरण आसानी से समझा जा सकता हैं।

पेड़ की एक शाखा पर कोई आगात हुआ या कोई बीमारी हुई यानी एक शाखा प्रभावित हुई, वो या तो सूख गई या उसका अन्य शाखाओं की तुलना में विस्तार रूक गया हैं। अब युं समझे की पेड़ की उस शाखा में जैसे कैंसर हो गया हैं, वैसे ही जैसे किसी मनुष्य के शरीर के किसी अंग में कैंसर हो गया हैं। अब तुलना करते हैं ऐलोपेथी के प्रोटोकॉल से ऐलोपेथी में पहली सम्भावना है कीमो करना अगर आप उस पेड़ की जड़ो में कोई

केमिकल डालते हैं और पानी पिलाते हैं तो, वह रसायन (केमिकल) पेड़ के सम्पूर्ण तने, शाखाऐं, टहनियां सहीत हर पत्ते–पत्ते तक वह केमिकल (औषधी) जाता है, जो प्रभावित भाग के साथ–साथ सम्पूर्ण वृक्ष के हिस्सों को नुकसान पहूंचाता हैं, परन्तु अगर उस पेड़ की जड़ो में अच्छा देशी खाद, कम्पोस्ट, मिठा पानी और पौषक तत्वों से पूर्ण अच्छा उत्तम किस्म का आहार (खाद) दिया जाता हैं, तो वे सम्पूर्ण पेड़ में अच्छी फुटान होगी, अच्छे नये पत्ते आएगें और प्रभावित हिस्सा अपने आप ठीक होते हुए सम्पूर्ण पेड़ जैसा हो जाएगा, पेड़ की उम्र और उत्पादन दोनों बढ जाएगें यानी ऐलोपेथी और आयुर्वेद की तुलनात्मक स्थिति ऐसा ही रेडिएशन को और सर्जरी को भी समझा जा सकता हैं। अगर सिद्धे शब्दों में समझे तो अच्छा आहार ताकतवर आहार सात्विक आहार(जिसमें औषधी, भोजन और विचार धारा) लेने पर उत्तम रस का निर्माण होगा उत्तम एवं शक्तिशाली आहार से उत्तम रक्त, उत्तम रक्त से उत्तम मांस (किडनी, आंते, मस्तिष्क सहीत सम्पूर्ण मांस के अंग), उत्तम मांस से उत्तम चर्बी, उत्तम चर्बी से उत्तम हड्डी, उत्तम हड्डी से उत्तम बोनमेरो (अस्थि मज्जा), उत्तम अस्थि मज्जा से उत्तम शुक्र एवं रज (पुरूषों में शुक्र व महिलाओं में रज) शुक्र और रज से ओज का निर्माण होता हैं और औज इस पृथ्वी पर मनुष्यों के लिए श्रेष्टतम् औषधी हैं।

अब आप समझ गये होगें की आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति सप्तधातु सिधान्त के अन्तरगत कार्य करती हैं, क्योंकि सप्त धातु सिद्धान्त ही मूल सिद्धान्त हैं। इसी सिद्धान्त को भी वात, पित्त और कफ़ के दोष सिद्धान्त भी कार्य करता हैं, क्योंकि वात जनीत, पित जनीत, कफ जनीत दोषो की चिकित्सा में भी आहार और औषधियां रोगी को स्वास्थ्य प्रदान करती हैं।

असामान्य कोशिकाओं का असामान्य विभाजन

मनुष्य का शरीर बना होता हैं कोशिकाओं से और शरीर में कई प्रकार की कोशिकाऐं होती है। एक साधारण मानव शरीर में 60 से 90 ट्रिलीयन कोशिकाऐं होती हैं, अगर इनके प्रकार की बात करें

तो यह करीब 200 प्रकार की होती है। जितने प्रकार की कोशिकाऐं होती हैं, उन सब कोशिकाओं का बिल्कुल अलग–अलग होता हैं, अगर उदाहरण देकर समझाऊ तो हमारे शरीर में लाल रक्त कोशिकांए (RBC) स्वेत रक्त कोशिका (WBC) शुक्राणु कोशिकाऐं, अंडाणु कोशिकाऐं, तंत्रिका कोशिकाऐं, मांसपेशी कोशिकाऐं, अस्थि कोशिकाऐं यानी इस प्रकार से 200 कोशिकाऐं होती हैं।

अब आप इसको युं समझे की प्रत्येक प्रकार की कोशिकाओं का अपना अलग ब्लू प्रिंट होता हैं यानी उसका अपना अलग सॉफ्टवेयर होता हैं, इसी को हम DNA कहते हैं और ये सब प्रकार की कोशिकाऐं प्रोटीन से बनी होती हैं। प्रत्येक प्रकार की कोशिकाऐं अलग–अलग प्रकार को प्रोटीन से बनी होती हैं। बिना प्रोटीन के ना तो हमारी कोशिकाऐं बन सकती हैं, ना ही जीवित रह सकती हैं ओर ना ही अपना अग्रीम विकास (विभाजन) कर सकती हैं। कोशिकाओं के संवर्धन और विभाजन और पोषण के लिए फेट(वसा) का भी एक बहुत बड़ा महत्व हैं। कोशिकाओं में शेष मात्रा जल की होती हैं। प्रोटीन को जिव विज्ञान की भाषा में एमिनोएसीड कहा जाता हैं। इस प्रोटीन का कोशिका विभाजन में बहुत महत्वपूर्ण रोल हैं, इन कोशिकाओं की संरचना ऐसी होती है की इन एमीनो एसीडो की आपस में जोड़े रखने के लिए पेट टाईट लिगामेन्टस कहा जाता हैं। जैसे मकान की इंटो को सिमेन्ट से आपस में जोड़ते हैं, वैसे ही ये पेप्टाईड लिगामेन्ट अपना रोल प्ले करते हैं। अब हम कोशिका विभाजन के सिद्धान्त की बात करें तो पहला सूत्र हैं, किसी भी कोशिका का निर्माण कोशिका से ही हो सकता हैं, बाकि बिना कोशिका के नई कोशिका बन ही नही सकती। सम्पूर्ण प्रकार की जैविक क्रियाएं कोशिका के अन्दर ही होती हैं। कोशिका का दुसरा वैज्ञानिक सिधान्त हैं कि बहुकोशी जीवों की कोशिकाओं में ये 8 प्रकार के उप अंग होते हैं, जैसे 1. केन्द्रक(केन्द्रिका), 2. जीव द्रव्य, 3. गोल्गी सम्मिश्र(गेल्गी यंत्र), 4. कणामसूत्र, 5. अंतर द्रव्य डालिका, 6. गुण सूत्र (पितृ सूत्र) एवं जीन, 7. राईबोसोम तथा सेन्ट्रो सोम 8. वा लवक।

कोशिका विभाजन

अब हम समझ चुके हैं कि प्रत्येक प्रकार की कोशिकाऐं अपने गुण सूत्र (पितृ सूत्र) एवं जिनके साथ–साथ अपनी विशेष प्रकार की प्रोटीन संरचना के अनुसार इन नियंत्रण पद्धति को DNA कहते हैं। इस DNA को हम कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर की संज्ञा भी दे सकते हैं, परन्तु कभी–कभी जैसे कम्प्यूटर या मोबाईल कमान्ड मानने से आना–कानी करने लग जाता हैं, या कहे की वह सॉफ्टवेयर में मिस्टेक होने के कारण हो रहा हैं, ऐसा ही हमारे शरीर की कोशिकाओं में सर्वप्रथम जब मिस्टेक आती हैं, तो हमें कुछ एबनोर मल्टी (असामान्य क्रियाक्लाप) लगती हैं। और वह अंग विशेष अपने सामान्य आकार से एकदम बहुत तेजी से बढ़ने लगता हैं, और अपने सामान्य स्वरूप (आकृति) में नहीं बढ़कर आडा, टेडा–मेडा और मोटे या पतले स्वरूप में बढ़ने लगता हैं। सामान्य अवस्था से अलग दिखने लगता हैं, इसमें सोजिस, पकाव, कड़कपन, पिलपिलापन्न, रंग परिवर्तन, दर्द, खुजली, रूखापन, सुखापन जैसे कई परिवर्तन अचानक दिखाई देने लगते हैं। यह परिवर्तन बहुत तेज गति से बढ़ने लगते हैं। हमारे शरीर के सभी अंग आपस में जुड़े हुऐ हैं, अतः यह असामान्य परिवर्तन शरीर के अन्य अंगो यानी अन्य प्रकार की कोशिकाओं में भी होने लगता हैं इसमें अंग विशेष के साथ किसी अन्य अंग का जुड़ा होना तो एक सामान्य कारण है ही परन्तु रक्त कोशिकाऐं इन कैंसर कोशिकाओं के फैलाव के लिए बहुत ही सुलभ और आसान परिवहन का कार्य करता हैं, इस परिवहन कार्य के चलते रक्त कि अपनी सामान्य कोशिकाऐं भी इस असामान्य परिवर्तन की चपेट में आ जाता हैं। इस लिए किसी अंग विशेष के कैंसर के साथ–साथ ब्लड कैंसर भी हो जाता हैं, इसलिए मेरी यह धारण बिल्कुल स्पष्ट हैं कि कैंसर शरीर के किसी भी अंग में प्रकट होता हो या डॉक्टर उसके ठीक होने की घोषणा करता हो परन्तु वह कैंसर उस रोगी के रक्त में मौजूद होता ही होता हैं। यह मौजूदगी यानी WBC, RBC प्लेटरेट प्लाज्मा जैसी सभी कोशिकाओं का नव निर्माण अगर सप्त धातु सिधान्त के अनुरूप होना शुरू होता हैं। एक लम्बे समय यानी 6 माह से अधिक और एक दो वर्ष तक ऐसा होता हैं, तो शरीर से पुरानी सभी DNA चेन्ज की हुई कोशिकाऐं मर जाती हैं।

व्यक्ति रस, रक्त, मांस......... के सिद्धान्त कि बदोलत कैंसर मुक्त हो जाता हैं।

यह अनियंत्रित विभाजन होना ही कैंसर हैं। अग्रेंजी भाषा में इसे मेलीग्लेंसी कहते हैं। संस्कृत में अर्बूद करकरा प्रकृति कहा जाता हैं और हिन्दी में इसको कैंसर लक्षण या कैंसर उत्पत्ति कारक लक्षण कह सकते हैं। DNA को अगर सामान्य प्रकार से समझें तो इसे प्रकृति नियम श्रृंखला भी कह सकते हैं। DNA जब परिवर्तित होता हैं तब कोशिकाऐं अपने बाहरी सरफेस पोरसन पर टेलोमेरिक सेक्सन जोड़ लेती हैं और इस परिवर्तन की वजह से कैंसर कोशिकाओं का विभाजन क्रम सामान्य कोशिकाओं के विभाजन क्रम से बिल्कुल अलग हो जाता हैं।

अब पहले समझते हैं, सामान्य कोशिकाओं के विभाजन क्रम को इनका विभाजन क्रम रहता हैं, 1 से 2 और यह क्रम पुरानी कोशिकाओं के मृत्यु की गति यानी सामान्य मृत्युदर या कोशिका उम्र समाप्ति पर सामान्य मृत्यु की तुलना में ही होती हैं इसको युं समझ सकते हैं कि एक शुक्र कोशिका और एक अण्डाणु कोशिका मिलकर भ्रुण का निर्माण करते हैं। जिसे निषेचन क्रिया कहते है और आगे चलकर प्रत्येक कोशिका समूह अपने को अपनी मूल आदत के अनुसार यानी DNA नेचर के अनुसार 1 से 2 और इस के बाद पुरानी कोशिकाऐं स्वतः मरती जाती है और नई पैदा होती रहती है। मनुष्य की सामान्य मृत्यु तक यह क्रम बना रहता है, नई पैदा होने की संख्या और मरने वाली कोशिकाओं की संख्या बराबर ही रहती हैं। यानी 1 से 2 और पुनः एक से 2 और 2 वाली का मरने का क्रम बराबर बना रहता हैं। यह क्रम सामान्य तथा सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार की कोशिकाओं में रहता हैं। चूंकि क्रम और DNA सामान्य रहता हैं। इसलिए सब सामान्य गति से चलता हैं और व्यक्ति रोगमुक्त रहता हैं।

अब समझते हैं कैंसर कोशिकाओं के विभाजन को इसमें उपर लिखा हुआ हैं जब DNA में परिवर्तन आ जाता हैं तो इन में विभाजन का क्रम बिल्कुल अजीब गति और संख्या में होने लगता हैं, यह विस्तार अनियंत्रित होने के साथ–साथ असामान्य आकार प्रकार और व्यवहार में भी परिवर्तित हो जाता हैं। शरीर में 90%

कोशिकाऐं सकारात्मक होती हैं 10% कोशिकाऐं नकारात्मक होती हैं, इन नकारात्मक कोशिकाओं में अचानक एक व्यवहार आधारित परिवर्तन आता हैं। 2 नकारात्मक कोशिकाऐ आपस में मिल जाती हैं और तिसरी कोशिका जो की सकारात्मक कोशिका होती हैं उसको अपने समूह में खिंच लेती हैं यहां आप यह भी समझ ले की DNA परिवर्तन मात्र नकारात्मक कोशिकाओं में ही नही होता यह सकारात्मक कोशिकाओं में भी होता हैं, इसी के चलते यह सकारात्मक कोशिकाऐं अपना विरोध नही कर सकती हैं बल्कि यह उन दो नकारात्मक कोशिका से जाकर मिल जाती है और तीन कोशिकाओं का समूह अपने आपका विभाजन प्रारम्भ करता हैं, और 3 से 9, 9 से 81, 81 से 6561 और 6561 से 43046721 की संख्या में विभाजन करना प्रारम्भ कर देती हैं, यानी DNA परिवर्तन से एक तो यह रॉकेट की गति से बढ़ती हैं और कैंसर कोशिकाओं में PD-1 और CTLA–4 प्राटीनों के चलते यह कैंसर कोशिकाऐं मरना भूल जाती हैं और बदमाश लोगों की तरह व्यवहार करते हुए अपने से अलग श्रेणी की कोशिकाओं को भी अपने समूह में मिलाना प्रारम्भ करके उसे निरन्तर करने लगती हैं, इसी कारण कुछ कैंसर रोगी मात्र 2–3 माह में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि, कैंसर ना हो इसके लिए कोशिका DNAके सिद्धान्त के अनुसार शाकाहारी भोजन, हरी सब्जियों का सेवन, प्राणायाम, ध्यान, प्रसन्नचित और सकारात्मक सोच के साथ पूर्ण शूद्ध ऑक्सीजन को ग्रहण करने के साथ–साथ देशी गाय के उत्पादो का सेवन करें। ताकि आपको कैंसर जैसे रोग का शिकार ही नहीं होना पड़े।

ऐलोपेथी में कैंसर चिकित्सकों के प्रकार

कैंसर चिकित्सा का कार्य ऐलोपेथी, आयुर्वेद, होम्योपेथी, सिद्धा नेचुरोपैथी जैसी कई शाखाओं के अलग–अलग विभाग के अलग–अलग विशेषज्ञ होते हैं। सर्व प्रथम में आपको बताता हूं की ऐलोपेथी में किस–किस विभाग में कौन–कौन विशेषज्ञ होते हैं–

मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट – यह डॉक्टर कीमो या अन्य औषधी की मात्रा व विधी निर्धारित करते हैं जैसे कितने MG पावर होगा

कौनसा सॉल्ट होगा और वह बोतल के माध्यम से दिया जाएगा या ओरल कीमों यानी गोली के रूप में दिया जाएगा। कितने दिनों के अन्तराल पर दिया जाएगा और कितनी बार दिया जाएगा यह सब मेडिकल ऑन्कोलॉजिस्ट तय करते हैं ये MBBS के बाद PG किए होते है।

<u>रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट</u> – कैंसर रोगी के शरीर के आन्तरिक अंगो जैसे मस्तिष्क, लिवर, फेफड़े, बड़ी आंत में कैंसर कितना फेला हुआ हैं, उन अंगो में कैंसर के कितने छोटे और बड़े निसान दिखाई दे रहे हैं या कितने ट्यूमर हैं और किस आकार की हैं इनका विकीरण या रेडीयो धर्मी किरणों से उन गांठो को जलाने का कार्य करने वाले में रेडीयोलॉजी विभाग में PG करते हैं, और कभी–कभी 6 माह का विशेषज्ञता कोर्स भी करते हैं।

<u>सर्जिकल ऑन्कोलोजिस्ट</u> – किसी भी रोगी के शरीर के आन्तरिक भाग या बाहरी भाग से कैंसर की ट्यूमर (गांठ) या प्रभावित हिस्से को शल्य क्रिया करके अलग करने की क्रिया को सम्पादित करने वाले विशेषज्ञ डॉ को सर्जरी आंन्कोजिस्ट कहते हैं। इनका शिक्षा का स्तर भी PG होता हैं।

<u>हार्मोन ऑन्कोलोजिस्ट</u> – अमेरीका और जापान जैसे विकसित देशो में आज–कल कैंसर की चिकित्सा हार्मोन्स के इंजेक्शन, गोली, केप्सूल देकर भी किया जाने लगा हैं। हालाकी यह कार्य महिला कैंसर रोगियों में अधिक किया जाता हैं और वो भी केवल महिलाओं के जनन क्रिया अंगो में आई विक्रती के तुरन्त बाद या फिर सर्जरी के बाद किया जाता हैं। इस कार्य को करने वाले विशेषज्ञ हार्मोन्स ऑन्कोलोजिस्ट कहलाते हैं। यह PG स्तर तक शिक्षा ग्रहण किये होते हैं।

<u>टारगेट थेरेपी ऑन्कोलोजिस्ट</u> – कैंसर रोगी को एक विशेष प्रकार के कैंसर के लिए एक विशेष प्रकार की औषधी दी जाती हैं, इस कार्य के एक्सपर्ट डॉक्टर अभी तक विश्व में 10–15 ही हैं, और यह थेरेपी इतनी मंहगी हैं की भारत जैसे देश में कुछ ही लोग इसको करवाने की सोच सकते हैं। क्योंकि इसकी कीमत करोड़ो रूपये में आती हैं। इसके अधिकांश विशेषज्ञ विदेशो से PG किए होते हैं।

<u>ईम्यूनो थेरेपी ऑन्कोलोजिस्ट</u> – ऐलोपेथी चिकित्सा में कैंसर को ठीक करने की यह विधी जानने वाले और इसको रोगी पर अप्लाई करने वाले एक्सपर्ट डॉक्टर इम्युनोथेरेपी ऑन्कोलोजिस्ट होते हैं। भारत देश में बहुत कम डॉक्टर इसके एक्सपर्ट हैं, क्योंकि यह अत्यन्त महंगी यानी करोड़ो रूपये में इसका खर्च आता हैं। इसके डॉक्टर PG स्तर तक शिक्षा ग्रहण किए होते हैं।

<u>ब्रेकि थेरेपिस्ट</u> – यह रेडीयो और सर्जरी दोनों का मिश्रित रूप होता हैं यानी रोगी के अंग विशेष में केथेटर के माध्यम से एक विशेष प्रकार के रेडीयो धर्मा प्रदार्थ का उपयोग किया जाता हैं। रोगी की ट्यूमर के पास प्रत्यारोपीत किया जाता हैं इस कार्य को करने वाले डॉक्टर PG स्तर के होते हैं।

<u>रोबोटीक सर्जरी ऑन्कोलोजिस्ट</u> – रोबोट व्दारा कैंसर रोगी खासतोर से मस्तिष्क जैसे अंगो की सर्जरी करने वाले विशेषज्ञ को ऑन्को रॉबोटीक सर्जन कहा जाता हैं। इनका शेक्षिणीक स्तर भी PG होने के साथ एक वर्ष का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए होते हैं।

<u>गायनी ऑन्कालाजिस्ट</u> – महिलाओं के शरीर में विशेष तोर से गायनी सम्बन्धित यानी महिला रोगों से सम्बन्धित अंगो में कैंसर की चिकित्सा करने वाले विशेषज्ञ डॉक्टर को गायनी ऑन्कोलोजिस्ट कहा जाता हैं। इनको PG के साथ एक वर्ष का विशेष कोर्स करना होता हैं।

कैंसर को सरलता से युं समझे

क्या है कैंसर ?

मानव शरीर कई अनगिनत कोशिकाओं यानी सैल्स से बना हुआ है और इन कोशिकाओं में निरंतर ही विभाजन होता रहता है। यह एक सामान्य प्रक्रिया है और इस पर शरीर का पूरा नियंत्रण होता है। लेकिन कभी–कभी जब शरीर के किसी विशेष अंग की कोशिकाओं पर शरीर का नियंत्रण बिगड़ जाता है और कोशिकाएं बेहिसाब तरीके से बढ़ने लगती हैं, उसे कैंसर कहां जाता हैं।

कैंसर की शुरूआत कैंसे होती है ?

मानव शरीर में जब कोशिकाओं के जीन में परिवर्तन होने लगता, तब कैंसर की शुरूआत होती हैं। ऐसा नहीं है कि किसी विशेष कारण से ही जीन में बदलाव होते हैं, यह स्वंय भी बदल सकते हैं या फिर दूसरे कारणों की वजह से ऐसा हो सकता है– गुटका–तंबाकू जैसी नशीली चीजें खाने से, अल्ट्रावॉलेट रे या फिर रेडिएशन आदि इसके लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

ज्यादातर यह देखा गया है कि कैंसर शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता यानि इम्यून सिस्टम की कोशिकाओं को समाप्त कर देता है, परंतु कभी–कभी कैंसर की कोशिकाएं को इम्यून सिस्टम झेल नहीं पाता और व्यक्ति को कैंसर जैसी लाईलाज बीमारी हो जाती हैं।

जैसे–जैसे शरीर में कैंसर वाली कोशिकाएं बढ़ती रहती हैं, वैसे–वैसे ट्यूमर यानि एक प्रकार की गांठ उभरती रहती हैं। यदि इसका उपचार सही समय पर न किया जाए तो यह पूरे शरीर में फैल जाता हैं।

कैंसर के 100 प्रकार

आमतौर पर तंबाकू , शराब, गुटखा, पान मसाला, प्रदूषण और प्लास्टिक को कैंसर का कारण माना जाता है। विशेषज्ञों ने 100 प्रकार के कैंसर का पता लगाया है, उनमें प्रमुख रूप से ब्लड कैंसर, गले का कैंसर, मुंह का कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर, सर्वाइकल कैंसर, लंग कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, ब्लैडर कैंसर, लिवर कैंसर, बोन कैंसर, पेट का कैंसर होते हैं।

कैंसर जेनेटिक बीमारी भी होती है, हमारी कोशिकाओं को काबू में करने वाले जीन में बदलाव के कारण कैंसर होता हैं। ये आनुवंशिकि रूप में भी हो सकता हैं। कैंसर का पता प्रथम अवस्था में चलने पर लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। अगर वक्त रहते ईलाज शुरू का दिया जाए तो कैंसर को मात दिया जा सकता हैं।

इसे हराना मुश्किल जरूर है, लेकिन नामुमकिन नहीं

कैंसर के मामले में मौत की ज्यादा वजह शुरूआत में जहां लक्षणों को नजरअंदाज करना है, वहीं दूसरी सबसे बड़ी वजह है इसे लाईलाज मान कर हिम्मत हार देना। यह जरूरी नहीं कि सिर्फ मरीज ही सब कुछ खत्म वाली सोच में पहुंच जाए, कई बार उसके नजदीकी रिश्तेदार की भी ऐसी ही सोच हो जाती है। हकीकत यह है कि जब किसी लड़ाई में हिम्मत पहले ही हार जाएं तो जंग शुरू होने से पहले ही दुश्मन के पक्ष में हो चला जाता है। अगर कैंसर को हराना है तो इसकी हकीकत को समझते हुए इसे भी आम बीमारी मानना होगा। इसे हराना मुश्किल तो जरूर है लेकिन नामुमकिन बिलकुल नहीं।

कैंसर लाईलाज तब होता है, जब यह आखिरी स्टेज में पहुंचता है। अगर किसी सख्स को जल्द ही इसका पता चल जाए तो जीत सुनिश्चित हैं।

अगर किसी के घर में कोई कैंसर मरीज है तो देख–रेख करने वालों को भी मानसिक तनाव से लड़ना पड़ता है। ऐसे में सुबह में वॉकिंग, सूर्य नमस्कार और योग उनके काफी काम आता हैं।

यह ठीक है कि पौष्टिक तत्व (सप्लिमेंट्स, न्यूट्रिशनल डाइड आदि) की मदद सेक कैंसर मरीज को फायदा होता है, लेकिन ध्यान रखने वाली बात यह भी है कि ये किसी भी सूरत में कैंसर का संपूर्ण ईलाज नहीं हो सकते।

कैंसर हैं या नहीं , निर्णय कैसे लें।

कैंसर का ईलाज जितनी जल्दी शुरू करते हैं, उतना ही नतीजा बेहतर होता है। हकीकत यह है कि कई डॉक्टर भी इस तथ्य को जल्दी स्वीकार करने से डरते हैं कि मरीज को कैंसर होने की आशंका के बारे में कैसे बताएं इसलिए वे तमाम दवा देकर देख लेते हैं, लेकिन कैंसर के टेस्ट के लिए नहीं कहते। जबकि ऐसे तमाम उदाहरण हैं जब –

लगातार खांसी, मुंह के छाले, दांतों से लगातार खून आना, ये भी ओरल कैंसर के लक्षण हो सकते हैं और नहीं भी। पेशाब में खून

आना प्रोस्टेट कैंसर का लक्षण हो सकता है। कई बार किडनी में स्टोन की वजह से भी पेशाब में खून आता हैं। शरीर में गांठ जो तेजी से बढ़ रही हो। यहां इस बात का ध्यान रखें कि अमूमन जिन गांठों में दर्द हो, शुरूआत में उनमें कैंसर सेल्स के होने की आशंका कम रहती है। अगर दर्द न हो तो आशंका बढ़ जाती हैं। जैसे अगर किसी महिला के ब्रेस्ट में गांठ है और दर्द भी है तो ऐसा अमूमन हॉर्मोन की परेशानी से ऐसा होता हैं। तेजी से वजन कम होना कैंसर का सबसे विशेष लक्षण है। अगर किसी का वजन 3 महीने में 10 किलो कम हो जाए तो उसे जरूर जांच करानी चाहिए। वैसे ध्यान देने वाली बात यह है कि शुगर और टीवी के मामले में भी कई बार अचानक वजन कम होता हैं। स्प्लीन (पेट में मौजूद इस अंग के कई सारे काम हैं, लेकिन सबसे अहम काम है शरीर की सुरक्षा में भूमिका निभाना) और लिंफनोड (यह शरीर के इम्यून सिस्टम का अहम भाग है। शरीर में मौजूद बैक्टीरिया और वाइरस से लड़ने में मदद करता है)। जाड़े में भी रात में पसीना आता है सचेत हो जांए। हालांकि ऐसा दिल के मरीजों के साथ भी होता हैं। अगर किसी महिला को अपने पार्टनर के साथ संबंध बनाते समय बार–बार ब्लीडिंग हो तो डॉ. से जरूर मिल लें। वैसे, जिस महिला ने किसी के साथ फिजिकल रिलेशन नहीं बनाए हैं, उसमें सर्वाइकल कैंसर का खतरा न के बराबर होता हैं। अगर कोई शारीरिक परेशानी हो रही है और वह बार–बार हो तो यह कतई जरूरी नहीं वह कैंसर हैं। वह कोई दूसरी छोटी–मोटी बीमारी भी हो सकती है। फिर भी सतर्कता जरूरी है।

ऐसे करें कैंसर की वक्त रहते पहचान

कैंसर खतरानक इसलिए है क्योंकि इसे पहचानने की चुनौती ही सबसे बड़ी है। शुरू में इसके लक्षण सामान्य बीमारियों वाले ही होते हैं। मलसन थकावट, बुखार, एसीडिटी,खांसी, ब्लीडिंग आदि। ये लक्षण किसी दूसरी आम–सी बीमारी के भी हो सकते हैं। मलसन, अगर किसी को बीपी या शुगर की समस्या है तो शरीर में दर्द और थकावट रह सकती है। महिलाओं को पीरियड्स में ब्लीडिंग स्वाभाविक है। एसिडिटी भी किसी को हो सकती है तो

क्या ऐसे सभी मामलों में कैंसर की आशंका हो सकती हैं। क्या सभी को कैंसर की जांच करानी चाहिए? ऐसे सभी सवालों का एक ही जवाब है, असामान्य होना,।
लक्षण सामान्य हो लेकिन असामान्य तरीके से उभर रहा हो।

बुखार, एसिडिटी आदि सामान्य समस्याएं है, लेकिन दवा करने के बाद भी अगर बार–बार हो तो शक जरूर करना चाहिए। हांलाकि किसी सामान्य परेशानी का बार–बार होना भी यह साबित नहीं करता कि कैंसर ही होगा। लेकिन यह शक करने की वजह तो जरूर देता है। एसिडिटी के मामले में अगर कोई शख्स दवा नहीं ले रहा है और फिर बार–बार एसिडिटी हो जाता है। वह ठीक भी हो जाता है तो धबराने की बहुत जरूरत नहीं है। लेकिन उसे डॉक्टर से संपर्क जरूर रहना चाहिए। वहीं अगर दवा लेते रहने और डोज बदलने के बावजूद एसिडिटी बार–बार होती रहें तो जरूर सचेत होना चाहिए।

महिलाओं में महावारी के दौरान ब्लीडिंग कॉमन है, लेकिन जब यह 4–5 दिन के बजाए 8 से 10 दिन हो, एक बार होने के कुछ दिनों के बाद फिर से हो जाए तो शक करना चाहिए।

जब किसी मरीज की जुबान बात करने में बार–बार लड़खड़ाए और उसे तंबाकू, सिगरेट की आदत हो तो ओरल कैंसर की आशंका है।

बार–बार एक्स–रे, सीटी स्कैन, अल्ट्रासाउंड आदि की रेडियोऐक्टिव किरणें हमारे शरीर में पहुंचकर सेल्स की केमिकल गतिविधियां बढ़ा देती हैं जिससे स्किन कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। जब जरूरी हो, तभी एक्स–रे या सीटी स्कैन आदि कराएं। इसलिए साल में 2 से 3 एक्स–रे काफी है।

प्लास्टिक इस बात पर काफी रिसर्च हो चुकी है कि सभी तरह का प्लास्टिक एक वक्त के बाद गर्म करने पर केमिकल छोड़ने लगती हैं। बार–बार गर्म करने से प्लास्टिक कंटेनर्स के केमिकल टूटने शुरू हो जाते हैं और फिर ये खाने–पीने की चीजों में मिल जाते हैं। इससें कैंसर की आशंका हो सकती हैं। हालांकि पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस पर अभी रिसर्च चल रही हैं।

प्रदूषण शहरों में बढ़ता प्रदूषण भी शरीर को वही नुकसान पंहुचा रहा है, जैसे बीड़ी–सिगरेट का धुआं पहुंचाता है। हवा में तय से ज्यादा मात्रा में मौजूद नाइट्रोजन ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, ओजोन, लेड आदि हमारे शरीर में कैंसर करने वाले केमिकल पैदा कर रहें हैं।

हर ट्यूमर कैंसर नहीं

बिनाइन ट्यूमर नॉन–कैंसर होते हैं, जबकि मेलिग्नेंट ट्यूमर को कैंसरस माना जाता है। बिनाइन ट्यूमर से जीवन को कोई खतरा नहीं होता और यह फैलता भी नहीं है। यह जिस अंग में होता है, वहीं रहता है और वहीं से इसे सर्जरी के जरिए हटा दिया जाता है। दूसरी तरफ मेलिग्नेंट ट्यूमर बदमाश होते हैं। ये अपने आसपास के अंगों पर भी हमला कर देते हैं और उन्हें भी अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं। इनकी ताकत इतनी ज्यादा होती है कि ये ट्यूमर से अलग हो जाते हैं और ब्लड में घुस जाते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि कैंसर शरीर के दूसरे अंगों में भी फैलना शुरू हो जाता है। फैलने की इस प्रक्रिया को मेटास्टैटिस कहा जाता हैं।

कैंसर रिकरेन्स (पुनः लोटना कैंसर का) क्यों होता हैं

एक बार तो कैंसर का नाम ही आदमी को डरा देता है, और अगर कैंसर हो जाए तो डर लगना और घबराने की हालत पैदा होती ही होती हैं, अगर एक बार डॉ. कह दें की अब आपका कैंसर ठीक हो गया है, और 3 या 4 माह बाद जब आप रूटीन चेकअप के जाते है और डॉ. कहते है कि कैंसर तो पुनः लोट आया है, यानी रिकरेन्स हो गया है तो आप सुनकर सन्न रह जाते है और आप के मन में जिन्दा रहने के प्रति जो होसला होती है, वह जवाब देने की हालत में आने लगता हैं।
ठस रिकरेन्स का असर रोगी पर परीवार पर और जिस पैथी से रोगी ने चिकित्सा प्राप्त कि है उस पैथी और उन डॉ. साहब पर भी पडता है और धीरे–धीरे विश्वास और होंसला टूटने लगता हैं।

कैंसर रिकरेन्स

अब समज ते है कि रिकेरेन्स क्या है – कैंसर के पुनः लोटने और प्रथम बार कैंसर होने में अगर तुलना करे तो रिकरेन्स अधिक घातक है। अधिक नुकसान दायक है क्योंकि 90 प्रतिशत मामलो में कैंसर जब पहली बार होता है, तब वह प्राईमरी यानी लोकल यानी एक ही अंग विशेष में पैदा होती है और इसकि चिकित्सा भी आसान होती हैं। और परीणाम भी जल्द प्राप्त हो जाते है खास तौर से आयूर्वेद में परन्तु हम बात कर रहें हैं। ऐलोपैथी की इसमें रोग की ठीक करने के लिए रोगी को किमो थेरेपी, रेडीयेशन थेरेपी और सर्जरी सेमी गुजरना पड़ता है और इन्ही चिकित्सा के चरणों से गुजर ने के बाद जब दुबारा कैंसर लोटकर आता है, तब वह 90 प्रतिशत केस में वह सेकेन्डरी यानी मेटा स्टेशीश यानी मल्टीपल बनकर लोटता है यानी सरलता से या समय कि कैंसर तीन चार अंगो में लोट आता है और रोगी को भय के साथ बहुत अधिक धुन कि व्यवस्था करने की चिन्ता और सताने लगती हैं।

अब समझते है, रिकरेन्स होता है क्यों है इसको समझने के लिए हमें कोशिकाओं के DNA को समझना पड़ेगा सिधी सी बात यह है कि कैंसर पैदा ही उन कोशिकाओं में होता है जिन का DNA बदल जाता है, और इस बदले DNA से कोशिका का सामान्य व्यवहार बदल जाता हैं। वह भरना भूल जाती है, एक ही प्रकार कि आदत वाली कोशिकांए एक स्थान पर इक्कठा होकर ट्यूमर बना लेती है यानी कैंसर कि गांठ बना लेती हैं। और यह बदलाव अन्य कोशिकाओं तक पहूंचना प्रारम्भ कर देती हैं। इसमे कुछ वैज्ञानिक कारण काम करते हैं। इन कोशिकाओं का बिहेवयर बदलने के पिछे इन में PD व CTLA 4 प्रोटीन भी इन कैंसर कोशिकाओं को जीवन अभय प्रदान करते हैं। दुसरा इन कोशिकाओं में निर्मात ट्यूमर असहनिय दर्द के साथ उस अंग विशेष के सामान्य कार्य में भी बाधक बन जाता हैं।

इसके चलते भूख कम लगना, नींद नही आना ग्लोनस्ट होना वजन तेजी से कम होना और WBC का बढना और प्लेटरेट्स का कम होना प्रारम्भ हो जाता हैं।

अब बात करते है रिकरेन्स की इसे डॉ. लोग अपनी भाषा में रिलेप्स भी कहते है, इसके प्रमुख कारण निम्न है :–

(1) सभी कैंसर कोशिकाओं का समाप्त नहीं होना भी एक बहुत बडा कारण है यानी कि कैंसर कि जीवित कोशिकाएं अपनी ग्रोथ बढाने का कार्य करती रहती हैं।

(2) कैंसर कि कहीं कोशिकाओं का शरीर के अन्य अवयवों में फैल जाने के कारण रोगी एक अंग की चिकित्सा के भरोसे रह जाता हैं।

(3) किमो और रेडियेशन कें दोरान शरीर में कुपोषण प्रर्याप्त उर्जाथान ऑक्सीजन कि कमी एवं जो कैंसर कोशिकाएं अधमरी अवस्था में आ जाती है, उनका DNA बदल जाता हैं। इन DNA के बदलाव को समजना होगा सब लोगो को इसमें आपके शरीर में रक्त निर्माण कि प्रक्रिया का स्थान यानी बोने मेरो भी कमजोर और कैंसर युक्त कोशिकाओं का निर्माण करने लग जाता हैं।

(4) मेरा व्यक्तिगत मत यह है कि कैंसर रक्त और मासं की कोशिकाओं में मौजूद रहती ही रहती हैं। कैंसर रिप्लेस से अगर बचना है तो आयुर्वेद को ही अपनाना पडेगा क्योंकि आयुर्वेद चिकित्सा पद्ति रस–रक्त मांस सिद्धान्त पर कार्य करता हैं।

तम्बाकू छोड़ने के उपाय

तम्बाकू छोड़ने का निश्चय करें। दिन अभी तय करें। आप अपने आस–पास रखी तम्बाकू वाली सभी चीजों को हटा दें। समय–समय पर कोई भी ऐसा दिन पुकर्रर करें, जब आप पूरे दिन में तम्बाकू का सेवन नहीं करेंगे। तम्बाकू छोड़ने के बाद शरीर के अच्छे प्रभावों पर गौर कीजिए। जब तम्बाकू के सेवन की तलब जोर से लगे तो अपनी तलब को थोड़ी देर भुला दें। अथवा अदरक को छोटे हिस्सों में काटकर उसे सेक कर उस पर निंबू व सेंधा नमक लगाकर उसका सेवन करें। तम्बाकू के सेवन की तलब से ध्यान हटाने के लिए कोई दूसरा कार्य करें। उन जगहों पर न जाएँ, जहाँ आपका मन धूम्रपान करने/तम्बाकू चबाने के लिए ललचाए। समान विचार रखने वाले ऐसे व्यक्तियों को दोस्त बनाएँ, जो तम्बाकू छोड़ने की आपकी कोशिश में आपको प्रेरित करें। तम्बाकू का सेवन न करने से होने वाली बचत की गणना

कर अपने तम्बाकू छोड़ने के फैसले को मजबूत बनाएँ। अपने फैसले को मजबूत बनाएँ। अपने फैसले पर अटल रहें। अपनी छवि को सकारात्मक बनाएँ–अगर आप तम्बाकू का सेवन छोड़ देते हैं तो यह आपकी जीत है–अपने आपको मुबारकबाद दें और फिर आप देखेंगे कि दूसरे लोग भी आपके नक्शे कदम पर चलेंगे। ध्यान रखें आप हमेशा के लिए तम्बाकू छोड़ें। तम्बाकू सेवन छोड़ने पर कुछ मामूली शारीरिक व मानसिक कठिनाई होती हैं इन कठिनाइयों को दवाइयों एवं समय–समय पर मनोचिकित्सा द्वारा समाप्त किया जा सकता है। इस सप्ताह का समय निश्चित करें और प्रथम दिन से 10 दिन तक निरतंर प्रतिदिन तम्बाकू की मात्रा कम करते जाऐं। अन्तिम 4 दिवस बिल्कुल सेवन ना करें। अपने साथ सौंफ, मिश्री, लौंग या दालचीनी रखें और तम्बाकू के सेवन की तलब होते ही इनका इस्तेमाल करें। तुलसी, अजवायन, कालीमिर्च, दालचीनी, लौंग तथा गुड़युक्त बिना दूध की चाय धीरे–धीरे चुस्की लेकर पियें।

आज कल होने लगा हैं बहुत कम उम्र मे कैंसर।

जैसे कि बच्चों में रक्त का कैंसर, मस्तिष्क और गुड़दे का कैंसर बहुत छोटी उम्र से ही देखा जा सकता है। आमतौर पर कैंसर की बीमारी 50–60 वर्ष की उम्र के बाद पाई जाती है और जैसे–जैसे उम्र बढ़ती जाती है वैसे–वैसे कैंसर का प्रकोप भी बढ़ता जाता हैं। हम जानते हैं कि हम बढ़ती उम्र को नहीं रोक सकते है, पंरतु हम जीवन में ऐसे तत्वों को कम कर सकते हैं जो कैंसर की उत्पति में मदद करते हैं।

सब जीवित प्राणी, जैसे कि मनुष्य, कीड़े–मकोड़े, सुक्ष्म जीवाणु इत्यादि कोशिकाओं से बने होते हैं। सूक्ष्म जीवाणु केवल मात्र एक कोशिका से बने होते हैं, परंतु मानव असंख्य कोशिकाओं से बने होते हैं और ये कोशिकाएं अलग–अलग काम करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की होती हैं, जैसे कि लिंग कोशिका शुक्राणु और डिंब उत्पति का काम करती हैं। सच तो यह है कि जीवन का आरंभ तभी होता है जब डिंब और शुक्राणु आपस में संबंध स्थापित करते हैं। इसी तरह से मांसपेशी की कोशिकाएं

भिन्न प्रकार की होती हैं और ये अपनी क्रिया से गति पैदा करती हैं, गुरदे की कोशिकाएं पेशाब की उत्पति और उसके त्याग में मदद करती हैं।

प्रश्न उठता है कि आखिर कोशिका क्या है ? कोशिका जीवित प्राणी मात्र की इकाई है और यह कोशिका ठीक अपने जैसी अन्य कोशिका की उत्पति कर सकती हैं। एक जैसी कोशिका के समूह को टिश्यू कहते हैं, उदाहरण के लिए मांसपेशी एक तरह का टिशू है। टिशू के समूह को अंग कहते हैं, उदाहरण के लिए हृदय, जिगर, फेफड़े आदि और इन सारे अंगों से मावन शरीर बनता हैं।

मानव शरीर जन्म लेने के बाद से वयस्क उम्र तक जैसे–जैसे बढ़ता है, वैसे–वैसे भिन्न प्रकार की कोशिकाएं विभाजित होकर आवश्यकता अनुसार संख्या में बढ़ती रहती हैं। वयस्क उम्र तक पहुंचने के बाद जब मानव शरीर का बढ़ना रूक जाता है तब कोशिकाओं का विभाजन भी कम हो जाता है। जो कोशिकाएं काम के कारण नष्ट हो जाती हैं केवल उन्हीं को बदलने के लिए नई कोशिकाओं की उत्पति होती हैं। मावन शरीर की बढ़त और उसका स्वस्थ अवस्था में रहना तभी संभव है जबकि कोशिकाओं का विभाजन एक अनुशासित ढंग से हो। मानव शरीर में कोशिकाओं का संतुलन रखने के लिए यह जरूरी है कि कोशिकाओं का विभाजन केवल आवश्यकता के समय हो और जब और अधिक कोशिकाओं की जरूरत नहीं हो तो इस विभाजन को रूक जाना चाहिए।

कभी–कभी मावन शरीर के किसी हिस्से में कोशिकाएं किन्हीं कारणों से (जिन्हें हम पूर्ण रूप से अभी तक समझ नहीं पाए हैं) अनियमित और अनियंत्रित ढंग से विभाजित होने लगती हैं। ये कोशिकाएं न केवल संख्या में बढ़ती हैं बल्कि ये आसपास के अन्य टिशू को बेधकर उनके अंदर प्रवेश कर जाती हैं और इस प्रकार की अव्यवस्थित और बेरोक वृद्धि को ही जड़ों वाली गांठ या मैलिगनेंट ट्यूमर या कैंसर कहते हैं।

- जो नई कोशिकाएं उत्पन्न होती हैं, वे अपने पूर्वजों की भांति या उनसे भिन्न प्रकार और आकार की हो सकती हैं।
- एक वृक्ष की जड़ों के समान, ये कोशिकाएं चारों और बढ़ती हैं और आसपास के दूसरे अंगों में प्रवेश कर जाती हैं। उस प्रकार से कैंसर की गिल्टी या ट्यूमर न केवल अपने आसपास के टिशू और अंगों, जैसे चमड़ी, अंतड़ियां, हड्डी इत्यादि से चिपक जाती हैं वरन् अन्य महत्वपूर्ण अंगों जैसे खून की नलियों, तंत्रिका आदि से भी चिपक सकती हैं।
- कुछ कोशिकाएं इस ट्यूमर से अलग हो सकती हैं और कुछ खून की नलियों और लसिका वाहिनियों में भी प्रवेश कर सकती हैं।

खून की नलियां दो तरह की होती हैं, धमनियां साफ रक्त को हृदय की और ले जाती हैं। लसिका वाहिनियां एक तरह की पतली नलियां होती हैं जिनके अंदर एक तरल पदार्थ बहता है जिसे लसिका कहते हैं। लसिका वाहिनियां गर्दन में स्थित एक बड़ी नस में खुलती हैं। बड़ी–बड़ी लसिका धमनियों के साथ में कुछ गिल्टियां होती हैं जिन्हें लसिका पर्व या नोड्स कहते हैं। ये गिल्टियां सूक्ष्म तत्वों को अपने में पकड़ लेती हैं, श्वेत रक्त कोशिकाओं का उत्पादन करती हैं और रोग प्रतिकारक भी बनाती हैं। कैंसर की कोशिकाएं रसौली से अलग होकर लसिका धमनियों द्वारा आगे जाती हैं। और लसिका नोड्स में प्रवेश कर सकती हैं, इससे ये नोड्स आकार में बड़े हो जाते हैं। हर अंग के अपने क्षेत्रीय नोड्स होते हैं, अतएव कैंसर होने की अवस्था में ये क्षेत्रीय नोड्स सबसे पहले आकार में बड़े हो जाते हैं, और बाद में अन्य नोड्स।

कैंसर की जो कोशिकाएं ट्यूमर से अलग हो जाती हैं, वे खून की नलियों द्वारा दूर के अंगों में पहुंच सकती हैं और इस तरह प्राथमिक ट्यूमर से बहुत दूर जाकर मेटास्टेसिस की उत्पति करती हैं। फेफड़े, जिगर, हड्डियां, मस्तिष्क, चमड़ी आदि ऐसे अंग हैं जहां आमतौर पर मेटास्टेसिस होते हैं। इनके शीघ्र विभाजित

होकर बड़े आकार के होने की संभावना रहती है। अतः ये जल्दी ही उन अंगों को क्षति पहुंचा सकते हैं। लसिका वाहिनियां अलग हुए कोषाणुओं को निकट तथा दूर की लसिका गांठों में ले जाती हैं, जहां से वे फिर रक्त की नलियों में प्रवेश कर सकते हैं। हालांकि इस अवस्था में शरीर के अन्य हिस्सों में मेटास्टेसिस का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं होता। कैंसर के कोषाणुओं का शरीर के दूसरे हिस्सों में मेटास्टेसिस के रूप में चले जाना कैंसर के ईलाज को मुश्किल बना देता हैं।

वंशानुगत कैंसर क्या हैं –

स्तन का कैंसर इसका एक उदाहरण है – इस बीमारी से पीड़ित पांच प्रतिशत मरीजों में पारिवारिक प्रवृति पाई जाती हैं। जीनोमा विकृत महिलाएं जो आगे चलकर स्तन कैंसर से पीड़ित होंगी, उन्हें पहले से ही पहचाना जा सके, इस दिशा में बहुत अनुसंधान हो रहा हैं। ऐसी महिलाओं की जांच कम से कम उम्र में ही शुरू की जाती है जिससे कि कैंसर पाए जाने पर बहुत प्रारंभिक अवस्था से ही ईलाज शुरू किया जा सके और इससे मरीज के एकदम ठीक होने की सौ प्रतिशत आशा की जा सकती हैं। मनुष्य के पूर्ण जीनोम को भली–भांति जाना गया है और यह उम्मीद की जाती है कि भविष्य में क्रोमोसोम में विकार को पहचानकर बाद में होने वाली बीमारी को पहचानना संभव हो सकेगा। यह भी उम्मीद की जाती है कि जीनोम में कुछ फेर बदलकर क्रोमोसोम के विकार को सुधारा जा सकता है जिससे कि आगे जाकर ऐसी स्त्रियां स्तन के कैंसर से पीड़ित नहीं हों। कई अन्य तरह के कैंसर के लिए भी यही बात लागू होती हैं।

अंडाशय का कैंसर, बच्चों में गुर्दे और आंखों का कैंसर आदि अन्य ट्यूमर हैं जिनमें पारिवारिक संबंध अधिक मात्रा में देखा जाता है। अगर किसी बच्चे के माता–पिता में ऊपर लिखित कैंसर में से कोई बीमारी पाई जाती है तो इन बच्चों को नियमित रूप से अपनी जांच कराते रहना चाहिए ताकि कैंसर की बीमारी होने की अवस्था में वह बहुत ही प्रांरभिक अवस्था में पकड़ा जा सके,

जिससे कि अच्छे से अच्छे ईलाज का आंरभ ठीक समय पर किया जा सके।

यह ठीक ही कहां गया है कि आप न तो माता–पिता का चुनाव कर सकते हैं और न ही वंशानुगत परिस्थितियों से बच सकते हैं, परंतु निश्चित रूप से प्रारंभिक अवस्था के कैंसर का पता लगाने के लिए सही स्क्रीनिंग कार्यक्रम का चुनाव कर सकते हैं जिससे कि प्रारंभिक अवस्था में ही अच्छे से अच्छा ईलाज किया जा सके।

कैंसर के बारे में तथ्य और गलत धारणाएं व तथ्य

कैंसर के विभिन्न पहलुओं पर समस्त संसार में किए गए अनुसंधानों ने कुछ मूल तथ्यों पर रोशनी डाली है। उसके अनुसार यह बीमारी किसी भी उम्र में, बचपन से बुढ़ापे तक, कभी भी हो सकती है। यद्यपि अधिकतर कैंसर पचास वर्ष की आयु के बाद होते हैं, परंतु यह नवजात शिशु को जन्म होने के बाद या गर्भावस्था में भी हो सकता हैं।

कैंसर शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है, कोई भी अंग इससे सुरक्षित नहीं है, परंतु कुछ अंगों में यह अधिक आक्रमण करता हैं। यह छुत की बीमारी नहीं है, इसलिए किसी भी व्यक्ति को कैंसर से पीड़ित मरीज से मिलने या उसके साथ रहने से घबराना नहीं चाहिए। कैंसर हमेशा घातक नहीं होता, इसे ईलाज से ठीक किया जा सकता है। प्रत्येक तीन कैंसर पीड़ितों में से एक पूर्णतया स्वस्थ किया जा सकता है और अमेरिका में ऐसा संभव किया जा रहा है। एक तिहाई मरीजों को एकदम ठीक किया जा सकता है और एक तिहाई में बीमारी को फैलने से रोका जा सकता हैं। जल्दी से जल्दी तथा प्रभावित ईलाज अगर बीमारी के आरंभ में ही दिया जाए तो 75 से 80 प्रतिशत मरीजों को बचाया जा सकता हैं। चिकित्सा का परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि बीमारी की स्टेज पर ईलाज का आरंभ हुआ हैं। अन्य बिमारियों की भांति कैंसर में भी चिकित्सा के स्तर का प्रभाव होता है। अनुभवी कैंसर विशेषज्ञों तथा विशेष कैंसर सेंटर द्वारा बेहतर ईलाज की आशा की जाती है। कई बार आरंभ में भूल से कैंसर का ईलाज टी.बी. इत्यादि समझकर किया जाता है जिससे

काफी समय नष्ट हो जाता है। कई बार टी.बी. का भी कैंसर समझकर ईलाज किया जाता है। टिशू बायोप्सी या सेल्स की बायोप्सी से ही बीमारी का सही पता चलता हैं। कैंसर का कोई गुप्त अथवा जादुई ईलाज नहीं है, इसलिए गलत व्यक्तियों के पास जाकर समय, धन एवं शक्ति नष्ट न करें। कैंसर शीघ्र गति से बढ़ने वाला हो सकता है या यह शरीर में पांच से चालीस वर्ष तक रूका भी रह सकता हैं। भारत में कैंसर के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है, शायद भारतीयों की औसत आयु के बढ़ने के कारण या निदान के लिए उपलब्ध नई तथा उतम तकनिकों की वजह से इस बीमारी का निदान शीघ्रता से एवं ठीक हो पाता है। पश्चिमी देशों की तुलना में भारत में कैंसर कम उम्र के व्यक्तियों में देखा जाता हैं। तंबाकू निश्चित रूप से कैंसर को उत्पन्न करता हैं।

गलत धारणाएं

निरक्षता भारत का एक बढ़ा अभिशाप है। स्वास्थ्य शिक्षा के अभाव के कारण लोगों में कैंसर के बारे में गलत धारणाएं हैं। हमारे देश में कैंसर को लाईलाज समझा जाता है जिससे बचा नहीं जा सकता, परंतु यह सही नहीं हैं।

कैंसर शरीर से कभी खत्म नहीं होता है। कैंसर लाईलाज है और इससे मृत्यु निश्चित है। यह बीमारी बहुत दर्द देती हैं। छोटे आकार की सूजन और घाव कैंसर नहीं हो सकते हैं। यह छूत की बीमारी है और समीप संपर्क से दूसरों में फैल सकती हैं। देवी–देवताओं के श्राप के कारण यह बीमारी होती हैं। कैंसर वंशागत समस्या है और बच्चों में फैलती है। यह धारणा कुछ तरह की बिमारियों के लिए ठीक है, तुंरत आमतौर पर यह धारणा गलत हैं।

कैंसर आंकड़ो की दृष्टि में

मैं आपको कैंसर रोग के कुछ आंकड़े बता रहा हुं, जो आपको ना सिर्फ सोचने के लिए मजबूर कर सकता हैं बल्कि कुछ करने को भी बाध्य कर सकता है। शुरूआत करते हैं, भारत के कुछ आंकड़ो से और हां यह आंकड़े मेरी कपोल कल्पना नही है। यह आंकड़े

भारत सरकार, राज्य सरकार, कैंसर की चिकित्सा करने वाले अस्पतालों, कैंसर पर शोध कार्य करने वाले कहीं ईमानदार एन. जी.ओ. (NGO)और नवग्रह आश्रम संस्थान की कैंसर एनालेसीस टीम के द्वारा प्रमाणीत रूप से जुटाए गये है। आंकड़े कितने डराने वाले है, आप स्वयं इसका फैसला करे और आप अगर उचित समझते है, यानी आप अपने माता–पिता, भाई–बहिन, पति–पत्नि, बेटा–बेटी, मित्र या स्वयं को अकाल मृत्यु के मुँह में जाने से बचाना चाहते है तो, श्री नवग्रह आश्रम की कैंसर एवेयरनेस कार्यक्रम का हिस्सा बन जाऐं और कैंसर के कारणो, चिकित्सा और जानकारियों को हर व्यक्ति तक पहुंचाऐ।

आंकड़े इस प्रकार हैः– 1. भारत में 2021 कुल पुरूष कैंसर रोगियों कि संख्या 9 लाख और महिला कैंसर रोगियों कि संख्या 11 लाख हैं, ये संख्या जीवित रोगियों कि हैं, यानी दोनों मिलाकर 20 लाख रोगी जीवित है जो मौत से पल–पल लड़ रहे हैं।
2. यह संख्या 2025 तक 28 लाख होने का अनुमान कई संस्थाऐं बता चुकी है। 3. भारत में हर पांचवी मौत कैंसर के कारण होती हैं। 4. सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक मुँह का कैंसर भारत वर्ष में होता है और अगर राज्य कि बात करूं तो महाराष्ट्र में होता है। 5. भारत में 1995 तक कैंसर होने की औसत उम्र 50 वर्ष से ऊपर के स्त्री–पुरूषों में थी, पर वर्तमान में 2022 के चलते यह औसत उम्र के आंकड़े 35 वर्ष हो चुका है, यानी बच्चों और जवान उम्र के लोगों में यह बहुत तेजी से हो रहा है। 6. 2015 से 2022 तक कैंसर की मृत्यु दर 40% से अधिक बढ़ी हैं, कैंसर अपना रूप ज्यादा घातक करता जा रहा है और हम अधिक लापरवाह होते जा रहे हैं। उपरोक्त जानकारी भारत के स्वास्थ्य मंत्री ने राज्य सभा में लिखित प्रश्न के उत्तर में बताई हैं।

ये आंकड़े तो वो है जो किसी भी प्रकार सरकारी और निजि चिकित्सालय तक पहुंच पाये पर विश्व स्तर पर कैंसर रोगियों के लिए कार्य करने वाले कई विश्वसनीय (NGO) और मानवाधिकार आयोग सहीत कई संस्थाऐं को कहना हैं, की 60% रोगी ही आंकड़ो तक आते है, इसका 40% तो गरीबी, अज्ञानता

और अन्य कई कारणो जैसे जाँचे ही नही करवा पाने के कारण कैंसर के आंकड़ो में शामिल ही नहीं हो पाते है।

मानननिय मंत्री महोदय ने संसद में यह भी बताया की भारत में 30 वर्ष की उम्र के आस–पास के लोगों या इससे 5–6 वर्ष अधीक उम्र यानी अधिकतम 40 वर्ष उम्र के युवा मुँह के कैंसर और महिलाऐं स्तन कैंसर और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से बहुत अधिक तादाद में ग्रसित हो रहे है, जो एक बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है। भारत सरकार ने अपने अधिकारीक दस्तावेजों में इस बात को स्वीकार किया हैं की इस कैंसर की सुनामी में सबसे अधिक जिम्मेदार कारण धुम्रपान, तम्बाकू, शराब, मोटापा और कुपोषण मांसाहारी लोगों की संख्या में वृद्धि से मिजोरम, मणीपुर, आसाम, बंगाल, उडीसा, जैसे राज्यो में स्मोक मीट खाने की परम्परा के चलते बहुत खतरनाक गति से कोलोन और आहार नली एवं पाचन संस्थान के कैंसर में प्रतिवर्ष 15% से अधिक गति से बढ़ रहा है।

अब बात करते है प्रान्तो के आंकड़ो पर 15–20 वर्ष पहले कैंसर का नाम लेते ही पंजाब की तस्वीर आँखो के सामने आती थी। जबकि आज की तारीख में बिहार, बंगाल, उडीसा, उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा जैसे प्रान्त अत्यधिक कैंसर की चपेट वाले राज्यो में आकर ना सिर्फ खड़े हो चुके है बल्कि बहुत तेज रफ्तार से आंकड़े बढ़ रहे हैं। जो स्वभाविक रूप से चिन्ता का विषय है।

ग्लोबल कैंसर ऑब्जरवेटरी (GCO) और भारतीय आर्युविज्ञान अनुसंधान परिषद (ICMR) के आंकड़े बताते है कि सम्पूर्ण विश्व में कैंसर जिस गति से फैल रहा है, उससे अधिक गति से भारत में मुँह फेफड़े और स्तन का कैंसर फेल रहा हैं और अधिक चिन्ता का विषय यह है की इन तिनों प्रकार के कैंसर से लाखों लोग प्रतिवर्ष मौत का निवाला बन रहे हैं। भारत में प्रतिवर्ष 5 लाख से अधिक कैंसर रोगी मुँह के कैंसर के आ रहे है, स्तन और फेफड़े के कैंसर भी 4 लाख प्रति वर्ष से कम नही है।

भारत सरकार और (WHO) के अनुसार जनसंख्या को अगर आधार नही माने तो कुल जनसंख्या में से कैंसर प्रभावित

होने वाले लोगों का प्रतिशत सम्पूर्ण विश्व में 15% लोग कैंसर की चपेट में आते है, डेनमार्क जो की युरोपीय देश में यहां प्रतिशत के हिसाब से सर्वाधिक कैंसर होता है। सम्पूर्ण विश्व में महिलाऐं सर्वाधिक कैंसर का शिकार बन रही है। सम्पूर्ण विश्व में 1.25 करोड़ से अधिक लोग कैंसर की चपेट में आ रहे है। संसार में कई ऐसे देश है, जहां पर कैंसर से लड़ने के लिए पूर्ण संसाधन भी मौजूद नही है और कैंसर का ईलाज ऐलोपैथी मे बहुत महेंगा होने के कारण वो देश और वहां के नागरिक कैंसर से बहुत संख्या में मृत्यु के ग्रास हो रहे हैं। अब बात करते है बच्चो के कैंसर के आंकड़ो के बारे में। भारत में सर्वाधिक बच्चों में कैंसर दिल्ली NCR में होता है, यहां का हर 9 में से 1 बच्चा कैंसर रोग की चपेट में आये हुए है। अगर दिल्ली में बच्चों के कैंसर का प्रतिशत देखे तो दिल्ली राज्य में भारत और दुनिया के अन्य राज्यों से अधिक घातक आंकड़े हैं। इसके प्रमुख कारण ICMR ने जेनेटिक, लाईफ स्टाइल (पिज्जा, बरगर, कोल्ड ड्रींक) प्रदूषण केमिकल कनेक्टिविटी और अन्फेक्शन, कुपोषण को माना है।

दिल्ली के बच्चों में सर्वाधिक 40% अधिक में **हॉजकिंग और नॉन हॉजकिंग** लिम्फोमा के रोगी हैं, इसके ऑस्टियो सारकोमा, लेक्यूमिया, गाईलोमा और आतों के कैंसर के रोगी भी बहुत देखे जा रहे हैं।

अब अगर राज्यों और क्षैत्र के आंकड़ो की बात करें तो निम्न आंकड़े चोंकाने वाले है :– 1. सर्वाधिक मुँह का कैंसर महाराष्ट्र में। 2. सर्वाधिक आतों और रेक्टम का कैंसर अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालेण्ड, सिक्किम और त्रिपुरा इन राज्यों में देश के प्रतिशत यानी महिलाओं की तुलना में पुरूषों में कैंसर अधिक है, यह अनुपात 57:43 हैं। इसका बड़ा कारण स्मोक मीट और तम्बाकू का अत्यधिक प्रयोग। 3. हरियाणा राज्य में कैंसर 27% से अधिक वृद्धि दर है। 4. केरल में यह वृद्धि दर 26% है। 7. गुतरात में यह दर 21% है। यह आंकड़े बहुत चिन्ताजनक है, अगर यह आंकड़े बहुत तेजी से बढ़ते है तो, वह

दिन दुर नहीं है जब हम, प्रतिदिन हमारे किसी प्रियजन को मरता हुआ देखेंगे इससे अच्छा यह है की मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।

मैं भारत सरकार और राज्य सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं की सभी तम्बाकू उत्पादकों, उपभोक्ताओं, शराब निर्माताओं, शराब उपभोक्ताओं सभी को आज ही तत्काल इस मौत के व्यापार को बन्द करवाना होगा।

मेरे मन की बात

मैं मेरे मन की बात लिख रहा हूँ, कैंसर विश्व से तब तक समाप्त नही हो सकता है, जब तक आप सब ये उपाय नही करोगे हो सकता है, आप लोगों को यह कम समझ आए।
कैंसर शब्द सुनते ही एक ऐसा एहसास होता हैं, जैसे एक आतंकवादी या एक राक्षस या एक नकारात्मक जिद्दी व्यक्ति आपको बार–बार बहुत ही ढ़ीटपन से बार–बार आपको परेशान कर रहा हैं, जबकि अन्य बीमारी में आपको केवल बीमारी का अहसास होता हैं, जैसे बुखार है, उल्टी दस्त है, या चर्मरोग हैं। हमे उम्मीद होती हैं की थोड़े दिन औषधी लेंगे थोड़े पैसे लगेंगे और इस बीमारी से मुक्ति मिल जाएगी परन्तु कैंसर होते ही सिधा मौत की कल्पना धीमे–धीमे मरने का डर, अपनी क्षमता से कई गुना पैसे खर्च होने का डर और इतना धन समय और परिक्षण करने के बाद भी रोग ठीक नहीं होने का भय आपके मन में घर कर जाता हैं। इसका कारण बहुत स्पष्ट हैं, यह बीमारी नहीं है। यह सम्पूर्ण समाज द्वारा की गई गलतियों का परिणाम हैं। जब एक व्यक्ति कोई गलती करता है तो वह खुद ही उसको ठीक करने की सोचता हैं और कुछ प्रतिशत उसमें उसे सफलता भी मिलती हैं।

कैंसर होने के कारणों को एक नजर देखे तो पुरा समाज, सरकारें और परिवार के साथ–साथ रोगी स्वयं जिम्मेदार हैं। शराब, तम्बाकू, मांस, सफेद शक्कर, रिफाइन्ड तेल, समुन्द्री नमक,

पेस्टीसाइड जैसे कई कारण आपको दिखाई देते हैं। अब क्रमवार इन कारणों की विवेचना करते हैं– कौन कितना जिम्मेदार हैं।

1. **शराबः–**शराब बनाने वाला जिम्मेदार है, सरकार चूंकि 300% कर वसुल रही है, तो सरकार जिम्मेदार हैं, शराब बैचने वाला जिम्मेदार हैं, शराब व्यापारी को जिसने दुकान किराये दे रखी हैं, वह दुकान मालिक जिम्मेदार हैं, आप स्वयं जिम्मेदार है, क्योंकि आप खरीदकर शराब का सेवन कर रहे हैं और लिवर कैंसर और पाचन तंत्र के कैंसर को आंमत्रण दे रहे हैं। अब आप उपरोक्त में कौन हैं और कौनसा साहसी कदम उठा सकते हैं, अगर समाज ओर स्वंय को बचाना हैं तो शराब की नहीं शर्बत की फेक्ट्री लगाओ शराब के कर से सरकार मत चलाओ जिससे जनता काल के मुँह में चली जा रही है, अगर दुकान किराये देनी है तो, किसी कपड़े या किराने वालों को दे दो भाई आप भी खुश, दुकानदार भी खुश और आप तो जिम्मेदार है ही, अगर आप शराब खरीदना पिना और पिलाना बन्द कर दे तो खूब शराब बने दुकाने भी लगे तो आपका क्या बिगाड़ लेगी।
2. **तम्बाकूः–** तम्बाकू बोने वाला जिम्मेदार है, खरीदने वाला जिम्मेदार है, सरकार जिम्मेदार हैं प्रोसेसिंग के कारखाने वाले वाले जिम्मेदार हैं, विज्ञान कम्पनी जिम्मेदार हैं, दुकान चलाने वाला जिम्मेदार हैं, दुकान किराये देने वाले जिम्मेदार है। आप स्वयं जिम्मेदार हैं। अब आप इस गुनाहगारों की सुची में अपने आप को कहां खड़ा पाते हो, अगर ईमानदारी है तो चलो सर्वे करते हैं, अगर आप किसान हैं तो तम्बाकू बोना बन्द करें तमिलनाडु, आन्ध्रा और खेड़ा जिला गुजरात आनन्द के आस–पास के किसानों से मेरी विनती हैं, आप तम्बाकू पैदा करके पाप के भागी बन रहे हैं। आप बाजरा बो सकते हैं, ज्वार बो सकते हैं, हाँ मुझे मालूम है, आप लोग कहेंगे हमारे यहाँ वर्षा आधारित तम्बाकू की खेती होती हैं इसीलिए में आप को बाजरा और ज्वार की सलाह दे रहा हूँ। व्यापारी जिम्मेदार हैं अगर आप नहीं खरीदोगे तो किसान सिधा फेक्ट्री कितने प्रतिशत लेकर जाऐगें आप यह पाप करना बन्द करें और भी बहुत सारे व्यापार हैं, अगर कैंसर से जिस दिन

आपका बच्चा तड़पेगा उस दिन आपकी क्या हालत होगी। सरकार की जिम्मेदारी हैं की कुछ वर्षो तक तम्बाकू किसानों को क्षतिपुर्ती दे और तम्बाकू उत्पादन यानी खेती और प्रसंस्करण(गुटखा, सिगरेट, बिड़ी निर्माण) बन्द करवांए और इस मौत के व्यापार के टेक्स से अपनी तिजोरी भरना बन्द करके जनकल्याणकारी सरकार होने का शबूत पेश करें। कारखाने वाले कब सोचेंगे क्या और किसी उत्पादन यानी लोहा, कपड़ा, सिमेन्ट का कारखाना नही लगा सकते हो।

कृपया तम्बाकू का कारखाना नही लगाऐं। विज्ञापन कम्पनी वाले क्या अपने आपको अजर–अमर समझ बेठे हैं। आप कपड़ो और आटे का विज्ञापन कर लों भाई नहीं तो और कोई उत्पाद देख लो तम्बाकू का विज्ञापन बन्द कर दो आप अपनी जिम्मेदारी समझों भाई, लोग आपको क्रियटिव कहते हैं। आप समाज को दर्पण दिखाने का कार्य करते हो भाई। दुकानदार भाई गुड़ बेचलो, कच्ची घाणीवाला तेल बेचलो, कपड़ा बेचलो पर यह गुटखा, बिड़ी, सिगरेट बेचकर क्यों मौत का सामान बेच रहे हो। आपका लड़का, आपकी पत्नि, आपका भाई किसी और दुकान से यह मौत का सामान खरीद रहे हैं। आप सभी व्यापारी अगर इस जहर को बेचना बन्द कर देंगे तो पुरी दुनिया के लोग फेक्ट्री तक जाकर गुटखा, तम्बाकू, सिगरेट खरीदने थोड़े ही जाएगें। अब नम्बर है, आपका खुद का आप बन्द करें अभी शपत ले जीवन भर इस जहर को नहीं छुने की। कोई टेक्स ले, बेंचे, विज्ञापन करें अन्त में लेगा कौन इस जहर को जब आप ही नही लोगे आप मतलब आप स्वयं। क्रान्ति अगर पड़ोसी के घर हो भी जाएगी तो आपको इस नकली क्रान्ती से क्या लाभ होने वाला हैं। तम्बाकू शराब सफेद नमक रिफाइन्ड तेल, पेस्टी साइड, केमिकल का उपयोग आपको बन्द करना हैं, क्योंकि कैंसर व्यक्तिगत होता हैं, बचना भी आपको ही हैं, सरकार क्यों सोचेगी उनके अपने स्वार्थ हैं। आप बाल कटवाने वाली भेड़ बनो या एक साहस वाला शेर फैसला आपको करना हैं।

3. **रिफाइन्ड तेल 4. सफेद शक्कर 5. मांस का सेवन 6. केमिकल 7. पेस्टी साइड 8. समुन्द्री नमक** जैसी चिजों का उपयोग करना आपकी मजबूरी हैं, आप अगर इन चिजों

का सेवन इसी समय बन्द कर देते हैं तो क्या कोई बहुत बड़ा अनर्थ हो जाएगा आप क्यों अपने आपको ऐसा कबुतर साबित कर रहे हो, जो बिल्ली को देखकर अपनी आँखे बन्द कर लें और यह सोचे की, मैं बिल्ली को दिखाई नही दे रहा हूँ और वह कबुतर इसी धोखे में मारा जाता हैं, बिल्ली तो उसको देख ही रही हैं, आप संकल्प लेंगे तभी खतरा टलेगा।

सुनो भाई निवेदन हैं मेरे आपके भले की बात हैं। तम्बाकू उत्पादक किसानो, व्यापारियों, गुटखा निर्माताओं और तम्बाकू उत्पादों (गुटखा, बिड़ी, सिगरेट) के टेक्स से खजाना भरने वाले सरकारी अफसरों और मंत्रियों सुनो जिस दिन आपका बेटा कैंसर से तड़पेगा क्या उस दिन भी आप यह तम्बाकू बोना, बेचना, गुटखा, बिड़ी, सिगरेट बनाना उपयोग करना और टेक्स लेना चालु रखोगे, सोचो आप में से कौन हैं, जो इनको नहीं छोड़ सकता। ये सब बाते मेरी अन्तर आत्मा के उदगार हैं, आप इसे शब्द जाल समझते हैं, तो आपको अपने आपका मुल्यांकन करने की जरूरत हैं।

ये है कैंसर के दुष्मन

(1) खानपान सही : जब भी आप नेचरल और सामान्य चीजें खाते हैं तो आप भी तंदुरूस्त ही रहते हैं। पैक्ड फूड, प्रिजव्ड फूड, फास्ट फूड (जो सामान्य फूड नहीं हैं) आदि में ऐसी चीजें मिलाई जाती हैं जो दिखने में तो ताजा होती हैं, लेकिन हकीकत में ये बासी होती हैं। इन्हें केमिकल मिलाकर ताजा किया जाता है। ऐसी चीजें न खाएं। साथ ही बिन मौसम फल और सब्जियां भी न लें। नॉनवेज खाने में परहेज करें खासकर रेड एवं प्रोसेस्ड मीट के सेवन से बचें। सेहतमंद फैट चुनें जैसे बटर एवं सैचुरेटेड फैट्स के बजाए ओलिव ऑयल चुनें।

(2) लाइफस्टाइल दुरूस्त : हम बचपन से जिस तरह जीते आए हैं, उसी तरह आगे भी जीना चाहिए। ऐसा न हो कि गांव से या छोटे शहरों आने पर या दूसरों की देखा–देखी अपनी अच्छी आदतों को भी बदल लें। अगर हमें सुबह जल्दी उठने और पार्क

या फील्ड में जाने की आदत है तो उसे देर रात तक जागने में न बदलें।

(3) मन में चैन : मानसिक शांति की कमी आज सबसे ज्यादा है। लोग तनाव में ही जीना पसंद करने लगे हैं। फेसबुक, वाट्सऐप आदि के चक्कर में हम अपना चैन खो देते हैं। ग्रुप में साथ बैठने पर भी लोग आपस में बातें नहीं करते, बस अपने मोबाईल में लगे रहते हैं और इंटरनेट की गुलामी करते हैं। अगर हम अपनी भावनाएं दूसरों से साझा नहीं करते तो हमारे अंदर ऐसे फ्री ऑक्सिडेटिव रेडिकल्स बनने लगते हैं जो धीरे–धीरे शरीर में जमा होने के बाद जीन्स को ही नुकसान पहुंचाते हैं।

आयुर्वेद और कैंसर

अगर कैंसर से मुक्ति चाहते हो तो, वापिस आयुर्वेद की तरफ ही लोटना पड़ेगा।

आयुर्वेद एक सम्पूर्ण जीवन विज्ञान है, अतः इसमें एक स्वस्थ व्यक्ति को स्वस्थ रहने के सभी नियम बताएं गए हैं। जिन्हे हम ऋतुचर्या, दिनचर्या, आहार–विहार आदि में सत्य में देखते है। लेकिन वर्तमान में हम दिनचर्या, ऋतुचर्या, आहार–विहार के नियमों का पालन नही करते जिसके कारण वात–पित्त–कफ़ दोष बिगड़ते है और व्यक्ति को सामान्य रोगों से लेकर गम्भीर रोगों का शिकार होना पड़ता है। पहले हमें रोग के पूर्वरूप (Eardy sign & Symptoms) देखने को मिलते है, जिन्हे अनदेखा करने पर ये पूर्वरूप लक्षणो मे परिवर्तित हो जाते है और एक स्वस्थ व्यक्ति अपने आप को रोगी महसूस करता हैं।

आयुर्वेद चिकित्सा का नाम सुनते ही मन मे वात–पित्त–कफ़ के बारे में जिज्ञासा उत्पन्न होती हैं की ये क्या हैं? सरल शब्दों मे समझाने की कोशिश करूं तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सभी वस्तुए, जीव–जन्तु पंचभौतिक होते है अर्थात सभी का निर्माण पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल और आकाश पंचमहाभूतों से हुआ है। और इन्ही पंचमहाभूतो के आपसी संयोग से वात–पित्त–कफ़ दोष की उत्पत्ति होती है।

वात	=	वायु	+	आकाश
पित्त	=	अग्नि	+	जल

कफ = जल + पृथ्वी

यह तीन दोष ही मानव जीवन का आधार भी है। इन तीनो दोष (वात, पित्त, कफ) के विशेष लक्षण होते हैं। जिन लक्षणों के आधार पर एक चिकित्सा रोगी की प्रकृति और रोग का निदान व चिकित्सा करता है।

जब ये तीनों दोष शरीर में सम–अवस्था में रहते हैं तो रोगी निरोगी रहता है। और इनमें से कोई एक या दो अथवा तीनो दोष सम्मिलित रूप से विषम अवस्था में आते है तो रोग की उत्पत्ति होती हैं। उन दोष विशेष से सम्बन्धित इसी क्रम में हमें धातु मल व अग्नि को भी समझना आवश्यक है। आयुर्वेद मतानुसार मानना शरीर 7 धातुओं से बना हैं। जो रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र हैं। जो भी आहार हम लेते है उससे रस का निर्माण होता हैं। इसके बाद क्रमानुसार उस रस से सर्वप्रथम रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा व मज्जा से अन्त में पुरूष में शुक्र व स्त्रियों में आर्तव का निर्माण होता हैं।

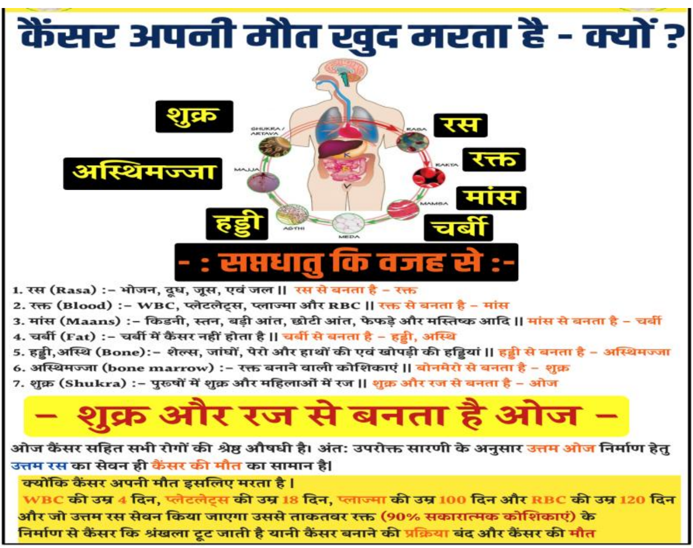

इस शुक्र व आर्तव से अन्त में ओज का निर्माण होता है। ओज

सप्त धातुओं का सार होता है। और शास्त्रों में इसे बल कहते हैं। यह ओज हृदय में स्थित होता हैं। मनुष्य का पूर्ण स्वास्थ्य व व्यक्तित्व ओज पर निर्भर करता हैं। जो उत्तम आहार–विहार से ही संभव हैं। ओज का कम होना रोग की उपस्थिति को दर्शाता है, व ओज के खत्म होने का अर्थ मृत्यु को दर्शाता हैं।

अग्नि की अवधारणा में भी इसी क्रम में समझने का प्रयास करते हैं। आयुर्वेद के अनुसार 13 प्रकार की अग्नि होती हैं। जिसमें एक जठराग्नि प्रधान है जो भूताग्नि व 7 धात्वाग्नि होती है। इन में जठराग्नि प्रधान है जो जठर यानी अमाशय में है व आहार को पचाकर रस व मल का निर्माण करती है। इस रस से फिर 7 धात्वाग्नियों की क्रिया से रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र धातुओं को निर्माण होता हैं। इसके अतिरिक्त 5 भूताग्नियों आहार में आहार में उपस्थित पंच महाभूत पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल आकाश का पाचन करती करती है। जो सैलुलर मेटाबोलिज्म (कोशिकिय उपापचय) को दर्शाता हैं।

जठराग्नि को प्रधान कहने का कारण है, की जो आहार हम लेते हैं, उसका सर्वप्रथम पाचन जठराग्नि के द्वारा ही होता हैं। जिससे रस का निर्माण होता हैं। जठराग्नि में मन्द या तिव्र होने से विभिन्न रोगो की उत्पत्ति होती हैं। जैसे जठराग्नि के मन्द होने से उदर रोग, गुदा के रोग(पाइल्स, फिस्टुला), प्रमेह (शूगर) आदि होते हैं, और तीव्र होने पर भस्मक रोग (हाइपर थायराइडज्म) रोग होता हैं। अतः शरीर को निरोगी रखने के लिए अग्नि को सम अवस्था में होना आवश्यक हैं।

सम अग्नि उचित आहार–विहार समय पर भोजन, समय पर सोना व उठना व आयुर्वेद के सूत्रों के पालन से ही संभव हैं।

चूंकि में पहले ही कह चुका हूँ आयुर्वेद एक सम्पूर्ण जीवन विज्ञान है। जो रोगो के उपचार से लेकर स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करने के सूत्र भी प्रदान करता हैं।

कैंसर जैसे गम्भीर रोग को समझने के लिए पहले यह जानना जरूरी है की आयुर्वेद के ग्रन्थो में कैंसर शब्द कहीं भी अंकित नही हैं। आयुर्वेद में कैंसर को कई अन्य नामों से जाना जाता है।

कैंसर शब्द की व्युत्पत्ति का श्रेय ग्रिक फिजिशयन हिप्पोक्रेटस (460–370BC) को जाता हैं। हिप्पोक्रेटस ने ट्यूमर के लिए "कार्सिनोमा" शब्द का प्रयोग किया जिसका शाब्दिक अर्थ होता हैं "केकड़ा"। बाद में रोमन फिजिशयन "सेल्सस" (25BC-50AD) ने इसे "कैंसर" शब्द दिया। और बाद में ग्रिक फिजिशयन "गेलेन" ने (130–200 AD) में इसे "ओकोंस" शब्द दिया।

आयुर्वेद में कैंसर को ग्रन्थी (छोटा ट्यूमर) व "अबुर्द" (बड़ा ट्यूमर) जैसे शब्दो का प्रयोग होता हैं। जो शोथ युक्त (इनफ्लामेटरी) और शोथ रहित (नॉन–इन्फलामेटरी) दोनों प्रकार के हो सकते है। इनके अतिरिक्त "कर्कटार्बुद" शब्द भी कैंसर को ही इगिंत करता है।

बढ़े हुए वात व कफ दोष विभिन्न उत्तको को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप गोल, दृढ़, गहरी जड़े, धीमी गति से बढ़ने वाली मांसल वृद्धि होती है। जो दर्द मुक्त व दर्द रहित हो सकती हैं। इन्हे ही आयुर्वेद मे अर्बुद कहते हैं। आयुर्वेद में बढ़े हुए दोष और प्रभावित उत्तको के आधार पर 6 प्रकार के ट्यूमर का वर्णन किया गया हैं, वातज, पित्तज, कफज, मेदज, मॉसज और रक्ताबुर्द इनके अत्तिरिक्त आयुर्वेद में 8 महा रोगों का वर्णन हैं –

वात व्याधि, प्रमेह, कुष्ठ,अर्श, भगन्दर, पथरी तथा उदर रोग। इनमें से भी कुछ रोगों का समावेश वर्तमान में कैंसर रोग में किया जा सकता हैं।

वर्तमान में कैंसर की श्रेणी में आने वाले रोगों जैसे लंग कैंसर, लीवर कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, लिम्फोमा, मेलेनोमा आदि में कुछ रोग ऐसे है जो आयुर्वेद की दृष्टि से कैंसर ही हो जाता है। लेकिन आधुनिक निदान (मार्डन डाइग्नोस) से कैंसर की टेग (ठप्पा) लगने पर रोगी घबरा जाता हैं, और मार्डन ट्रीटमेंट के चलते भारी कैमिकल सर्जरी से होता हुआ बहुत कमजोर स्थिति में पहुंच जाता है।

संभवतः रोग का आधुनिक निदान (मार्डन डाइग्नोस) व आयुर्वेदिक निदान लक्षणो के आधार पर अलग–अलग करने चाहिए। लेकिन इसमें भी एक भारी समस्या आज आयुर्वेदिक चिकित्सकों के सामने आ जाती हैं। जब रोगी कैंसर में आयुर्वेदिक

चिकित्सा लेने पहँचता है तो इससे पहले वह रोगी एक मार्डन निदान (रोग का निदान) को लेकर विभिन्न सर्जरी, कीमों, रेडिएशन आदि से निकल चुका होता हैं। जिसमें परिणाम स्वरूप रोग के लक्षण (उपद्रव) विपरित औश्र अस्पष्ट हो जाते हैं। अतः यहां पर आयुर्वेद में रोग की पहचान लक्षणो, दर्शन, स्पर्शन, नेत्र, मूत्र आदि के आधार पर की जाती हैं जो लक्षण एक एलौपेथिक उपचार के बाद सही रूप में प्रदर्शित नही होते हैं।

लेकिन वर्तमान में आयुर्वेद पर भी बहुत रिसर्च हुई है जिसके फलस्वरूप आज हम मार्डन रिर्पाट्स व जांचो के आधार पर कैंसर जैसे जटिल रोगों की सफल चिकित्सा कर रहें हैं। विभिन्न प्रकार के कैंसर में औषधियों की रिसर्च व रोगों के लक्षणों के आधार पर नियत दिशा–निर्देश (फिक्स गाइडलाइन) वाली चिकित्सा विकसित कर ली हैं जो सफल रही हैं।

आयुर्वेद की 3 जरूरी बातें

आयुर्वेद के अनुसार कैंसर से बचना है तो...

(1) दिनचर्या ठीक करें : सुबह सुर्योदय से पहले जगना, फ्रेश होना, ब्रेक फास्ट, लंच और डिनर समय पर लेना।

(2) ऋतुचर्या पर ध्यान : शरीर के लिए सभी 6 ऋतु जरूरी हैं। चाहे वह सर्दी हो गर्मी हो या फीर कोई और। ठंड से बचने के लिए हीटर चलाते हैं। हीटर के करीब लंबे समय तक रहने से शरीर में खून की कमी होती है। इसकी जगह पुरे घर को गर्म करना बेहतर है। इसमें एसी की मदद ले सकतें हैं। जब कमरे का तापमान 23 डिग्री से कम होता है, यह सेहत के लिए हानिकारक है। मौसमी फल और सब्जियां ही खाना सबसे बेहतरीन उपाय है।

(3) सदव्रत का पालन : पॉजिटिव थिकिंग जरूरी है। चाहे वह अपने बारे में हों या फिर दूसरों के बारे में।

प्राकृतिक चिकित्सा से कैंसर चिकित्सा

किमों व रेडीएशन थेरेपी एवं रेडीएशन के दुषप्रभावों का नुकसान प्राकृतिक चिकित्सा नियमों का पालन करके बहुत अधिक एवं त्वरीत रूप से कम किया जा सकता हैं। जैसे उल्टी दस्त, छाले, थकान जोड़ो में दर्द, अनिद्रा आदि में।

आहार परिवर्तन करके – कैंसर में प्राकृतिक चिकित्सा सिद्धान्त में टॉकसिक लैस और सुपाच्य एवं उर्जावान आहार का सेवन करके कैंसर को हराया जा सकता है, जैसे सब्जि की बजाए सूप, ज्यूस की जगह फाइबर युक्त फलों का सेवन, आटे की बजाए दलिया चाय में अदरक, दूध में हल्दी।

दिनचर्या – प्रातःकाल 4:30 बजे उठना प्राणायाम और ध्यान करना मॉर्निंग वॉक प्रातःकाल का भोजन जठराग्नी विज्ञान के सिद्धान्त अनुसार 8:00 बजे प्रातः व 5:00 बजे सांयकाल भोजन करके एवं सांयकाल 8:00 बजे तक सयन करने से कैंसर जल्दी ठीक होता हैं।

योग द्वारा– कई प्रकार के कैंसर में योग बहुत लाभदायक है। इससे मन की मजबुती (आत्म विश्वास) रक्त का सही संचार और साईड ईफेक्ट से जल्द लाभ शामिल हैं।

एनिमा– शरीर में जमा मल और जहरीले तत्वों को शरीर से बाहर निकलने का कार्य अच्छे से होता है।

उल्टी और दस्त – इन को वैज्ञानिक तरीके से करने पर बहुत लाभ होता है, क्योंकि विष तत्वो से रक्त और मांस को सिग्र और सरल तरीके से कम–कम करते मुक्त भी किया जा सकता है।

मिट्टी स्नान एवं लेपन:– इस विधि से चर्म कैंसर एवं रक्त कैंसर में बहुत अच्छे परीणाम प्राप्त हुए है।

कुंजल, जलनेती, उपवास जैसी और कई विधाऐं है, जो कैंसर को हरा सकती है।

प्राकृतिक चिकित्सा चूंकि आयुर्वेद का ही हिस्सा है। अतः यह विधियां नुकसान रहित हैं।

कैंसर चिकित्सा में योग व व्यायाम का महत्व

रोगी की शारीरिक अवस्था, मनोदशा तथा रोग की स्थिति को ध्यान में रखते हुए अत्यन्त हल्के सूक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम एवं ध्यान का अभ्यास करने की सलाह दी जाती हैं। प्रातःकाल प्रकृति की गोद में बैठकर प्रकृति को निहारना, हल्के व्यायाम, श्वांसो का सूक्ष्म अवलोकन, श्वास–प्रश्वास की विभिन्न क्रियाओं का अभ्यास, मन मस्तिष्क को ऊर्जा से भर देता है। सम्पूर्ण शरीर में प्राणवायु का संचार निर्बाध रूप से होने लगता है। फलस्वरूप रोगी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक स्तरों पर अपनें आप को सशक्त अनुभव करने लगता है। परिणाम यह होता हैं कि चिकित्सा द्वारा दी गई दवाइयाँ एवं उपचार रोगी के लिए जल्दी ग्राह्य लगती हैं एवं कैंसर रोग से मुक्ति पाने में काफी मदद मिलती है।

नेशनल कैंसर इन्स्टीट्यूट के प्रमुख डॉ॰ एण्ड्रयूवान एसिनबाक का कहना है कि लोग इसलिए नही मरते की उन्हें कैंसर है बल्कि इसलिए मरते हैं कि उनकी बीमारी को हम उस बिन्दु पर नहीं पकड़ पाते जहाँ हम कुछ कर सकते थे। अतः इस पर विजय पाने का एक कारगर तरीका यह भी है कि इसका प्रारम्भिक अवस्था में निदान हो जाना चाहिए। अमेरिकन कैंसर सोसाइटी के मुताबिक कैंसर का फैलाव ही बीमारी से होने वाली 90 प्रतिशत मौतों का जिम्मेदार है। कैंसर की कोशिकायें पहले पूरे शरीर का भ्रमण करती हैं और हड्डी में पहुंच जाती हैं, फिर वे वहाँ जम जाती हैं। अतः समय–समय पर जाँच एवं सजगता से कैंसर रोग से बचने में मदद मिल सकती है।

कैंसर पीड़ित लोगों में मध्यम तथा गरीब वर्ग के लगभग 72 प्रतिशत से अधिक लोग चिकित्सालयों में रोग के बहुत बढ़ने के बाद में आते हैं। कैंसर की गंभीर अवस्था में इलाज बेहद खर्चिला होता हैं तथा लाभ की संभावनायें अत्यन्त सीमित रहती हैं।

ऐलोपैथी चिकित्सा और कैंसर

रेडियोथेरापी :– रेडियेशन का उपयोग कैंसर के ईलाज में सहायक हो सकता है और इसे ही रेडियोथेरेपी कहते हैं। एक बड़ी तादाद के कैंसर के मरीजों को रेडियोथेरापी दी जाती है ताकि ऑपरेशन के बाद में अगर कुछ कैंसर के कोषाणु रह गये हों तो उन्हें समाप्त किया जा सके।

सब तरह के कैंसर के ईलाज में रेडियोथेरापी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें रेडियेशन द्वारा केवल कैंसर के कोषाणुओं को नष्ट किया जा सकता हैं। रेडियेशन उत्पन्न होते हैं प्राकृतिक मूलस्थान से जैसे कि कोबाल्ट या आइरिडिम अथवा कृत्रिम रूप से एक्सरे को उत्पन्न किया जाता है जैसे कि लिनियर एक्सीलेटर द्वारा।

रेडियेशन की कितनी मात्रा का उपयोग किया जाए, यह इस पर निर्भर करता है कि ट्यूमर के आसपास जो अंग हैं वे रेडियेशन को कितना सह सकते हैं।

ट्यूमर को अगर कम मात्रा में दिए गए रेडियेशन द्वारा एकदम खत्म किया जा सकता है तो उस ट्यूमर को रेडियोथेरापी सुग्राही कहा जाता है, जैसे कि हाजकिन की बीमारी, लिम्फोमा, सेमिनोमा एवं जिसजरमीनोमा। रेडियोथेरापी का एक लाभ है अंग की रक्षा या बचाव जैसा कि सिर, गले, मलद्वार एवं अंगों के सारकोमा में देखा जाता हैं। रेडियेशन थेरेपी लसिका ग्रंथि, कंठ, जीभ, गाल, होंठ, चमड़ी और गर्भाशय के कैंसर की चिकित्सा में एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा लेती हैं। इन कैंसर से पीड़ित एक बड़े प्रतिशत मरीजों में यह तकनीक बीमारी को एकदम खत्म कर देती है और इन अंगों की क्रियाओं को भी सामान्य रखती हैं।

ग्रासनली और मलद्वार के कैंसर या हाइपोफैरिंक्स और मैक्सिला के फैले हुए कैंसर में रेडियोथेरेपी ऑपरेशन के लिए नाकाबिल ट्यूमर को छोटा कर ऑपरेशन के काबिल बना देती हैं। रेडियोथेरेपी को आमतौर पर ऑपरेशन के बाद में उपयोग में लाया जाता है ताकि ऑपरेशन के बाद अगर कुछ कोशिकाएं जो कि आंखों से दिखाई नहीं देती हैं, परंतु वहां बची रह जाती हैं उनको समाप्त किया जा सके। वर्तमान युग में उपलब्ध अच्छी मशीन एवं

तकनीकों के कारण रेडियेशन की जटिलताएं बहुत कम होती हैं और जो होती हैं, उन पर आसानी से काबू पाया जा सकता है। रेडियोथेरेपी का उपयोग उन ट्यूमर में भी किया जाता है जो ऑपरेशन के काबिल नहीं हैं या जहां पर ऑपरेशन के समय पहुंचना संभव नहीं है। जिन मेटास्टेसिस को ऑपरेशन द्वारा नहीं निकाला जा सकता है उनका भी रेडियोथेरेपी द्वारा ईलाज हो सकता है।

किसी ट्यूमर को कितनी मात्रा में रेडिएशन दिया जाए, इस बात पर निर्भर है कि ट्यूमर के आसपास के स्वस्थ टिशू कितने रेडियेशन को सहन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए जब पेट में स्थित लसिका ग्रंथियों को रेडियेशन दिया जाता है तो आसपास के अंग जैसे कि जिगर, आंतें, गुर्दे आदि भी रेडियेशन पाते है। अतः रेडियेशन की मात्रा को सीमित मात्रा में दिया जाता है। स्वस्थ अंगों में रेडियोथेरेपी के कुप्रभाव से जिगर, फेफड़े, आंत, गुर्दे, मस्तिष्क, दिल, हड्डी की मैरो को नुकसान पहुंचता है और इस कारण मरीज की मृत्यु भी हो सकती है या रेडियोथेरेपी को बंद करना पड़ता है। पेल्विस को रेडियोथेरेपी देने के कारण प्रजनन शक्ति भी समाप्त हो सकती है– पुरूषों और स्त्रियों दोनों की। रेडियोथेरेपी न केवल ट्यूमर के आसपास के स्वस्थ टिशू को प्रभावित करती है, बल्कि रोगी की रक्त कोशिकाओं को नष्ट करके स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचा सकती हैं, खांस करके अगर रेडियोथेरेपी को एक बड़े क्षेत्र में दिया जाए। इसलिए, रेडियोथेरेपी देने के समय रोगी के पूरे स्वास्थ्य पर ध्यान रखना आवश्यक होता हैं। रेडियोथेरेपी मरीज की सहनशीलता को भी कम कर सकती है और इससे मरीज जल्दी ही इंफेक्शन को पकड़कर पीड़ित हो सकता हैं।

कैंसर का एकदम ठीक होना इस बात पर निर्भर करता है कि कैंसर को काबू करने के लिए रेडियोथेरेपी की जिस मात्रा की आवश्यकता होती है वह ट्यूमर के आसपास के स्वस्थ टिशू सहन कर सकते हैं या नहीं।

रेडियोथेरेपी के समय जो समस्याएं देखी जाती हैं, उनके प्रकार और गंभीरता कई मसलों पर निर्भर होती हैं, जैसे कितने क्षेत्र को रेडियोथेरेपी दी जा रही है, पूर्ण मात्रा कितनी है एवं रेडियोथेरेपी को कितने हिस्सों में बांटकर दिया जा रहा हैं। अधिक लाभ लेने का एक तरीका है कि रेडियेशन की पूर्ण मात्रा को कई हिस्सों में विभाजित कर दिया जाए। आजकल उपलब्ध रेडियोथेरेपी की अच्छी प्रणाली से न केवल सफलता की आशा की जाती है, बल्कि समस्याएं भी बहुत कम हो जाती हैं। आजकल की मशीनों द्वारा यह संभव हो गया है कि रेडियोथेरेपी की किरणों को न केवल ठीक उसी क्षेत्र में दिया जाए जहां उनकी आवश्यकता है, वरन् आसपास के स्वस्थ हिस्सों को रेडियेशन से बचाया जा सके। इस काम में आजकल कंप्यूटर की मदद ली जाती हैं।

रेडिएशन थेरेपी के उपयोग

रेडियेशन थेरेपी का उपयोग किया जाता है :–

कई कैंसरों के पूर्ण ईलाज के लिए। शल्य चिकित्सा के बदले इसका इस्तेमाल करने से रोगियों में उतनी ही सफलता मिलती है जितनी कि ऑपरेशन करने से। कई किस्म के कैंसर के ईलाज में या उन मरीजों में जहां ऑपरेशन करना संभव नहीं है रेडियोथेरेपी एकमात्र ऐसी प्रणाली है जिसका उपयोग किया जा सकता हैं। ऑपरेशन करने के बाद में इसका उपयोग किया जाता है। ऑपरेशन आंखों से पहचाने जाने वाले ट्यूमर को पुरी तरह निकालने में समर्थ है, परंतु ट्यूमर की कोशिकाएं जो आसपास के टिशू में फैल जाती हैं और जिनकी पहचान केवल माइक्रोस्कोप द्वारा हो सकती है, ऐसी कोशिकाओं को निकालने में ऑपरेशन असमर्थ होता है। इन कोशिकाओं को रेडियेशन थेरेपी द्वारा नष्ट किया जा सकता हैं।

रेडियेशन थेरेपी पा रहे रोगी को मनोवैज्ञानिक सहायता एवं उससे उत्पन्न हो रही शारिरीक असुविधाओं की चिकित्सा करना आवश्यक होता हैं। ये असुविधाएं न केवल रेडियोथेरेपी के कारण होती है, बल्कि कैंसर की मूल बीमारी के कारण भी हो सकती हैं। रेडियोथेरेपी पा रहे मरीज के पोषण एवं हाइड्रेशन की तरफ विशेष ध्यान देना चाहिए। इन रोगियों में जी मिचलाना,

उल्टी होना, भूख न लगना आदि हो सकता है, अतः यह आवश्यक होता है कि उसे पौष्टिक आहार दिया जाए जो कि नर्म एवं आसानी से हजम होने वाला हो उसमें कैलोरी अधिक हो। एक बार में बहुत अधिक न देकर भोजन को कम मात्रा में, परंतु बार–बार देना चाहिए।

लोगों में एक गलत धारणा है कि रेडियेशन थेरेपी पा रहे रोगी या उसकी व्यक्तिगत चीजें ईलाज के कारण रेडियेशन से पूर्ण हो जाती हैं, परंतु यह गलत है।

किमोथेरेपी

रासायनिक पदार्थों एवं दवाइयों सें किए गए ईलाज को किमोथेरेपी कहते हैं, और इसका उपयोग या तो अकेले किया जाता है या फिर ऑपरेशन या रेडियेशन के साथ मिलाकर।
एक लंबे समय तक उस पर काबू रखती है, जैसे कि ल्यूकिमिया, हाजकिन की बीमारी, बच्चों के कैंसर आदि। ग्रासनली का कैंसर, स्तन कैंसर, छोटी कोशिका वाला फेफड़े का कैंसर आदि कुछ बीमारियां है जिन्हें किमोथेरेपी द्वारा एक लंबे समय तक काबू में रखा जा सकता है।
किमोथेरेपी की सब दवाईयां न केवल कैंसर की कोशिकाओं पर असर करती हैं, बल्कि सामान्य स्वस्थ कोशिकाओं पर भी इनका असर होता है। और इस कारण समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

कैंसर की प्रगति हर समय एक जैसी नहीं होती है, इसिलिए किमोथेरेपी की कोई भी दवा शत–प्रतिशत लाभदायक नहीं होती है चाहे वह एक किस्म के कैंसर के लिए ही क्यों न हो।

कैंसर और इन्टीग्रेटेड चिकित्सा

सर्वप्रथम हम समझें की इन्टीग्रेटेड यानी एकीकृत प्रणाली से अगर कार्य किया जाए तो उसमें कई विचारकों संस्थाओं और प्रणालीयो का ज्ञान, कार्यविधी और सफलता सूत्र जब एक साथ आते हैं, तब परिणाम बहुत सुखद और असर कारक होते हैं।

कैंसर चिकित्सा में इन्टीग्रेटेड प्रोग्राम के बारे में अगर भारत सरकार के स्तर पर बात करें तो जब भारत सरकार ने आयुष मंत्रालय का गठन किया तब इसमें आयुर्वेद, नेचुरोपेथी, होम्योपेथी, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, सिद्ध चिकित्सा पद्धति युनानी चिकित्सा पद्धति पूर्वोतर लोक चिकित्सा विभाग जैसी कई चिकित्सा पद्धतियों के साथ–साथ ऐलोपेथी यानी जिसे हम सामान्य भाषा में मेडीकल साईन्स या भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के अन्तर्गत आने वाली सुविधांए जैसे एम्स, ICMR सभी ऐलोपेथी के छोटे और बड़े चिकित्सालय प्राइवेट मेडीकल यूनर्वसीटी और रिसर्च संस्थाऐं आती हैं।

अब मैं आप लोगो को मैरे विचारों में यह कार्यक्रम कैसे बड़े पेमाने पर किया जा सकता हैं, वह कार्य योजना बताना चाहता हूं मुझे विश्वास हैं की भारत सरकार और सभी राज्य सरकारें मेरी इस इन्टीग्रेटेड कैंसर चिकित्सा एवं कैंसर उन्मूलन अभियान को धरातल पर उतारकर सम्पूर्ण विश्व को हम कैंसर मूक्त कर सकें और जो वर्तमान में रोगी है, उनको उत्तम परिणाम दे सकें। मैरी इस योजना में मैं निम्न मंत्रालयो, संस्थाओं और कैंसर चिकित्सा की निम्न शाखाओं को सम्मिलित करना चाहता हूं :– 1. आयुष मंत्रालय, 2. स्वतंत्ररूप से आयुष मंत्रालय में सम्मिलित सभी चिकित्सा पद्धतियों के विभागों के अधीन सभी विश्व विद्यालय और चिकित्सालय, 3. भारत सरकार के अधीन आने वाले ऐलोपेथी चिकित्सा के मेडिकल विश्व विद्यालय चिकित्सालय रिसर्च सेन्टर, 4. वो सभी संस्थाऐं जो कैंसर के लिए अपना कार्य सम्पूर्ण राष्ट्र स्तर पर कर रहे हैं जैसे, टाटा कैंसर रिसर्च, भगवान महावीर कैंसर ट्रस्ट, कृषि मंत्रालय, आबकारी मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय, वन विभाग भारत सरकार और राज्य

सरकारों के अधीन आने वाले उपर लिखें सभी विभागों के सम्मान कार्यभार वाले विभाग आने चाहिऐ।

अब बात करते हैं इस का मॉडल कैसा होना चाहिए– 1. आयुष विभाग के अन्तर्गत आने वाली सभी संस्थाओं द्वारा कैंसर चिकित्सा के क्षैत्र में किये गये अभिनव प्रयोगो सुत्रो और सहिताओं को 4–5 दिवशीय कार्य शालाओं में बीना एक दुसरी पेथी पर आरोप प्रत्यारोप लगाऐं पूर्ण वैज्ञानिक आधार पर एक दुसरे से पूर्ण इमानदारी के साथ शेयर करें, लिखीत दस्तावेज का एक दुसरे से आदान प्रदान करें। 2. आयुष विभाग द्वारा पूर्ण निचोड़ के साथ चयनित वैद्यो और विशेषज्ञों को, ऐलोपेथी के विशेषज्ञो के साथ 4–4 दिन की कार्यशालाऐं आयोजित करनी चाहिए। 3. इस कार्यशालाओं में एक सम्पूर्णता लिए हुए दस्तावेज जारी करना चाहिए उसके बाद उपर लिखें सभी मंत्रालयों की हाइपर कमेटी के साथ कैंसर रोग विशेषज्ञों, रिसर्चरो अधिकारीयों की कार्यशाला कृषि मंत्रालय, वन विभाग, वित्त विभाग स्वास्थ्य विभाग, उद्योग विभाग जैसे सभी विभागों के उच्च अधिकार प्राप्त अधिकारीयों मंत्रीयों– मंत्रालय कमेटीयों के मेम्बरो, किसान प्रतिनिधीयों, वनवासीयों औषधी ट्रेंडरो व्यापारियों औषधी निर्माण इकाइयों के प्रतिनिधियों के साथ गहन चर्चा करके एक कार्य योजना का निर्माण किया जाए।

इसको एक उदाहरण से समझाना चाहता हूं, जैसे आयुर्वेद के वैद्य जी द्वारा 1000 रोगी, होम्योपेथी के 1000 रोगी, सिद्धा के 1000 रोगी, योगा के 1000 रोगीयों को दी गई चिकित्सा परहेज, औषधी और सफलता का प्रतिशत और रोगीयों के इन्टरव्यू। मैं चिकित्सा क्षेत्र का सबसे प्रमाणित दस्तावेज रोगी का इन्टरव्यू मानता हूं, हां इसके साथ रोगी के इलाज के दस्तावेज उसके मोबाइल नं. सहीत प्रस्तुत करें और अलग–अलग प्रकार के कैंसर पर विभाग विशेष और पेथी विशेष और संस्था विशेष के रोगियों पर चर्चा करनी चाहिए।

भारत सरकार ने 09.11.2014 को आयूष मंत्रालय को एक स्वतंत्र मंत्रालय का दर्जा दिया और कुछ वर्षो बाद सोवा रिग्पा

चिकित्सा पद्धति जो की तिब्बतीयन चिकित्सा पद्धति का एक हिस्सा हैं, इसको भी आयूष मंत्रालय में शामिल किया गया।

यह तो बताया मैंने आपको भारत सरकार के उत्तम प्रयास का एक पहलु परन्तु इसका दुसरा पहलु यह हैं की सरकार द्वारा स्वास्थ्य बजट को 90% ओर आयूष मंत्रालय को मात्र 10% बजट ही अलोट किया जाता हैं। आयूष मुत्रालय के सकारात्मक प्रयासों से कैंसर जैसे विषय पर सभी पेथी के कैंसर विशेषज्ञों को एक मंच पर लाकर उन सब पेथीयों में कैंसर पर क्या–क्या नवाचार और रिसर्च कि गई हैं, क्या आंकड़े हैं, क्या अनुभव है, इन सब पर विस्तार से चर्चा की जाए और आयूष और ऐलोपेथी की सभी कॉलेजों और संस्थाओं के PG स्टुडेन्ट, प्रोफेसर, वैद्यो और डॉक्टरों के विषय विशेष पर चर्चा हो और उसमें से जो सार निकले उसे सभी चिकित्सा पद्धतियां एक छत के नीचे कैंसर रोगियों पर उन अनुभवों का प्रयोग करें। ताकि कैंसर रोगियों को न्यूनतम् खर्च में अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

अब मैं बात करता हूं, मैरे अनुभव की मुझे भारत सरकार के सहयोग या युं कहुं आयूष मंत्रालय के सहयोग से इस प्रकार की 10–15 सेमिनार में भाग लेने का मौका मिला जिसमें 8 सेमिनार में तो आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में वानस्पतिक चिकित्सा पद्धति के कैंसर रोग विशेषज्ञ के रूप में भाग लेने का सोभाग्य प्राप्त हुआ और मुझे बहुत सीखने को मिला और मैरे अनुभव को साझा करने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

जिनसे भी नारों में प्रशिक्षण के लिए भाग लेने का अनुभव मिला वो भी बड़ी अनुठी कार्यशालाऐं थी। मैं आयूष मंत्रालय का हमेंशा आभारी रहने के साथ मंत्रालय के सम्पर्क में रहता हूं। हाल ही पिछले दिनों सोवा–रिग्पा चिकित्सा पद्धति में कैंसर चिकित्सा पद्धति को समझने और सीखने के लिए भूटान, नेपाल और महामहीम दलाई लामा द्वारा संचालित सोवा–रिग्पा चिकित्सा पद्धति पर आधारित चिकित्सा पद्धति के धर्मशाला में महन्सी खांग विश्व विद्यालय में 2 दिवसीय ज्ञान प्राप्ती का अवसर प्राप्त हुआ और वहां के महासचिव महोदय से नवग्रह आश्रम द्वारा कैंसर

चिकित्सा में किए जा रहे निरन्तर सोधकार्य के आधार पर दोनों संस्थाओं को एक दुसरे के यहां विशेषज्ञों और प्रशिक्षणार्थियां का ज्ञान आदान प्रदान हेतु यात्राऐं किए जाने पर पूर्ण सहमती बनी यह एक छोटा सा उदाहरण मैंने आपको बताया, अतः आप इन्टीग्रेटेड कैंसर कार्य योजना को प्राथमिक रूप से समझ गये होंगे।

अब जैसे मुंह के कैंसर का कारण तम्बाकू हैं तो कृषि विभाग व वित्त मंत्रालय मिलकर तम्बाकू की खेती को प्रतिबंधित करें। शराब का निर्माण बन्द करें, वन विभाग औषधिय पौधों का रोपण व संरक्षण करें। किसान औषधिय फसलों का विस्तार करें। दवा निर्माता आधुनिक और पुरातन पद्धतियों को पूर्ण वैज्ञानिक रूप से कसोटी पर परखकर न्यूनतम मूल्य और अधिकतम परिणाम के सिद्धान्त पर कार्य करें। प्रत्येक कार्यशाला में पिछली कार्यशाला के बिन्दूओं पर विस्तार से चर्चा करें और सभी विभाग एक दुसरे को बिना दोषी ठहराने की मानसिकता को छोड़कर सहयोग विश्वास और समर्पण की भावना के तहत कैंसर रोगियों के हित में कार्य करें। कैंसर को हराने के लिए कई विभागों, कई ओन्कोलॉजिस्टों, कई वैद्यो और कई संस्थाओं को अपना अभिमान त्यागकर ज्ञान स्वीकार करना चाहीये।

मैरा इन्टीग्रेटेड कैंसर चिकित्सा प्लान क्या हैं

इस पुरे प्लान को समझने के लिए में एक उदाहरण से समझाना चाहता हूं।

सर्वप्रथम अगर कोई रोगी किसी कैंसर चिकित्सा केन्द्र या सामान्य चिकित्सालय पर आता हैं, और वह उसको होने वाली समस्या को डॉक्टर को बताता हैं। डॉक्टर को उस रोगी से पुरी बात करके, उसे पुरा समय देते हुए उसके परिवार हिस्टरी, उसके खान–पान के बारे में उसकी आदतों के बारे में उसके द्वारा किए जाने वाले व्यसन संबंधी सभी जानकारी लेनी चाहिए, क्योंकि कैंसर रोग में मेरा अनुभव यह कहता हैं की यहीं पर सबसे बड़ी गलती होने की संभावना रहती हैं, पहली सम्भावना रहती हैं, अगर बिना बायोप्सी पता चल जाऐं तो उस रोगी को कई असहनीय कष्टों से बचाया जा सकता हैं, क्योंकि गले फेफड़े और किडनी व आहार नली के

कैंसर में बायोप्सी लेने के बाद कैंसर अचानक बहुत तेजी से बढ़ता हैं, यानी अग्रेसीव हो जाता हैं। इसका पता खून की जाँचो जैसे मार्कर टेस्ट, CBC सामान्य सोनोग्राफी, या अधिक से अधिक पेट सीटी या सीटी स्केन से पता लगाया जा सकता हैं। आयुर्वेद कि ग्रन्थो में और नवग्रह आश्रम के डॉक्टर और वैद्यो के अनुभव के आधार पर मैं यह बात दावे से कहने की स्थिति में हूं की 90% कैंसर रोगी को बिना किसी जाँच के मात्र उससे वार्ता करके व देखकर कैंसर का पता लगाया जा सकता हैं। डॉक्टर को उस रोगी को कैंसर की प्रकृति के अनुसार चिकित्सा हेतु रेफर करना चाहिए, जैसे अगर कोई रोगी स्किन कैंसर का रोगी हैं या ब्लड कैंसर का रोगी हैं तो उसे आयुर्वेद से बहुत जल्दी और नाम मात्र के खर्च से ही उस कैंसर से मुक्त किया जा सकता हैं। मेरा कहने का आशय यह हैं, की कीमों या सर्जरी डॉक्टर के पास आखरी ऑप्सन होना ही, कैंसर चिकित्सा का प्रथम सिधान्त होना परम आवश्यक हैं। वर्तमान चिकित्सा पेटर्न में एक ही चिकित्सालय में एक ही डॉक्टर द्वारा कैंसर जाँचो का फैसला लेना और उसी चिकित्सालय के संसाधनो के अधिकतम दोहन की प्रकृति के चलते यानी अधिकतम ऐफर्ड उसी एक स्थान पर देने से रोगी को आर्थिक व शारिरीक नुकसान होने तय हैं। अगर कुछ डॉक्टर व वैद्य या अन्य पेथी के कुछ विशेषज्ञ एक ही स्थान या केम्पस में बैठते हैं, और निरन्तर रोगियों को देखने का कार्य कई वर्षो तक करते हैं। तो अनुभव के आधार पर वह तुरन्त यह बताने की स्थिती में होते हैं, की रोगी को अमूख प्रकार का कैंसर हैं और इस कैंसर का ईलाज इस पेथी और इस केन्द्र पर अधिक उत्तम होगा। इस प्रकार के सेन्टर देश के प्रत्येक जिले में कम से कम एक केन्द्र तो आवश्यक रूप से होना ही चाहिए और बड़े महानगरों और राज्यो की राजधानियों और डिवीजन हेडक्वाटर पर ये केन्द्र 3 या 4 भी हो सकते हैं। कैंसर की जाँचे करने के लिए सम्पूर्ण सेटप एक ही छत के निचे होना बहुत लाभदायक होता हैं, जैसे सर्वप्रथम रक्त की जाँचे फिर सोनोग्राफी फिर पेट CT या MRI और भी जैसे मेमोग्राफी आदि जाँचे ताकि रोगी को तुरन्त और पूर्ण विश्वसनीय चिकित्सा उपलब्ध हो सकें। इन रोगियों की चिकित्सा के अनुभव के आधार पर सेमीनार का आयोजन वर्ष में 2

बार आवश्यक रूप से होना चाहिए नीचे के स्तर से छोटे राज्य स्तर के सेमीनारों से राष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सक, मंत्री, विभागो के सचिव स्तर के अधिकारी किसान प्रतिनिधी, वन विभाग, आबकारी विभाग, वित्त विभाग सभी लोग एक छत के निचे 4–5 दिन की लगातार चर्चा करके प्रत्येक पहलु पर मंथन करें और एक प्रोटोकॉल तय करें जैसे सर्वाधिक मुंह का कैंसर तम्बाकू से होता हैं। इसमें कोई संसय नहीं हैं, अतः सम्पूर्ण देश में तम्बाकू की खेती पर रोक लगे और किसानों को जो कि तम्बाकू की खेती करते हैं। कुछ वर्षो तक सबसीडी देकर उन किसानों को अन्य फसलों जैसे बाजरा, कपास, मूंगफली पर लाया जाए। शराब के अन्धाधुन्ध निर्माण और बिक्री के स्थान पर उस कच्चे माल से इथेनोल बनाकर देश की डिजल, पेट्रॉल पर हो रहे विदेशी मुद्रा खर्च की बचत की जाऐं।

कैंसर रोगियों का एक नेशनल डाटा तैयार किया जाऐ उसे एक सोफ्टवेयर से जोड़कर सम्पूर्ण देश में कई पर भी चिकित्सा प्राप्त करने की सुविधा दि जाऐं।

कैंसर पर मिले नोबल पुरस्कार

दुनिया में अगर किसी भी पुरस्कार की बात करें तो, सबसे सम्मान जन्नक नाम आता हैं, "नोबल पुरस्कार" यह कई क्षैत्रों में दिया जाता हैं। मैं बात करना हूं चिकित्सा के क्षैत्र में कैंसर बीमारी पर सौधकर्ता के लिए मिले अब तक के नोबल पुरस्कारों पर इन पुरस्कारों की वजह से अब तक लाखों कैंसर रोगियों की जान बचाई जा रही हैं। सबसे बहत्वपूर्ण बात यह हैं कि नवग्रह आश्रम की चिकित्सा पद्धति इन्ही सिधान्तों पर आधारित हैं।

आपको कोतुहल हो सकता हैं कि जिन सिधान्तों पर ये नोबल पुरस्कार दिया गया उनमें से दो तो 2018 व 2019 में घोषीत हुए पर आश्रम इन सिधान्तो का पालन 2014 से कर रहा हैं। इसका बहुत बड़ा मूल कारण आयुर्वेद में अर्बूद करकरा का प्राकृतिक नियमों के अनुसार चिकित्सा होती हैं। प्राकृतिक तरीके से वानस्पतिक और आहार सिधान्त चिकित्सा में इनका पहले से ही वर्णन भी हैं। भगवान धनवन्तरी की कृपा से इन नियमों का अध्यन एवं रिसर्च करने का सोभाग्य मुझे मिला।

1931 में नोबल कमेटी ने डॉ॰ वारबर्ग को फिजियोलोजी मेडीशियन में ऑटो हेनरिक वारबर्ग जिनका पुरा नाम हैं श्वसन एंजाईम की प्रकृति और क्रिया के तरिके की खोज पर दिया। इस खोज को अगर मैं सामान्य तरिके से समझाऊ तो अगर 45 घण्टे तक 35% ऑक्सीजन अगर कम मिले तो सामान्य कोशिकाऐं अपना DNA बदलकर कैंसर कोशिकाओं में बदल जाती हैं। इसके पिछे बड़ा कारण हमारी कोशिकाओं में मोजूद साईट्रीक एसीड चक्र एवं अधिक मात्रा में मौजूद शर्करा का पाया जाना हैं। जब O_2 ऑक्सीजन कम मात्रा में मिलती हैं तो कोशिका जीवित रहने के संघर्ष में इस शर्करा और अन्य ऑक्सीजन विरोधी (कार्बोहाड्रेट व एसीड) तत्वों को गैस में परिवर्तित करने के दोरान अपना DNA बदल लेती हैं और नेगेटीव सेल कैंसर ट्यूमर में बदल जाती हैं।

इसी सिद्धान्त को विश्व के वैज्ञानिकों ने वारबर्ग सिद्धान्त के रूप में मान्यता दी हैं और इस सिद्धान्त पर कई वैज्ञानिकों ने कैंसर

नोबल पुरस्कार

रोगियों का जीवन बचाने के लिए ओमेगा थ्री और ऑक्सीजन आधारित भोजन के सिद्धान्त के अन्तर्गत अलसी बीज, अलसी तेल, देशी गाय के दूध का बना पनीर और बीना अधिक मिर्च मसाले से बनी साधारण भाप या कच्ची घाणी के तेल में हल्की फ्राई मछली से कैंसर आसानी से ठीक किया जा सकता हैं।

अधिक जानकारी आप इस चार्ट से समझ सकते हैं।

नोबल पुरस्कार

2018 का नोबल प्राईज डॉ॰ जेम्स पी एलीसन जो कि अमेरीका मूल के हैं और डॉ॰ तासुकू होन्जो जापान से हैं। इन दोनों वैज्ञानिकों ने कैंसर कोशिकाओं के स्वतः ताकतवर होने और रोग प्रतिरोधक कोशिकाओं कि कार्य क्षमता कम होने के बीच संबंध तलाश किया कैंसर रोगियों की कोशिकाओं के विश्लेषण से पता चला की कैंसर कोशिकाओं में मौजूद 2 प्रोटीन CTLA-4 और PD-1 की मौजुदगी इन कोशिकाओं को मृत्यु से अमयदान देती हैं। इन दो प्राटीनों को अगर रोगी अपनी खुराक से निकाल दे तो कैंसर स्वतः ठीक होने लगता हैं और पुनः कैंसर उत्पन्न होने की संभावना भी कम हो जाती हैं।

इस चार्ट से आप और विस्तार से समझ सकते हैं।

कैंसर चिकित्सा में एक बहुत आधारभूत खोज ऑक्सीजन कि उपस्थिति में कैंसर को मरना पड़ता हैं। ब्लड कैंसर लेक्यूमिया सहीत रक्त अल्पता वाले रोगियों के लिए अधिकतम ऑक्सीजन और न्यूनतम कैंसर के सिद्धान्त को खोजकर बहुत बड़ा सिद्धान्त प्रतिपादित किया हैं, डॉ॰ केलिन, डॉ॰ सरपोटर जे. रैटक्लिफ और ग्रेग एस. सेमेजा को संयुक्त रूप से दिया गया।

वर्ष 2019 में दिये गये इस नोबल ने कैंसर रोगियों को बकरी का दूध, गन्ने का ज्यूस, हरी सब्जियां, फलों के रस के साथ श्वांस लेने की वैज्ञानिक विधि बताकर यानी बहुत गहरी श्वांसे ली जाऐ और अधिकतम ऑक्सीजन ग्रहण की जाए तो कैंसर कोशिकाओं को मारना आसान हैं।

इस चार्ट से आप और विस्तार से समझ सकते हैं।

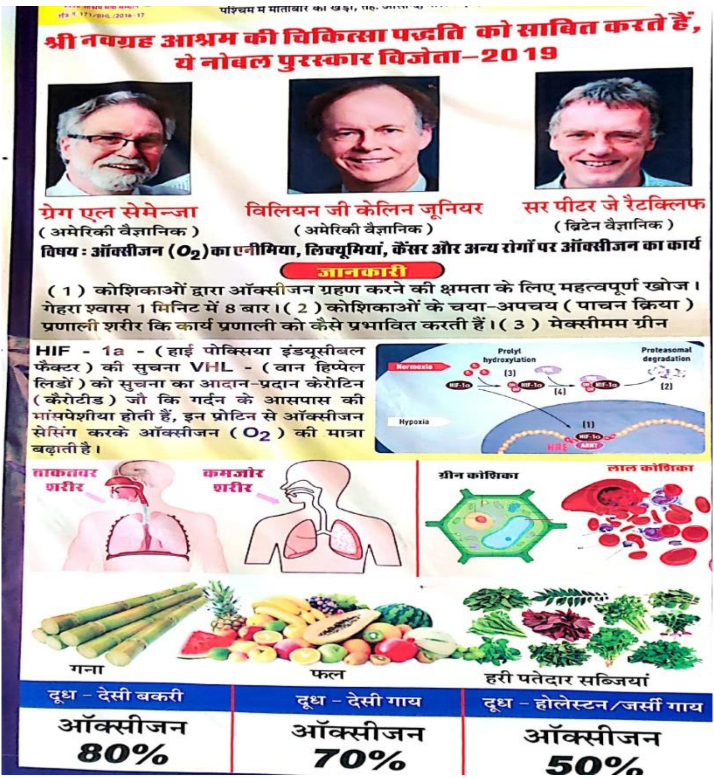

वर्ष 2022 के वैज्ञानिक पुरस्कारों की नोबल श्रृंखला में तीन वैज्ञानिकों को संयूक्त रूप से प्रदान किया गया हैं। डॉ॰ कैरोलिन बेट्रोजी डॉ॰ के बेरी सार्पलेस को दिया गया हैं। इन वैज्ञानिको ने क्लिक कैमेस्ट्री को डवलप किया यानी जिवीत कोशिकाओं की गतिविधि को लाईव देखा जा सकता हैं रिकॉर्ड किया जा सकता हैं और इन कैंसर कोशिकाओं के विभाजन को समझा जा सकता हैं। बायो आर्थोगोनल क्षैत्र में कि गई यह रिसर्च भविष्य में कैंसर रोग से निजात पाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा हैं। नेगेटीव, पोजिटीव कैंसर नॉन कैंसरस अलग–अलग ऊत्तकों की कैंसर कोशिकाओं का रक्त और संम्पर्क दोनों माध्यमों से दूसरे अंगो में जाने का तरीका भी इस खोज से देखा जा सकेगा।

2022 कैंसर (रसायन शास्त्र) पर नोबल प्राईज

1.कैरोलिन बेट्रोजी, 2. मोर्टन मेल्डल, 3. के बेरी शार्पलेश क्लिक केमेस्ट्री को डवलप करने के लिएः– जीवित कोशिकाओं के अंदर चल रही रासायनिक प्रक्रियांओ को बिना नुकसान पहुंचाए उनकी निगरानी करना मुमकिन कर दिखाया हैं।

इस तकनिक से प्रॉटीन टूडाईमेशनल जेल इलेक्ट्राफोरेसिस सिद्धान्त में खोज से प्रॉटीन ट्रान्सफर एवं कनवरजन को लाईव देखकर ओबजर्व किया जा सकेगा।

ट्राईजोल्स की मदद से DNA बदला जा सकता हैं, DNA मेपींग माईक्रो प्लास्टिक से होने वाले कैंसर से मुक्ति मिल सकती हैं। बायो पालिमर्स से एंटीऑक्सीडेन्ट्स एंजाइम्स का निर्माण कर कैंसर कम किया जा सकता हैं। बायो आर्थोगोनल पेट, केमिकल और प्लास्टिंक उत्पाद की गुणवत्ता से कैंसर के नये मरीजों की संख्या में कमी आएगी।

DNA = डी ऑक्सीराईना न्यूक्लिक एसिड

1 नेनो टेक्नोलॉजी का विकास

प्रतिरक्षा कोशिकाओं की कार्य क्षमता को ग्लाईकाईन की पहचान करके सुरक्षा तंत्र को बाधित करने वाले चक्र का पता चलने के

साथ–साथ छोटी से छोटी रसायनिक ईकाइ से चिकित्सा कार्य में अनुसंधान एवं चिकित्सा दोनों त्वरित हो पायेगी।

इस चार्ट से विस्तार से समझ सकते हैं:–

कैंसर की जननी तम्बाकू

कैंसर के प्रमुख कारणो में तम्बाकू एक बहुत बड़ा कारण है। अगर भारत कि बात करें तो वर्तमान में भारत तम्बाकू उपयोग करने वाला विश्व का दुसरे नम्बर का देश है। जो कि गौरव का विषय नहीं होकर चिन्ता का विषय हैं। मैं आपको इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल एंड पीडियाट्रिक ओन्कोलॉजी जनरल जो कि वोल्टर्स क्लूवर–मेडनो पब्लिकेशन की एक रिपॉर्ट से समझाना चाहता हुँ कि तम्बाकू किसी देश को कैसे बर्बादी के गहरे कुए में धकेल सकती है, वहां के नागरिको के जीवन को नर्क बना सकती है।

आप यह प्रश्न कर सकते हैं कि, अगर नागरिक चाहे तो तम्बाकू का सेवन नहीं करके, कैंसर और इससे होने वाली बिमारियों से बच सकते हैं परन्तु आप सभी जानते हैं कि मानव मन नकल करने का मुलभूत गुण रखता हैं यानी मनुष्य नकलची हैं तो वह देखा देखी बीड़ी, सिगरेट, चिलम, सिगार हुक्का, सुल्फा नाली और कई रूपों में इसका धुम्रपान करना देखा देखी और कमजोर मनोबल के चलते इसकी गिरफ्त में आ जाता है। ऐसा ही गुटखा, पान–मसाला, सुपारी, मावा खेनी, तम्बाकू का मंजन आदि करना सीख जाता हैं और अपने आप को मौत की रेलगाड़ी का यात्री बना लेता है।

इसकी आदत का एक दुसरा बड़ा कारण हैं, इसके विज्ञापन, क्योंकि इसकी लत लगती है किशोरावस्था में, इस 14 से 19 वर्ष कि उम्र में लड़के–लड़कियां अपने बुरे भले का इतना विचार नहीं कर पाते है और विज्ञापनो के मोह में फंस जाते हैं, आप कह सकते हैं, सरकार ने वैज्ञानिक चेतावनी के आदेश जारी कर रखे है, फिर भी केवल इस चेतावनी का इतना असर नहीं होता हैं और किशोर मन कि चंचलता के चलते बहुत बड़ा वर्ग इस नशे के दल–दल में फस कर अपने आपको एडीक्टेड (आदि) कर लेता हैं।

तिसरा बड़ा कारण इसकी सहजता से उपलब्धता है। आदमी औसत अगर 50 कदम चलता हैं तो उसे गुटखा, बीड़ी, सिगरेट जैसे कई तम्बाकू उत्पाद मिल जाते है और उस पर इन

किशोरों, वाहन चालको, मजदुरों, बेरोजगारो और खेतीहर किसानों और डेलीवर्जेज कार्य करने वाले किशोरों और किशोरियां इस तम्बाकू के बड़े ही सोफ्ट टारगेट होते हैं यानी आसानी से चुंगल में आ जाते है।

अब सवाल उठता है, इसका समाधान क्या है। इसका समाधान है सरकार द्वारा तम्बाकू कि खेती पर सख्त रूप से रोक लगाना, तम्बाकू उत्पादों के निर्माण और बिक्री पर रोक लगाना इसके आयात और निर्यात को सख्ती से प्रतिबंधीत करना इसके उपयोग कर्ता, निर्माता उत्पादक सभी के लिए गैर जमानती अपराध की श्रेणी में लाने के लिए सख्त कानून बनाने की आवश्यकता हैं।

आप कहेंगे क्या दुनिया में ऐसा कभी कहीं हुआ हैं जो आप भारत सरकार और राज्य सरकारों को सलाह दे रहे हो, जी हाँ, ऐसा भारत के पड़ोसी देश भूटान में ऐसा कानून हैं, वहाँ तम्बाकू उत्पादन, उपयोग, निर्माण कि तो छोड़ीये, वहाँ पर इसका विज्ञापन करना भी बहुत बड़ा गुनाह हैं, वहां इसका उल्लगंन करने पर 10 वर्ष के कठोर कारावास का प्रावधान हैं। जब मैं भूटान यात्रा पर गया तो मैने वहां के डॉक्टरो और कानून के लोगों से पुंछा तो पता चला की उस देश में इस कानून का उल्लगंन करने पर सर्व प्रथम केस ही उस देश के बहुत प्रभावशाली बोद्ध भिक्षू पर लगाया और आज वह बौद्ध भिक्षू जैल में है। उसके पास 40 ग्राम तम्बाकू मिली थी।

मैं एक बात साफ तौर से कहना चाहता हूँ, कि भारत सरकार और राज्य सरकारों को अपने आपको लोक कल्याणकारी सरकारें कहलाने कोई हक़ नही है। क्योंकि इसके कारण सम्पूर्ण देश में प्रति वर्ष एक करोड़ से अधिक लोग असमय अकाल मृत्यु को प्राप्त कर रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व में पुरूषों में होने वाले प्रमुख दो कैंसर फेफड़े और मुँह के कैंसर में से सर्वाधिक मुँह का कैंसर भारत में होता है, भारत में यह सर्वाधिक महाराष्ट्र राज्य के बीड़, जालना, उस्मानाबाद, लातुर और अहमदनगर जिलों में होता है।
भारत में महिलाओं में सर्वाधिक मुँह का कैंसर भी महाराष्ट्र के इन्ही जिलों में होता हैं।

श्री नवग्रह आश्रम की रिसर्च टीम समय–समय पर इन आंकड़ो को अपडेट करती रहती हैं और राज्य और जिलेवार आंकड़े अपने साहित्य और युट्यूब चेनल के माध्यम से बताती रहती हैं। पर सरकारों के टेक्स इकट्ठा करने के लोभ में सरकारो को यह आँकड़े और एक करोड़ लोगों की प्रति वर्ष होने वाली मौते दिखाई नहीं देती हैं।

अब बात करते है, तम्बाकू के चबाने और धूम्रपान करने में मृत्युदर के बारे में, 1. 15 से 35 वर्ष आयू वर्ग में मुँह का कैंसर सर्वाधिक 80% लोगों को गुटखा और तम्बाकू खाने से होता हैं। 2. फेफड़े का कैंसर बिड़ी, सिगरेट पिने से 35 से 60 वर्ष के पुरूषों में करीब 60% लोग लंग कैंसर के कारण मौत का शिकार हुए है।

इसके अलावा तम्बाकू के उपयोग से अग्नाशय का कैंसर, आहार नली का कैंसर, ब्लड कैंसर, ब्रेन ट्यूमर, किडनी का कैंसर, लीवर का कैंसर, स्वर यंत्र, थाईराइड और गले का कैंसर भी इसके उपयोग से 25% लोगों में होने का कारण तम्बाकू का सेवन हैं। कई लोगों को प्रारम्भिक अवस्था में टी.बी.(TB)होती हैं। और धीरे–धीरे यह कैंसर में बदल जाती हैं। तम्बाकू की खेती करने वाले किसान और मजदूर भी ग्रीन टीबैको सिकनेस (GTS) के कारण 20% लोग त्वचा कैंसर और ब्लड कैंसर के शिकार हो जाते हैं, क्योंकि इसके संम्पर्क में आने से निकोटीन त्वचा, श्वांस, भोजन आदि के माध्यम से शरीर में विशाक्तता पैदा कर देते हैं। सिगरेट और बिड़ी दोनो ही सम्मान रूप से घातक है, यह हमारी रिसर्च टीम का प्रमाणित दावा है, जबकि लोग इस भ्रम में सिगरेट पिते हैं कि यह बिड़ी की तुलना में कम घातक हैं। तम्बाकू के निरन्तर उपयोग से नपुसंकता, वीर्य नास और बांजपन होना आजकल आम समस्या बन चुकी हैं।

एक बहुत बड़ा खतरा सेकेण्ड हेण्ड तम्बाकू धुंए (SHS) सेकेण्ड हेण्ड स्मोकिंग यानी जो लोग धूम्रपान नहीं कर रहे है, पर उस घातक धुंए के सम्पर्क में आ रहे हैं, जिसमें कि 200 से अधिक हानिकारक माने जाने वाले रसायन मौजूद है। इस धुएं के सम्पर्क में आकर बिना स्वयं गलती किए धुम्रपान करने वाले लोगों

की वजह से 42% लोगों को शहरी क्षेत्र और 20% लोगों की ग्रामीण क्षैत्र में तम्बाकू से नुकसान होता है। भारत सरकार ने तम्बाकू विज्ञापन पर 2003 में एक कानून लाकर अपने आपको आमजन कि नजर में कल्याणकारी शाबित कर लिया जबकी यह किसी भी प्रकार से प्रर्याप्त नहीं हैं।

निकोटीन जो कि तम्बाकू के 200 हानी कारक रसायनों में प्रमूख है जो कि एडीक्सन के भयंकर गुण रखता है, व्यक्ति के एक बार आदि होने पर कैंसर तक की यात्रा का माध्यम बनता है।

अब बताता हूं कि तम्बाकू निकोटियाना प्रजाती का पौधा है इसके उत्पादन, प्रसंस्करण, बिक्री से भारत सरकार को जितना टेक्स(राजस्व) प्राप्त होता है। उससे 4 गुना ज्यादा इससे उत्पन्न रोगों के ईलाज और अनुसंधान पर खर्च किया जाता है। अब आप सोचे, सरकारे सोचें, समाज सोचे आपको तम्बाकू रहीत विश्व का निर्माण करना ही होगा नही तो वह दिन दूर नही है। जब आपके पास करने को कुछ नही बचेगा क्योंकि जब आप ही नही बचोगे तो उपाय कोन और किस के लिए करेगा

कैंसर पैदा हाने के कुछ कारण जो आप सोच भी नहीं सकते

आमतोर पर सभी डॉ॰ और आम नगरीक कहते है कि, कैंसर होने के बहुत बड़े कारणों में तम्बाकू, प्रदूषण, शराब और मांस का सेवन है। बात बिल्कूल सही भी हैं ये कैंसर के बड़े कारण है परन्तु ये चारों कारण मिलकर कुल कैंसर के 50% के लिए ही जिम्मेदार है, 50% कैंसर के लिए जो अन्य कारण है, मैं आपको इस बारे में बताना वाला हूँ। इन पर अगर गम्भिरता से विचार और पालन करें तो हम दुनिया से कैंसर की बढ़ती हुई रफ्तार पर रोक लगा सकते है और मानवता को बचा सकते हैं। इन कारणो पर क्रमशः ध्यान दे–

1.**BT सीड आजकल कपास सहित कही फसलों में BT सीड** का चलन चल रहा है, क्योंकि इससे किसानों को अधिक पैदावार मिल रही है, सुरजमुखी भी BT आचुकी है, सोयाबीन BT आचुकी हैं। अब आप समझे यह BT होता क्या है, अमेरिका की बीज बेचने

वाली एक बहुत बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी कृत्रिम तरीके से फसल के मूल जिनको उस फसल के बीज से अलग करके जिवाणु बेसिलस थुरिलिएन्सिस से अमेरिकी कपास में स्थानान्तरण किया गया और इसका परिणाम यह हुआ की इस BT सीड की फसल में अच्छी पैदावार मिलती है और उस फसल पर पेस्ट और इनसेक्ट का हमला (नुकसान) बहुत कम होता है। यानी कीटनाशक का स्प्रे कम करना पड़ता है। यह तो एक पहलू है जो पढ़ने और सुनने में अच्छा लगता है। जब की सच्चाई इसके बिल्कूल विपरीत हैं, इस BT कपास, सुरजमुखी और सरसों के बीजों का तेल इतना जहरीला होता है। क्योंकि जिस सिस्टम को कृत्रिम तरीके से क्रेप्ट करके उस में जहरीला तत्व बढ़ा देने से फसल तो कीड़ो से बच जाती हैं, पर उसका उत्पाद यानी बीज से निकला तेल इतना जहरीला होता है की सामान्य इन्सान इस तेल को खा नही सकता इस कारण इस तेल को रिफाइन्ड और डबल रिफाइन्ड ऑयल में बदला जाता है और यह कैंसर का बहुत बड़ा कारण बनता हैं। इन बीजो की खलि को यानी कोटन या मस्टरड सीड केफ को जिन दुधारू पशूओं को खिलाया जाता है। वो पशु भी कैंसर की चपेट में आते है और उनका दूध भी बहुत घातक नुकसान करने वाला होता है। अतः BT सीड भी कैंसर का बड़ा कारण हैं। सरकार और किसानो को इस दिशा में सोचने की आवश्यकता है, ये हर बार नया लेना होता है आपकी फसल से उत्पन्न बीज का अंकूरण तो हो सकता है पर, उसमें पैदावार बिल्कूल नही होती है, क्योंकि उस बीज का टर्मिनेशन हो चुका होता है, तो इसे टर्मिनेशन सीड कहेंगे। अतः किसान अपने उत्पादित बीज को पुनः बोकर उत्पादन नही ले सकता है। यह हैं विज्ञान व्यापार, लोभ का मिला–जुला कैंसर बढ़ाने का तरीका।

2. **पिज्जा–बर्गर, कोल्ड ड्रिंकः**– इन दिनों जिन्हें देखो वो पिज्जा और बर्गर खाने का शोकिन हो गया हैं। एक नये प्रकार की बात करते है, यह बनता किससे है, इसके निर्माण में हाईलि सेचुरेटेड फेट रिफाइन्ड ऑयल कार्बोहाइड्रेट, प्रोसेस शूगर और कहीं प्रकार के घातक प्रिजर वेटीव जिसमें सल्फर और कहीं प्रकार के एसीड काम में लिए जाते है। इसमें जो मैदा काम में

लिया जाता है, वह 100% फाइबर लेस होता हैं। इस सब प्रदार्थो को अगर हम ध्यान से देखे या इनका विश्लेषण करें तो हमें पता चल जाएगा की ये सभी प्रदार्थ हमारे शरीर में तीन नुकसान करते हैं, मोटापा, चर्मरोग, अपच, गैस और हाई कोलोस्ट्रॉल यानी बेड कोलोस्ट्रॉल रिफाइन्ड शूगर और रिफाइन्ड तेल सभी मिलकर कैंसर पैदा करने में अपना योगदान करते है। आयुर्वेद के ग्रन्थो में एक घण्टे से अधिक समय पहले पका भोजन आहार योग्य नहीं माना हैं। यह बात गीता में भगवान श्री कृष्ण ने आहार और उत्तम भोजन के अध्याय में भी बताई हैं महर्षि चरक और सुश्रुत और वांग्भट्ट ऐसे भोजन को असहाय रोगों का कारण मानते हैं और आंतो और पाचन संस्थान के कैंसर का जनक मानते हैं। अतः पिज्जा बर्गर(फास्ट फूड) और केमिकल युक्त कोल्ड ड्रिंक के सेवन को बन्द करें और अपने आप और अपने परिवार को कैंसर से बचाऐं।

कई छोटे–छोटे कारण :– 1. **कुछ लोग एल्युमिनियम के बर्तन भोजन पकाने में इस्तेमाल करते है** जबकी, एल्युमिनियम फासपाईड जैसा घातक जहर होता हैं जो अनाज के भण्डारण में काम लिया जाता हैं। यह एल्युमिनियम के बर्तन कही भोजन सामग्रीयों के साथ क्रिया करके कई प्रकार के जहरों का निर्माण करते हैं। जिसके कारण TB और कैंसर जैसी बिमारीयाँ होती है। अतः एल्युमिनियम से बचना आवश्यक हैं। प्रेसर कुकर के निर्माण में भी एन्डोलियम धातु इस्तेमाल कि जाती हैं। महर्षि वाग्भट्ट कहते हैं कि हमारा भोजन हवा के सम्पर्क और सूर्य की उपस्थिति में पकना चाहिए नहीं तो यह जहर बन जाता है। अतः ऐसे बर्तनों के स्थान पर मिट्टी के बर्तन, या लोहे के बर्तन इस्तेमाल करने चाहिऐ, और धीमी आंच पर खुले बर्तन में भोजन पकाना चाहिऐ।

2. **माइक्रो वेव ओवन** का इस्तेमाल भी स्वास्थ्य के लिए बहुत नुकसान दायक हैं, क्योंकि इससे भोजन गर्म करते वक्त इससे जो रेजेज निकलती है। वह हमारे शरीर में उस भोजन के पहुँचने पर उस भोजन के साथ हुई गामा, बीटा और थीटा किरणों के विकीरण का प्रभाव होता हैं। और कहीं लोग जिनकी रोगप्रतिरोधक क्षमता कम होती हैं, वो कैंसर का शिकार हो जाते हैं।

<u>3. **नकारात्मक सोच के चलते**</u>– जो व्यक्ति हमेशा नकारात्मक सोच रखता हैं, उसके मन मस्तिष्क में हमेशा क्रोध, भय और आलस्य का वातावरण होने के कारण उसकी जितनी हार्मोन्स बनाने वाली ग्रन्थीयां हैं, उनमें एन्टी थोट के चलते इन नकारात्मक रसायनों का निर्माण ब्रेन ट्युमर का निर्माण करते हैं, पाचन संस्थान को प्रभावित करते हैं और भूख कम लगने या लगातार भूखा रहने के कारण शरीर कुपोषण का शिकार होने लगता है, ऐसी हालत में व्यक्ति की रोगप्रतिरोधक क्षमता भी कम होती जाती हैं। इन सभी क्रियाओं के चलते कैंसरस से केमिकल का शरीर में निर्माण निरन्तर होने से कैंसर आमाशय, स्पाइन कोड या मस्तिष्क में उत्पन्न हो जाता हैं। विज्ञान इस बात को साबित कर चुका हैं, हमारे शरीर की नेगेटिव सेल कैंसर अपनी कोलोनी (नेगेटिव सेल का जमावड़ा) बनाएगा और इसके निर्माण के बाद भी अगर नेगेटिविटी बनी रहती हैं, तो कैंसर बहुत तेजी से बढ़ता हैं फैलता हैं और अन्त में आप जानते हैं की कैंसर क्या करता हैं, शरीर और परिवार का आंनन्द सब अपने साथ लेकर चला जाता हैं, इस नकारात्मक सोच के चलते पूरा परिवार भी डिपरेशन में आ जाता हैं। अतः कैंसर को अगर हराना है तो अच्छा सोचे, सिधा सोचे और हिम्मत वाला सोच रखें, सकारात्मक सोच रखे।

कैंसर की बढ़ती संख्या का बहुत बड़ा कारण - नाईट्रेट

कैंसर होने के कहीं कारण अब तक आधुनिक विज्ञान पता लगा चुकी है। उनमें से कहीं ऐसे कारण है, जो अभी तक सामान्य लोगों को मालुम नहीं है और लोग इन कारणो से अनजान रहने से अज्ञानता वश कैंसर की चपेट में आ रहे है। ऐसे कहीं कारण मैं आपको बता रहा हुँ।

<u>1.नाईट्रेट रिजन</u> :– WHO और भारत सरकार की नवीनतम रिसर्च के अनुसार 1. पोटेिशयम नाईट्रेट 2. अमोनीयम नाईट्रेट महत्वपुर्ण घटक हैं, केन्द्रीय भूजल बोर्ड के अनुसार पानी में नाइट्रेट की मात्रा 45mg प्रति लीटर से अधीक होने पर यह मानव स्वास्थ्य के लिए घातक होता है। निरन्तर इसके अधिक सेवन से कैंसर का गंभीर खतरा उत्पन्न हो जाता है। केन्द्रीय प्रदूषण

नियंत्रण बोर्ड (CPCB) से प्राप्त आंकड़ो के अनुसार भारत वर्ष मे 883 केन्द्रो पर पेय जल एवं सिंचाई जल मे पाये जाने वाले नाईट्रेट का प्रति”ात बहुत चोंकाने वाला और सावधान करने वाला है। यह समस्या भारत के साथ–साथ ऑस्ट्रेलिया, बेल्जीयम, फिनलेंड, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, इजराइल, नीदरलेंड, पोलेंड, अमेरीका, स्वीडन, रूस, बंगलादेश, पाकिस्तान जैसे कहीं देशों में यह गंभीर रूप ले चूकी हैं।

भारत वर्ष कि अगर मैं बात करूं तो, आप इन आंकड़ो से सावधान हो सकते है और भारत सरकार और राज्य सरकारें भी इस के लिए जल्द से जल्द कुछ कारगर कदम उठाकर कैंसर को वैश्विक महावारी बनने से मानव जाती को बचा सकती है।

सर्वप्रथम में नाईट्रेट का राज्यवार ओषत प्रतिशत बता रहा हुँ– 1. पश्चिम बंगाल 480mg/L उडीसा 310mg/L बिहार एवं झारखंड 480 mg/L उत्तरप्रदेश एंव उत्तराखण्ड 695 mg/L दिल्ली हरियाणा 1920 mg/L पंजाब 565mg/L हिमाचल प्रदेश 180 मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ 470mg/L गुजरात् 410 mg/L आंध्रप्रदेश 360 mg/L तमिलनाडू 1030 mg/L राजस्थान 2800 mg/L पाया गया हैं और यह होना चाहिए 45 mg/L अब आप स्वयं यह अनुमान लगाएं की आप जो जल पी रहे है, उसमें कैंसर कारक तत्व कितनी भारी मात्रा में हैं। जब सम्पूर्ण भारत की तस्वीर देखे तो 883 केन्द्रो में से 865 केन्द्रो पर यह मात्रा सामान्य से 4 गुना से 50 गुना तक अधिक पाई गई नेशनल वाटर क्वालिटी मॉनिटरिंग प्रोग्राम के आधीकारिक आंकड़ो का जब मैने एनालेसीस किया तो कुछ राज्यो के इन जिलो की हालत अत्यन्त चिन्ता जनक पाई गई हैं। जो आपको बताना अतिआवश्यक समझता हुँ। 1 हरियाणा – चरखी दादरी, झझर, बहादुरगढ़, हिसार, आदमपुर इन जिलो में 500mg/L से 1314mg/L तक नाईट्रेट प्रदुषण हैं। 2. राजस्थान – चुरू, रतनगढ़, सुजानगढ़, जयपुर, दुदु, जोधपुर, लुनी, मंडोर, सीकर फतेहपुर, भरतपुर, नागौर, उदयपुर, डिडवाना, डुँगरपुर, पाली इन स्थानो पर औसत 1000mg/L से 1450mg/L तक यह प्रदुषण है। दिल्ली, महाराष्ट्रा, मध्यप्रदेश और गुजरात की हालत तो इन राज्यो से भी अधिक खतरनाक है।

आप सोच रहें हैं, आखिर यह प्रदूषण इतना होता कैसे है। इसके तीन प्रमूख कारण है। 1. कृषि क्षेत्र में उपयोग किए जा रहे रासायनिक उर्वरक (यूरिया, केल्शियम, अमोनियम, नाइट्रेट DAP, NPK) आदि। 2. औद्योगिक प्रदूषण युक्त जल को और औद्योगिक कचरे की डम्पींग से भारी मात्रा में बढता हैं। 3. भूमीगत भण्डारो का अधीक जल दोहन के कारण पेयजल के साथ मिलता हैं। इस प्रदूषित जल के उपयोग से उत्पन्न सब्जियों, अनाजों, दालों, फलों सभी के सेवन से भी नाइट्रेट का खतरा बढ़ा हैं और कैंसर अनियंत्रित गति से बढ़ रहा है। उपरोक्त जानकारी मैंने मार्च 2022 में प्रकाशीत अमेरिकन केमीकल सोसायटी के जर्नल ए.सी. एस. पब्लिकेशन में प्रकाशित शोधपत्र प्रिडिक्टिंग रीजनल स्केल एलिवेटेड ग्राउंड वाटर नाइट्रेट, केटेमिनेशन रिस्क यूजिंग मशीन लर्निंग आन नैचुरल एंड ह्यूम इंडयूस्ड फैक्टर्स का जब विस्तार से अध्ययन किया तो पाया की वातावरण से शहरी शिवरेज कु प्रबन्धन, कृषि रसायन, औद्योगिक प्रदूषण आदि प्रमूख कारण है। चूंकि मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूँ, अतः मैं दावे से कह सकता हुँ, की नाइट्रेट का किसी भी प्रकार साफ करना नामुमकिन है। अतः उपरोक्त कारणो पर ध्यान देकर मानव जाती को सरकारें बचा सकती हैं। इसके लिए राष्ट्रव्यापी, कठोर निती बनाकर सभी राज्य सरकारे, नागरिक, किसान, औद्योगिक गराने और खासतोर से राज्य जल प्रदूषण बोर्ड आदि मिलकर इस दिशा में कार्य करें।

इस प्रदूषण से पाचन तंत्र की समस्या, लिंफोमा निर्माण, मूत्रासय और डिंब ग्रन्थी कैंसर का निर्माण, बड़ी आंत के कैंसर का निर्माण होने के साथ–साथ पशुओं के लिए भी यह बहुत घातक नुकसान कर रहा हैं।

रिफाइन्ड ऑयल

आज की आधुनिक जीवनशैली और भागम–भाग की जीन्दगी में इन्सान को अपनी जिन्दगी को बचाने तक के लिए समय नहीं हैं। आओ सर्वप्रथम समझते हैं कि रिफाइन्ड ऑयल बनता कैसे है? एक बार या बार–बार उपयोग किये गये खाद्य तेल को विकसित देश जिस तेल को जलाने के लिए यानी फर्निस्ड ऑयल के नाम

से बेच देते है, उसी तेल को अपने आर्थिक लाभ के लिए विकासशील या गरीब देश बहुत ही उच्चताप पर गर्म करके और उसमें बहुत ही घातक कैंसर जनीक केमिकल डालकर उसे पारदर्शी बना देते है, यह पारदर्शी तेल मानव स्वास्थ्य के लिए इतना घातक हैं कि इसको संसार की कई वैज्ञानिक संस्थाओ ने इसे सफेद जहर कि संज्ञा दि हैं। इस तेल में बड़ा हिस्सा पाम सोयाबीन, कपासीया, नीम, करंज, अरण्डी और कई अखाद्य तेलों को भी रिफाइन्ड तकनिक से पारदर्शी एवं गंधहीन बनाकर बहुत ही आकर्षक पैकिंग मे पैक करके लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया जाता है।

आज कि तारिख मे जितने भी पैकेज फूड आने लगे है, इनमें भी रिफाइन्ड तेल ही इस्तेमाल किया जाता है। मस्ट्रिच यूनिवर्सिटी मेडिकल सेन्टर की एक रिसर्च ने ओमेगा 6 की अत्यधिक मात्रा होने के कारण इस रिफाइन्ड तेल को सफेद जहर के समतुल्य माना है।

अब में समझाता हुँ कि यह रिफाइन्ड ऑयल कैंसर जैसी घातक बिमारी कैसे पैदा करता हैं 1. जब इसका निर्माण किया जाता हैं, जिससे काला मटमेला और दुरगंध युक्त तेल सफेद साफ और पारदर्शी दिखाई देने लगता हैं। उसका कालापन तो पेंदे में बैठ जाता हैं या नष्ट हो जाता हैं। परन्तु वह मिलाया गया केमिकल समाप्त नहीं होता हैं और हमारी सामान्य कोशिकाओं का DNA चेंज करके उन्हें कैंसर कोशिकाओं में बदलने कि प्रक्रिया आरम्भ हो जाती हैं। 2. इस तेल के निर्माण के समय और उपयोग के समय जब उबलने के तापक्रम पर गर्म किया जाता हैं, तब इसमें जो पॉली अनसेचुरेटेड फैटी एसिड केमिकल हवा की नमी के साथ रिएक्शन करके खाने के लिए जहर तुल्य हानिकारक प्रदार्थो में बदल जाते हैं।

ब्रिटिश जर्नल आफ न्यूट्रिशन की 2015 की प्रकाशित समीक्षा में साफ तोर से सावधान किया है कि रिफाइंड ऑयल को अगर एक बार से अधिक गर्म किया जाता है, तो यह अत्यन्त नुकसान दायक होता है और यह हार्ट अटेक, बेड कोलेस्ट्रॉल, चर्मरोग,

अंधापन और कैंसर जैसे रोगों को जन्म देता है। अमेरीका, डेनमार्क स्विट्जरलेण्ड और ऑस्ट्रेलिया जैसे कई देशो में इसके निर्माण और उपयोग पर सख्त प्रतिबन्ध लगे हुए है। वहां पर यह मानव वध के सम्मान अपराध की श्रेणी में आता है। कुछ देश हाईडोज निकृत करके इन तेलो का निर्माण करते है, जो की अत्यन्त नुकसान करता है जब भी इसे बार–बार गर्म किया जाता है। मैरा ऐसा स्पष्ट मत हैं की तेल का जो चिपचपापन है अगर उसे तेल से निकाल दिया जाए तो पिछे बचा प्रदार्थ तेल नही बल्की जहरीला केमिकल होता है और यही केमिकल रिफाइन्ड तेल है। पेरालाईसीस, ऐसोफेगस कैंसर, कोलोरेक्टल कैंसर, स्किन कैंसर और कुछ क्षैत्रों में छोटी उम्र के बच्चों में लेक्यूमीया यानी ब्लड कैंसर पैदा करने में इसका महत्वपूर्ण कारण होता हैं।

अब आप को बताना चाहता हुँ, कि इसके निर्माण में कास्टिक सोडा, फास्फेरिक एसीड, ब्लीचिंग क्लेंज और बहुत ही घातक केमिकल जो कई प्रकार के ऐसीड होते हैं, मिलाये जाते हैं। डबर रिफाइन्ड तेल में तो ये केमिकल 12–13 की संख्या में होते है।

अतः में आपसे अनुरोध भी करता हुँ और सावधान भी कर रहा हुँ की अपने आपको कैंसर जैसी महावारी से बचाने के लिए कच्ची घाणी का तेल यानि कोल्हु का बिना फिल्टर किया तेल इस्तेमाल करें, तब ही हम इस कैंसर से बच पाएंगे।

श्री नवग्रह आश्रम अपने कैंसर एवेयरनेस प्रोग्राम में विगत 7–8 वर्षो से वीडियो, पर्चे और आयुष्मान भवः पुस्तक के माध्यम से बताता आ रहा हैं।

आप उत्तम खाद्य तेल खरीदें, कैंसर नहीं

वैद्य हंसराज चौधरी

कैंसर का जनक समुद्री नमक

यानी इसे सी सोल्ट सौर नमक और बी नमक के नाम से भी जाना जाता है। यानी समुद्र के पानी को बॉयलर में डालकर वाष्प के रूप में पानी को उड़ाकर बचे हुए केमिकल को ही नमक कहते है। दुसरा तरिका है, समुद्र में जब ज्वार आता है, तब पानी खेतों में (नमक के खेतो) में भर जाता हैं और उस खेत के पानी को पुनः समुद्र में नही जाने दिया जाता है, सूर्य की गर्मी से धीरे–धीरे पानी वाष्प बनकर उड़ जाता है और निचे बचा जितना भी केमिकल हैं वहीं समुद्री नमक कहलाता हैं।

आप सोच रहे होगें की मैं आपको नमक बनाने की विधि बता रहा हुँ। नहीं मैं बता रहा हुं कि जो नमक आप खा रहे हो ये समुद्री नमक जो सफेद नमक भी कहलाता हैं जिसमें कितने घातक और हानिकारक जहर मिले हुऐ है, आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इस नमक के इस्तेमाल से हाई ब्लड प्रेसर, किडनी डेमेज, चर्मरोग, आंत अल्सर जैसी बिमारीयों के अलावा सबसे घातक दुषप्रभाव हैं कैंसर पैदा करने की क्षमता यानी कैंसर का जनक।

एक सामान्य जानकारी आपको अवश्य होनी चाहिए की समुद्र का पानी खारा होता है। यह खारापन ही नमक होता है, कुछ लोग इस पानी को नमकीन पानी भी कहते हैं। इस नमकीन पानी में प्रतिवर्ष घातक रसायनो का प्रतिशत बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा हैं। इसका प्रमुख कारण हैं। वर्षा के लिए जब समुद्र से भाप उड़ता है तो उस भाप में कोई केमिकल नहीं होता है। इसी कारण वर्षा जल मीठा होता है और धरती पर बरसने के बाद अपने साथ ढ़ेर सारा पृथ्वी पर पड़ा कचरा, केमिकल, प्लास्टिक, औद्योगिक प्रदूषण युक्त जल जिसमें पारा, DDT, BHC पेस्टीसाईड, प्रोसेस हाउसो से निकला तेजाब और क्लोरीन युक्त घातक केमिकल, जस्ता, सिसा, एल्युमिनियम, चमड़ा आदि उद्योगों का घातक कचरा व पानी नाली से नाले, नाले से नदी, और नदी से समुद्र में प्रत्येक वर्ष पिछले वर्ष कि तुलना में समुद्र का पानी अधिक गति से खतरनाक और कैंसर कारक होता जा रहा हैं। कहीं देशो द्वारा अपने औद्योगिक इकाईयों के घातक केमिकल

समुद्र में ही डाले जा रहे हैं। इस प्रदूषण युक्त जल को जब वाष्प बनाकर उड़ा देते है, तो बचे हुए केमिकल जिसे हम समुन्द्री नमक कहते है। यह समुन्द्री नमक निम्न कैंसरों को बढ़ावा देता हैः– 1. आमाशय का कैंसर, 2. अहार नाल का कैंसर 3. कॉलोरेक्टल कैंसर, 4. नमक उद्योग में काम करने वाले मजदुरो को त्वचा का कैंसर होना अब आम बात हो चूकी है, 5. किडनी कैंसर के लिए इसे आज कल प्रमूख कारण माना गया हैं। इसका समाधान मैं आपको बताना चाहता हूँ की आयुर्वेद के जितने भी ग्रन्थ हैं उनमें सेंधा नमक जिसे सेंधव नमक या मुल्तानी नमक या हिमालय का नमक भी कहते हैं। इसमें किसी भी प्रकार का कोई घातक केमिकल नहीं होता। इसमें पाया जाने वाला सोडियम भी बहुत उत्तम और गुणवत्ता पूर्ण होता हैं। जो शरीर में पानी का लेवल सही बनाये रखने के साथ–साथ किडनीयों की रक्षा भी करता हैं।

श्री नवग्रह आश्रम अपने कैंसर एवेयरनेस प्रोग्राम में पिछले 8 वर्षो से इस बात पर पूर्ण वैज्ञानिक आधारों से यह बात कैंसर रोगियों, उनके परिजनों एवं आम नागरिकों को बता रहा हैं और लोगों में इसका सकारात्मकता रूजान भी देखा जा रहा हैं।

कैंसर के ये हैं यार

मोटापा अगर किसी के शरीर में फैट बढ़ जाता है तो उसका वनज बढ़ जाता है। इस फैट में मौजूद एंजाइम मेल हॉर्मोन को फीमेल हॉर्मोन एस्ट्रोजिन में बदल देते हैं। फीमेल हॉर्मोन ज्यादा बढ़ने पर ब्लड कैंसर, प्रोस्टेट, ब्रेस्ट कैंसर और सर्विक्स (यूटरस) कैंसर होने की आशंका बढ़ जाती है। हाई कैलरी, जंक फूड, नॉन–वेज ज्यादा लेने से समस्या बढ़ जाती है।

फैमिली हिस्ट्री माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी आदि को कैंसर हुआ है तो अगली पीढ़ी को कैंसर होने के चांस करीब 10 फीसदी तक बढ़ जाते हैं। हालांकि यह जरूरी नहीं है कि अगर मां या पिता को कैंसर हुआ है तो बच्चे को होगा ही होगा।

शारीरिक आलस्य – न रहना फिजिकल एक्टिविटी या एक्सरसाइज न करने से कैंसर की आशंका बढ़ जाती है। रोजाना

कम से कम 30 मिनट एक्सरसाइज जरूर करें। हालांकि 45–60 मिनट एक्सरसाइज करना बेहतर है। इसमें कार्डियों एक्सरसाइज (ब्रिस्क वॉक, जॉगिंग,साइक्लिंग, स्वीमिंग आदि) को जरूर शामिल करें।

माईक्रो प्लास्टिक

जो प्लास्टिक 70–80 वर्षो पहले हल्का होने और जंगल और प्रकृति को बचाने के लोभ में मनुष्य के काम आने लगा था अब इसका उपयोग का दायरा इतना अधिक फैल चूका है कि यह कैंसर जैसी बिमारी को पैदा करने के लिए एक बहुत जिम्मेदार गटक बन गया हैं।

सबसे पहले प्रश्न उठता है कि प्लास्टिक और माईक्रो प्लास्टिक में क्या अन्तर है, आप यूं समज ले 5mm से छोटी साईज का जो भी प्लास्टिक मटेरियल है, उसे हम माईक्रो प्लास्टिक की श्रेणी में मानेगें। इस माईक्रो प्लास्टिक कि तीन प्रमुख श्रेणीयां हैं :–

(1) माईक्रो फाईबर (2) माईक्रो बीड्स (3) प्लास्टिक पेलेट्स (नर डल्स) इन तिनो श्रेणीयो का निर्माण कैसे होता है। यानी प्लास्टीक माईक्रो प्लास्टिक में परीवर्तन के लिए निम्न कारण जिम्मेदार हैं –

(1) प्लास्टिक पानी, सोडा, ऐसीड, कोल्डड्रीक्स, बेबी मिल्क बोटल, प्लास्टिक बाल्टी, जग, मोबाईल कवर, प्लास्टिक बेग, मछली पकडने के जाल, क्रोवेवकेटेंनर, टि बेग, टायर वियर प्लास्टिक के तिरपाल, प्लास्टिक पेकींग, मटेरियल प्लास्टिक के अनाज और सामान भरने के कट्टे, खाने के टिफिन प्लास्टिक चम्मच प्लास्टिक बाल्टी, पोलिस्टर टेरीकाटन विसकोश, फाईबर, जैसे सैकडों उत्पाद है जो लगातार नुकसान दायक माईक्रो प्लास्टीक का निर्माण कर रहें हैं।

इस प्रक्रिया में हमारे प्राकृतिक संसाधन समुन्द्र, मिट्टी, पानी, हवा, पेड़–पोधें, शब्जीयां, अनाज, शक्कर, चाय, गुड, दूध सब प्लास्टीक प्रदुषण से ग्रसीत हैं।

दुनीया के अधीकतर वैज्ञानिकों द्वारा जब मनुष्य के रक्त के नमुने लिए गये तब पता चला की 60 प्रतिशत से अधिक लोगो के खून में 700मिली माईक्रोन के प्लास्टिक कणों की मोजुदगी पाई गई जिसके कारण रक्त कैंसर चर्म कैंसर और ब्रेन और लिवर कैंसर

रोग से भारी मात्रा में कैंसर रोगी पाये गये और यह संख्या निरन्तर बढ़ रही हैं।
अब प्रश्न उठता है कि हमे इससे क्या खतरा है, और हम तो प्लास्टिक उपयोग ही नहीं कर रहें हैं। इस बात का जवाब में आपको देना चाहता हूं।
(1) समुद्री नमक द्वारा (2) हवा द्वारा (3) सब्जी और फलो द्वारा (4) पेयजल द्वारा (5) अनाज द्वारा (6) टि बेग द्वारा।
हम इतने माध्यमों से माईक्रो प्लास्टिक का सेवन कर रहें हैं। 2014 में पहली बार प्याय माउथ विश्व विद्यालय के एक समुन्द्री जीव विज्ञानिक प्रोफेसर रिसर्च थाम्पसन ने इस शब्द का प्रयोग भी किया और लोगो को आगाह भी किया 2014 के एक सर्वे के हिसाब से केवल महासागरो में **51 ट्रिलीयलन माईक्रो प्लास्टिक टुकडे है, जिनका वनज 240.000 मीट्रीक टन बेठता हैं।** यह नेनो प्लास्टिक समुद्री जीवों से लगातार सम्पूर्ण मानव जाती के लिए बहुत घातक हैं। कनाड़ा के वैज्ञानिक स्टिव एलन ने पहाड़ो पर भी इस कि उपलब्धता को प्रमाणित किया हैं। यानी यह समुद्र हवा और पहाड़ सभी जगह दानव के रूप में मौजूद है। 2017 में एयर बोर्न माईक्रो फाईबर सान्द्रता को नापने पर 20 से 60.0 माईक्रो फाईबर प्रतिघन मीटर पाया गया है जो बहुत ही घातक स्तर हैं। सिन्थेटीक फाईबर और सड़क टायर और कहीं कारखानो का प्लास्टिक अपशिष्ट (बायो सोलिड) जमीन और जल दोनो में घुल रहा है। 2022 में हजारो रक्त नमुनो में 80 प्रतिशत रक्त नमुनों में जहर पाया गया है। वैज्ञानिको का कहना है कि समुद्री भोजन करने वाला व्यक्ति 11.000 माईक्रो प्लास्टिक बिट्स मात्रा पाई जाती हैं। 1 किलो चीनी में 440 माईक्रो प्लास्टिक पाया जाता है। बोतल के पानी में 90 माईक्रो प्लास्टिक होता हैं। चीन संसार में सर्वाधिक प्लास्टिक कचरा समुन्द्र में अपनी यांगची नदी के माध्यम से डालता है। मेरा एक ही सुझाव है कि सम्पूर्ण मानव जाति को बचाने के लिए प्लास्टिक के उपयोग पर तुरन्त रोक नहीं लगने की हालत में पूरी दुनिया में ब्लड कैंसर फेफडे का कैंसर और ब्रेन ट्यूमर कैंसर फेलता रहेगा और यह समस्या एक दिन बेकाबु हो जाएगी। कैंसर पैदा करने में इनकी भूमिका ऐसी है कि यह RBC व WBC और प्लेटरेट सेल को

ऑक्सीजन लेने से रोकता है क्योंकि यह कोशिका के चारों और एक आवरण बना देते है, और कोशिका के केन्द्र में जाकर उसका DNA बदल डालते है, और DNA होने का मतलब ही कैंसर को आमंत्रण हैं। प्लास्टिक मुक्त विश्व होना परम आवश्यक हैं।

ज्यादा कीटनाशकों से बढ़ रही कैंसर की बीमारी

कीटनाशक के जमीनी पानी में मिलने के कारण आज बीमारियां बढ़ रही हैं। कीटनाशक खाने के माध्यम से शरीर में प्रवेश करने के बाद हमारे शरीर में जमा होते रहते हैं। कीटनाशकों के बढ़ते प्रभाव से शरीर का नर्वस सिस्टम प्रभावित हो रहा है। इसके चलते पेट दर्द, जोड़ दर्द, कैंसर जैसी घातक बीमारियां शरीर को अपनी चपेट में ले रही हैं। **बी.टी. सीड बीज भी खतरनाक हैं।**

मेटा–विश्लेषण (यानी कई अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के विश्लेषण) ने गर्भावस्वथा में कीटनाशकों के संपर्क में आने वाली महिलाओं और उनके बच्चों में **ल्यूकेमिया** के बढ़ते जोखिम के बीच संबंध दिखाया है।

रसायन विभिन्न तरीकों से कैंसर को ट्रिगर कर सकते हैं, जिसमें हार्मोन को बाधित करना, डीएनए को नुकसान पहुंचाना, ऊतकों में सूजन और जीन को चालु या बंद करना शामिल है। कई कीटनाशक ज्ञात या संभावित कार्सिनोजेन्स हैं और जैसा के राष्ट्रपति के पैनल ने नोट किया है, इन रसायनों का संपर्क व्यापक हैं।

जान का दुश्मन है कीटनाशक

कीटनाशनकों के संपर्क में आने से लंबे समयोपरांत कैंसर होने की संभावना होती है। बचपन में संपर्क में आने से कैंसर की संभावना अधिक हो जाती हैं।

जर्नल ऑफ कैंसर इंस्टीटयूट में प्रकाशित अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार घर के बगीचे में उपयोग में लिए गए कीटनाशकों से बच्चों में रक्त कैंसर की संभावना सात गुना बढ़ जाती है। साथ ही यह भी उजागर हुआ है कि जिन घरों में कीटनाशकों का

प्रयोग होता है उनके बच्चों में रक्त कैंसर, ब्रेन कैंसर और सॉफ्ट टिश्यू सारकोमा नामक कैंसर की घातक दर अधिक होती है।

प्रतिरोधात्मक शक्ति के क्षीण होने से भी कैंसर की संभावना बढ़ जाती है। कीटनाशक प्रतिरोधात्मक शक्ति को क्षीण करते हैं। बच्चों बुजुर्गों और लम्बे समय से बीमार लोगों में यह संभावना अधिक होती है, वे अधिक संवेदनशील होते हैं। अमरीकन कैंसर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि आम उपयोग में लिए हार्बीसाइड (खरपतवार नाशक) और फंगीसाइड, विशेषकर मेकोप्रोप (एमसीपीपी) में नॉन हॉजकिन्स लिम्फोमा नामक लिम्फ कैंसर अधिक होता है। ग्लायोफासेट (राउंड अप) नामक ऐसे कीटनाशक से ऐसे कैंसर के होने की संभावना 27 गुणा अधिक पाई गई।
99 अध्ययनों में से 75 में कीटनाशक से संपर्क और लिम्फोमा के बीच संबंध पाया गया। चार पीयर रिव्यूड विस्तृत मानक अध्ययनों से उजागर हुआ है कि ग्लायोफोसेट युक्त कीटनाशकों के संपर्क में आने वालों में, अल्प मात्रा में भी डीएनए विकृति और जेनेटिक म्यूटेशन होता है। 2007 में एन्वायरमेन्टल हेल्थ पर्सपेक्टिव जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार उन माताओं में, जिनके गर्भावस्था के दौरान घर में कीटनाशकों का प्रयोग हुआ था, उनके बच्चों में अक्यूट ल्यूकीमीया (तीव्र रक्त कैंसर) और नॉनहाजकिन्स लिम्फोमा दो गुणा अधिक होते हैं। 2007 के एक केनेडियन अध्ययन के अनुसार पर्यावरण प्रदुषित होने से लड़को में कैंसर, आस्थमा जन्मजात विकृतियां अधिक पाई गई।

जिन घरों में कीटनाशकों का प्रयोग होता है, उनके बच्चों में रक्त कैंसर, ब्रेन कैंसर और सॉफ्ट टिश्यू सारकोमा नामक कैंसर की होने की दर अधिक होती है। प्रतिरोधात्मक शक्ति के क्षीण होने से भी कैंसर की संभावना बढ़ जाती है। कीटनाशक प्रतिरोधात्मक शक्ति को क्षीण करते हैं। बच्चों, बुजुर्गों और लंबे समय से बिमार लोगों में यह संभावना अधिक होती है, वे अधिक संवेदनशील होते हैं।

कीटनाशक

कीटनाशक और खरपतवार नाशक आर्सेनिक आधारित रसायन जैसे सोडियम आर्सिनेट और केल्सियम आर्सिनेट चिन्हित कैंसर कारक है। जानवरों पर परिक्षण एवं मानव अध्ययन के आधार पर डीडीटी, लिन्डेन, बेन्जिन हेक्साक्लोराइड, नइट्रोफिनोल्स, पेराडाईक्लोरोबेन्जीन, क्लारोडेन, कार्बामेट–आइपीसी व सीआइपीसी, को संभावीत कैंसरकारक के रूप में चिन्हित किया गया है। साथ ही इन्हें छिड़काव के लिए जिन पेट्रोलियम आधारित द्रव्यों में घोला जाता है, उनमें स्थित ऐरेमैटिक साइक्लिक और अनसेच्रेटेड हाईड्रोकार्बन भी कैंसरकारक होते हैं। देश के बाजारों में व्यापक रूप में उपलब्ध मिलावटी कीटनाशक अतिघातक होते हैं।

कैंसर कारक कीटनाशक रसायनों के मावन शरीर पर प्रभाव से कैंसर होने में साधारण रूप से कई वर्ष लगते हैं। क्रमशः होते जीन विकृतिकरण समयोपरांत जब चरम पर पहुंचते हैं, तब कैंसर होता है। कुछ रक्त कैंसर इसके अपवाद हैं।

समस्त कीटनाशक जैविक विष हैं। विभिन्न प्रकार के विष अलग–अलग तरह से प्रभावी होते हैं। सभी विष जीव कोशिकाओं में सतत् चल रही रासायनिक जीवन प्रक्रिया को बाधित करने में सफल होते हैं। हर कोशिका में जीवित रहने और अपना कार्य करने के लिए ऊर्जा उत्पन्न होती है, जो एटीपी के रूप में उपलब्ध होती है। अधिक क्रियाशील और सृजनशील कोशिकाओं की ऊर्जा की आवश्यकता कार्य अनुरूप अधिक होती है। इसी कारण सृजनशील (मल्टीप्लाईंग या डिवाइडिंग) कोशिकाएं विष के कुप्रभाव के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। सूक्ष मात्रा में व्याप्त कीटनाशक मानव शरीर में सृजनशील कोशिकाओं की सृजन एवं संवर्द्धन प्रक्रिया को बाधित करतें है। बाधित जैविक प्रक्रिया से कोशिका की जीन संरचना में विकृति उत्पन्न हो जाती है। फलस्वरूप सृजन और संवर्धन को नियंत्रित और नियमित करने वाली प्रक्रियाएं नष्ट या विकृत हो जाती है और सामान्य कोशिका कैंसर कोशिका बन जाती है अनियंत्रित विभाजन, अन्य कोशिकाओं पर आक्रमण की क्षमता, पोषक तत्वों की अपनी आवश्यकता के

लिए रक्त वाहिनियां बनाने की क्षमता और शरीर में दूर किसी भी अंग में जाने की क्षमता प्राप्त कर लेती हैं।

विभिन्न प्रकार के रासायनिक विषों का मानव शरीर पर उनके कुप्रभाव की संभावना तार्किक है। यहां तक की इनसे कैंसर भी हो सकता है। यह साक्षय कीटनाशकों के व्यापक प्रयोग पर धीरे–धीरे सामने आए हैं। कीटनाशकों के व्यापक प्रयोग से अमेरिका में पक्षी विलुप्त हो गए। पक्षियों का कलरव बंद हो गया, वादियां शांत हो गई। इसी को आधारित कर रेसेल कारसन ने 1962 में साईलेन्ट स्प्रिंग पुस्तक लिखी, जो क्रांतिकारी सिद्ध हुई। पहली बार कीटनाशकों के घातक प्रभाव उजागर हुए और मीडिया ने भी इसे प्रमुखता से उठाया जिसके कारण जनसाधारण भी उद्वेलित हुआ और सरकार जागी। विश्व भर में प्रतिक्रिया हुई। वातावरण में इस विष के प्रतिवर्ष हजारों टन घुलने के प्रति लोग सजग हुए।

बड़े शहरो में लोंग इसे बेहिचक खरीद और बेच रहे हैं, इन पर लगाये गये प्रतिबंध के बावजूद बाजार में बेनोमाइल, कार्बाराइल, डायजिनोन, फेंथिओन, फेनारिमोल, लिनुरोन, मैनेक्सी, मैथोक्सीथाइल मरकरी क्लोराइड, मिथाइल पैराथियोन, सोडियम साइनाइड, थियोमेट व ट्राइडेमोर्फ कीटनाशक विभिन्न कंपनियों के ब्रांड में उपलब्ध हैं, खास बात है कि इनका उपयोग एक बार किये जाने के बाद कम से कम 50 वर्ष तक जमीन व भू–जल पर इनका दुष्प्रभाव रहता है।

पंजाब के साथ–साथ पड़ोसी राज्य हरियाणा में भी कैंसर के मामलों में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि कैंसर पैदा करने वाले कारणों को समाप्त करने के लिए कृषक और उद्योगपति सार्थक प्रयास करें।

किसान अधिक उपज के लालच में रासायनिक कीटनाशकों और रासायनिक खादों का इस्तेमाल करने से बचें। जैविक खादों का इस्तेमाल करने के अलावा अन्य आधुनिक विधियां अपनाएं जिनसे पानी भी कम लगे और प्राकृतिक खाद के तथा उन्नत बीजों के

इस्तेमाल से अधिक फसल प्राप्त हो और किसी भी प्रकार का प्रदूषण भी उत्पन्न न हो।

इसके अलावा निर्मल जल स्त्रोतों में उद्योगों का विषैला पानी और दूसरा कचरा फैकनें पर अंकुश लगाया जाए, थर्मल बिजली संयंत्रों के स्थान पर सोर उर्जा एवं बायो गैस लगाए जाएं। तभी इस अभिशाप से किसी सीमा तक बचा जा सकेगा। यदि आवश्यक हो तो इसके लिए कानून बनाया जाए और उल्लंघनकर्ताओं के लिए कठोर दंड की व्यवस्था की जाए।

रासायनिक कीटनाशक दवाओं व खादों के इस्तेमाल में महाराष्ट्र, उतर प्रदेश, पंजाब, आंध्र प्रदेश और हरियाणा देश में सबसे आगे हैं जिसके चलते यहां के लोग इनके दुष्प्रभाव का खतरा लगातार झेलते हैं। इनके अधिक इस्तेमाल के कारण ही कैंसर पंजाब में महामारी का रूप धारण कर गया है और यहां प्रतिदिन औसतन 190 लोग कैंसर से जान गंवा रहें हैं।

कैंसर के 10 फीसदी मरीज ऐसे आते हैं जो किसी भी तरह का नशा नहीं करते हैं। बावजूद इसके उन्हें कैंसर हो गया। इसकी सबसे बड़ी वजह कीटनाशक और कैमिकल्सयुक्त हरी सब्जियों का सेवन है। सब्जियों में जितना ज्यादा कीटनाशक का इस्तेमाल होगा, बीमारी होने का खतरा उतना ही बढ़ जाता है।

इन दिनों पंजाब, हरियाणा, बिहार, उत्तरप्रदेश, और मध्यप्रदेश में सबसे ज्यादा कैंसर के मरीज पाए जा रहे हैं क्योंकि वहां सब्जियां उगाने में भारी मात्रा में कीटनाशक और फर्टिलाइजर का प्रयोग हो रहा है। राम मनोहर लोहिया इस्टियूट में सर्जरी और मेडिसिन ऑन्कोलजी विभाग के डॉ. विकास इस दावे को और पुख्ता करते हैं। बकौल विकास उनके पास रोजाना 600 कैंसर के मरीज आते हैं। इनमें से 10 से 15 फीसदी किसी भी तरह के नशे के आदि नहीं है। इसका मूल कारण पेस्टीसाईड हैं।

अधिक उपज लेने के चक्कर में अधिक कीटनाशकों के प्रयोग के कारण देश के तीन राज्य पंजाब, हरियाणा और उतर प्रदेश में कैंसर मरीजों की संख्या तेजी से बढ़ रही हैं। पिछले

दिनों हरियाणा सरकार ने अपने प्रदेश में कीटनाशकों के प्रयोग को लेकर एक अध्ययन कराया था जिसमें पता चला था कि इस राज्य में कीटनाशकों के कारण किसानों में कैंसर का रोग बढ़ रहा है। इस बारे में जानकारी देते हुए हरियाणा कृषि विभाग के पूर्व महानिदेशक अशोक यादव ने बताया, सेंट्रल इंसेक्टीसाइड बोर्ड एंड रजिस्ट्रेशन कमेटी की गाइडलाइंस का बिना पालन किए देश में कीटनाशक बिक रहें हैं। इन कीटनाशकों की चपेट में सबसे ज्यादा किसान हैं।

राष्ट्रीय कैंसर रोकथाम एवं अनुसंधान संस्थान यानि नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ कैंसर प्रिवेंशन एंड रिसर्च, नोएडा के अनुसार प्रदेश में खाने के माध्यम से शरीर में रोजाना 0.5 मिलीग्राम कीटनाशक जा रही है। राजीव गांधी कैंसर इंस्टीटयूट एंड रिसर्च सेंटर, दिल्ली की यूनिट चीफ डॉ. स्वरूपा मित्रा के अनुसार तंबाकू के बाद देश में कीटनाशक कैंसर का दूसरा बड़ा कारण बना हैं। कैंसर के लगभग 30 प्रतिशत मामले इसी वजह से हो रहें हैं।

कीटनाशकों का उपयोग धड़ल्लें से कितना बढ़ रहा है इसकी बानगी आंकड़े भी दे रहें हैं। 1950 में देश में जहां 2000 टन कीटनाशक की खपत थी जो आज बढ़कर 90 हजार टन है। 60 के दशक में जहां देश में 6.4 लाख हेक्टेयर में कीटनाशकों का छिड़काव होता था वहीं अब डेढ़ करोड़ हेक्टेयर में कीटनाशकों का छिड़काव हो रहा है, जिसके कारण भारत के पैदा होनें वाले अनाज, फल, सब्जियां और दूसरे कृषि उत्पाद में कीटनाशकों की मात्रा तय सीमा से ज्यादा पाई जा रही है।

केयर रेटिगं ने इसको लेकर अपनी रिपोर्ट मे बताया है कि भारतीय खाद्य पदार्थो में कीटनाशकों के अवशेष 20 प्रतिशत तक है जबकि वेश्रिक स्तर पर यह मात्रा 2 प्रतिशत तक होता है। भारत में केवल ऐसे 49 प्रतिशत ही खाद्य उत्पाद हैं जिनमें कीटनाशकों के अवशेष नहीं मिलते हैं जबकि वैश्रिक स्तर पर 80 प्रतिशत खाद्य पदार्थो में कीटनाशकों के अवशेष नहीं हैं।

कीटनाशक अन्य कारण

कृषि विभाग के अनुसार देशभर में फसल बुवाई से लेकर कटाई तक फसलों में औसतन 3 से लेकर 4 बार कीटनाशकों का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिससे अनाज और सब्जियों में कीटनाशकों का अवशेष बड़ी मात्रा में पाया जा रहा और यह लोगों को कैंसर जैसी बीमारियों दे रहा है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (इंडियन काउंसिल मेडिकल रिसर्च) ने अपने अध्ययन में बताया है कि वर्ष 2024 में देश में कैंसर मरीजों की संख्या में 27 लाख 20 हजार हो जाएगी, जिसके कारण देश में तंबाकू के सेवन के साथ ही कीटनाशकों को बढ़ता प्रयोग है। किंग जार्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ के कैंसर विभाग के प्रोफेसर डॉ. विजय कुमार ने बताया की कैंसर के जो मरीज आ रहें है उसमें से कीटनाशकों के कारण लोगों में पेट, फेफड़े और प्रोस्टेट कैंसर हो रहा हैं।

उन्होंने बताया कि कीटनाशक शरीर के जिस हिस्से से गुजरता है उसको नुकसान पहुंचाता हैं। खासकर फेफड़े, किडनी, लिवर और गले को धीरे–धीरे मात्रा ज्यादा बढ़ने पर ब्लड में भी घुल जाता है और ब्लड कैंसर का खतरा बन जाता है। कीटनाशक नर्व सिस्टम पर भी बुरा असर डालते हैं।

कैंसर होने के अन्य कारण

नेशनल कैंसर रजीस्ट्री करण प्रोग्राम, राजीव गांधी कैंसर रिसर्च संस्थान नई दिल्ली, अमेरीकन कैंसर रिसर्च इन्सीटीयूट, टाटा कैंसर रिसर्च एन्ड ऐनालेशीश डिपार्टमेंट, भगवान महावीर कैंसर रिसर्च संस्थान, श्री नवग्रह आश्रम कैंसर डाटा एनालिसीस एन्ड रिसर्च विंग जैसी कही संस्थाओं के 2022 के सभी आकंडो को जब मेने पढा और उनका मंथन किया तो कुछ ऐसे चोंकाने वाले आंकडे सामने आये जिनसे आने वाले समय में अगर सावधानी नही रखी गई तो यह बीमारी अपना रूप विकराल करने वाली है। जो नई रिसर्च हुई है उसमे इन कारणों को भी कैंसर के लिए जिम्मेदार माना गया है। जो सभी मिलाकर 10 प्रतिशत कैंसर के लिए जिम्मेदार कारण है।

अधिक मोटापा – आंत, स्तन, गर्भाशय और अग्नाशय का कैंसर मोटापे के कारण बढने लगा है, इसका मूख्य कारण आपके शरीर की कोशिकाओं में अधिक बेड कोलोस्ट्रोल बेड टोक्शीक्स और ऑक्सीजन का अभाव।

उसको यूं समजे की आप के शरीर के कुल अनुपात में शरीर में जहरीले तत्वों की अधिकता होने पर अंग की सक्रियता कि कमी और फेफडो द्वारा इतनी अधिक कोशिकाओं तक ऑक्सीजन कि आपूर्ति नही कर पाते क्योंकि आपके फेफडे कभी भी आपके शरीर के अनुपात में बड़े नही सकते है। अतः ऑक्सीजन कि कमी एक बडा कारण बनता है, यह खतरा तब और बढ जाता है। जब अधिक मोटापे वाले इन्सान महानगरो में कम ऑक्सीजन वाले क्षेत्रों में निवास करते है।

यह डॉ. वार बर्ग जिन्हे 1931 में नोबल प्राईज मिला उनकी खोज के आधार पर सर्वे किया गया। डॉ. वार बर्ग ने बताया था कि अगर 48 घंटे तक 35 प्रतिशत कम ऑक्सीजन अगर आपकी कोशिकाओं को मिलती है तो आपको कैंसर होने की संभावना 100 प्रतिशत बढ़ जाती है।

अधिक मिर्च, सोडा, मेदा, मांस, एसीड, सल्फर से बने डिब्बा बन्द आहार आजकल कि यूवा एंव किशोर पीढी के लोगो में सीधा बना बनाया डिब्बा बन्द भोजन (पेकेज फूड) को अधिक दिनो तक खराब होने से बचाने के लिए इन खाद्य पदार्थो में एसीड, सल्फर, समुद्री नमक, लाल मिर्च, रिफाईन्ड ऑयल, मेदा, मांस, सोडा जैसी घातक केमिकल यूक्त सामग्री प्रयोग की जाती है। और इनके सेवन से लिवर, किडनी, अमाशय, और आंतो के कैंसर बढ़ने लगे हैं।

शराब का निरन्तर और अधिक मात्रा में सेवन – व्यक्ति प्रारम्भ में दोस्तो के साथ सोकयाना शराब पीना शुरू करता है। और धीरे–धीरे उसकी आदत बनती जाती हैं इसके दो कारण है – उसका शरीर एडीक्टेड (नशे की निर्भरता) हो जाता है। और उस एल्कोहल के अधिक और निरन्तर उपयोग के कारण शरीर में ऐसे हार्मोन्स का अधिक बैलेन्स हो जाता है, जो द्रढ निर्णय लेने में समर्थ नहीं होते है यानी परीवार और मित्र तो शराब छोडने का आग्रह करते है परन्तु वह शराब पीने वाले व्यक्ति में शराब छोडने

या कम करने कि क्षमता नही रहती है। इसमें एक और पहलू भी है। शराबी की आर्थिक हालत कमजोर होने के कारण वह सस्ती शराब पिने लगता है जो उसके फेफड़ो, लिवर, बडी आंत, पेनक्रियाज और आमाशय में कैंसर पेदा कर देता है। यानी शराब का अधिक और निरन्तर सेवन कैंसर को निमंत्रण देना है।

पेरा बेगनी किरणे टेटू और केमिकल युक्त सोदंर्य प्रसाधन – आजकल वातावर्ण में बहुत अधिक प्रदुषण होने ओजोन परत के डिस्टर्ब होने हरीयाली के कम होने और नंगे बदन रहने की यानी शरीर के अधीकांश भाग को खुला रखने की फेसन और मानसिकता के चलते त्वचा कैंसर के चांस बहुत अधिक बढ गये है। केमिकल यूक्त मेहंदी, टेटू सिन्थेटिक सोदंर्य प्रसाधन सोडा और केमिकल यूक्त साबुन के उपयोग से भी त्वचा का कैंसर बढने लगा है। महानगरों में जहरीली गेसों का नमी वाले दिनो में त्वचा के सम्पर्क में आने से स्कीन कैंसर होने की संभावना अधिक बढ गई हैं।

कुछ और कारण

यह सच है कि कैंसर चिकित्सा के लिए रेडियेशन का उपयोग किया जाता है, लेकिन यह भी सच है कि लंबे समय तक रेडियेशन के कारण कैंसर भी हो सकता हैं। हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु विस्फोट के कारण न केवल जानमाल की हानि हुई, बल्कि उस क्षेत्र में रेडियेशन की अधिक मात्रा के कारण कैंसर प्रकोप भी अधिक बढ़ गया, खास करके स्तन, फेफड़े, बड़ी आंत, चमड़ी और खून का कैंसर। रेडियेशन के कारण उत्पन्न कैंसर के खतरे को कम करने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए :– जांच के लिए कम से कम एक्सरे कराने चाहिए। केवल जरूरत पड़ने पर ही एक्सरे कराएं। उन सभी जगहों में पूर्ण सावधानियां इस्तेमाल की जानी चाहिए जहां के वातावरण में अधिक रेडियेशन की संभावना है– जैसे कि अस्पतालों के रेडियोलॉजी विभाग में, उन प्रयोगशालाओं में जहां कि रेडियेशन से पूर्ण आइसोटोप उपयोग में लाए जाते हैं या उन कारखानों में रेडियेशन एनर्जी का प्रयोग होता हैं। गर्भावस्था में, खास करके

पहले तीन महीनों में, एक्सरे का उपयोग नहीं होना चाहिए, यह शिशु के लिए भी हानिकारक होता हैं।

धूम्रपान–खतरे में जान

पहले बताया जा चुका है कि कैंसर की उत्पति में तंबाकू सबसे ज्यादा खतरानक है। तंबाकू के सेवन से शरीर के कई अंगों में और भिन्न–भिन्न हिस्सों में कैंसर की उत्पति हो सकती है। फेफड़े के कैंसर का इसे सीधा संबंध है। रोज कितनी सिगरेट पी जाती हैं, कितनी लंबी अवधि से धूम्रपान किया जा रहा है, तंबाकू की किस्म आदि का कैंसर से सीधा संबंध है और रिसर्च द्वारा इसकी पुष्टि हो चुकी हैं।

यह सच है कि धुम्रपान करने वाले हर व्यक्ति को फेफड़े का कैंसर नहीं होता है और इसी तरह फेफड़े का कैंसर उन व्यक्तियों में भी होता है जिन्होंने अपने जीवन काल में कभी धूम्रपान नहीं किया है, परंतु सचाई यह है कि धूम्रपान करने से कैंसर का खतरा बहुत बढ़ जाता हैं।

धूम्रपान का निषेध, फेफड़े के कैंसर से बचने का सबसे बड़ा उपाय है।

यह भी जाना गया है कि वे व्यक्ति जो खुद धूम्रपान नहीं करते हैं, परंतु तंबाकू के धुएं को श्वास द्वारा अंदर लेते रहते हैं क्योंकि वे धूम्रपान कर रहे व्यक्ति के पास रहते हैं (जैसे कि सिगरेट पीने वाले व्यक्ति की पत्नी) उन्हें भी फेफड़े का कैंसर होने का खतरा होता हैं।

इसी प्रकार मुंह के कैंसर के न होने का या उसे कम करने का सबसे अच्छा उपाय है तंबाकू को मुंह के अंदर रखकर लंबे समय तक चबाने की आदत का न होना।

यह तथ्य इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमारे देश के उन हिस्सों में जहां तंबाकू खाने की आदत प्रचलित है (बिहार, मध्य प्रदेश, उतर प्रदेश) वहां मुंह का कैंसर काफी मात्रा में पाया जाता हैं। लेकिन पंजाब में जहां यह आदत कम है, मुंह का कैंसर बहुत कम मात्रा में पाया जाता हैं।

रासायनिक पदार्थ

एक लंबे से यह जाना गया है कि कई रासायनिक पदार्थों में ऐसे तत्व होते हैं जो कैंसर की उत्पति कर सकते हैं और इन रासायनिक पदार्थों को कारसीनोजन कहते हैं। कोलतार, संखिया, पारा ऐसे पदार्थ हैं जो कैंसर के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। जो व्यक्ति इन पदार्थों से काम करते हैं उन्हें इनसे बचने के उपायों का प्रयोग करना चाहिए।

यह सिद्ध हो चुका है कि अधिक चर्बी और कम फाइबर के सेवन से बड़ी आंत के कैंसर होने का खतरा बहुत बढ़ जाता है। इसके कारण का ठीक पता नहीं है, परंतु यह माना जाता है कि कम फाईबर के उपयोग से कब्ज हो जाती है और इसलिए मल बड़ी आंत में अधिक समय तक रहता है। मल में कुछ दूषित तत्व हमेशा मौजूद होते हैं जो कि बड़ी आंत में अधिक समय तक रहते हैं और खतरा पैदा कर सकते हैं। यही कारण है कि पश्चिमी देशों में जहां गाय का मांस अधिक और फल सब्जियों का सेवन कम किया जाता हैं, बडी़ आंत का कैंसर अधिक मात्रा में देखा जाता है और एशिया, अफ्रीका में जहां मांसाहारी भोजन का उपयोग कम और शाकाहारी भोजन का उपयोग अधिक किया जाता है, बड़ी आंत का कैंसर कम देखा जाता हैं।

जापान, कोरिया, फिलीपीन्स आदि देशों में जहां सीधे आग पर भुनी हुई मछली का सेवन अधिक किया जाता है वहां आमाशय का कैंसर भारी मात्रा में पाया जाता हैं।

यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि भोजन में कृत्रिम रंग की मात्रा कम से कम डाली जानी चाहिए और हमें मिर्च मसालों का उपयोग अधिक नहीं करना चाहिए।

हार्मोन्स के साथ छेड़ छाड करना

(1) अविवाहित महिलांए (2) महिलाएं जिन्होंने बच्चों को जन्म नहीं दिया हो, (3) प्रथम बच्चे का जन्म तीस साल की आयु के बाद हुआ हो (4) माहवारी एक लंबे समय तक चलती रही हो, यानी

माहवारी छोटी अवस्था में आंरभ हुई और दीर्घ अवस्था तक चलती रहे।

उपरोक्त अवस्थाओं में हार्मोन्स का संतुलन बिगड़ जाता है और इससे स्तन कैंसर की उत्पति हो सकती है। हारमोंस के असंतुलन से स्त्रियों के स्तनों में फाइब्रोसिस्टिक बीमारी भी हो सकती है और यह बीमारी कैंसर में बदल सकती है। पुरूषों में प्रोस्टेट का कैंसर भी हार्मोन्स के असंतुलन के साथ जोड़ा जाता हैं।

कैंसर होने पर सामान्य लक्षण

मल–मूत्र की आदत में बदलाव, जैसे कि कब्ज या पतले दस्त का होना, यह बड़ी आंत के कैंसर की और इशारा करता हैं।

इसी प्रकार से पेशाब की आदत में बदलाव– जैसे कि बार–बार पेशाब का आना, धार का पतला होना, पेशाब का रूक जाना, पेशाब में खून का आना आदि मूत्राशय के कैंसर की और संकेत करता हैं।

जख्म का ठीक न होना

शरीर के किसी भी भाग में अगर कोई जख्म या घाव दो सप्ताह के ईलाज के बावजूद भी ठीक नहीं होता है तो चेतावनी समझना चाहिए कि यह साधारण जख्म नहीं हैं।

असामान्य खून या पानी का बहना

मल, मूत्र, खांसी या उल्टी के साथ खून का बहना, गर्भाशय या स्तन में से खून या पानी का बहना, पूर्ण डाक्टरी जांच कराने के लिए चेतावनी संकेत हैं।

स्तन या शरीर के किसी अन्य भाग में सूजन या गांठ का होना

शरीर के किसी भी हिस्से में, खासकर महिलाओं के स्तन में सूजन या गांठ का होना या स्तन के चूचक में से खून या पानी का बहना, चूचक के आकार का बदल जाना, विशेषज्ञ से परामर्श किए जाने के लिए संकेत हैं।

मस्से या तिल में परिवर्तन

हम सभी के शरीर पर कहीं ना कहीं मस्से या तिल होते हैं, परंतु अगर इनमें से किसी में बदलाव दिखाई दे, चाहे वह उसके आकार, रंग या रूप में हो या उसमें से रक्त निकलता हो या वह

खुरदरा या सख्त बन गया हो तो उसके कैंसर में बदल जाने की संभावना को ध्यान में रखते हुए डॉक्टरी जांच करानी चाहिए।

निरन्तर खांसी का होना या आवाज का बदलना

खांसी जो ईलाज के बावजूद एक लंबे समय तक रहती है, कैंसर का चेतावनी संकेत हो सकता है और इसकी पूरी जांच करवानी चाहिए।

इसी प्रकार आवाज का बदल जाना और तीन सप्ताह के ईलाज के बाद भी उसका ठीक नहीं होना, कैंसर की संभावना की और संकेत करता हैं।

इनके अतिरिक्त, कुछ सामान्य लक्षण हैं जो कैंसर के मरीज में देखे जा सकते हैं – वजन का कम होना, और इसका कोई कारण मालूम न होना, लगातार बुखार आना, थकावट रहना, शरीर के किसी हिस्से में दर्द का होना, चमड़ी में बदलाव का होना।

कैंसर रोग में आहार (भोजन)

कैंसर और हरी सब्जियां

जैसा की कैंसर चिकित्सा में रोगी के आहार और दिनचर्या का बहुत महत्व होता हैं। रोगी जो भी आहार सामग्री लेता हैं, उसका रस निर्माण होकर उस से रक्त का निर्माण होता हैं और क्रमशः मांस, चर्बी, अस्थि, बोनमेरो और शुक्र व रज निर्माण के साथ ओज का निर्माण होता हैं।

कुछ सब्जियां कैंसर रोग को ठीक करने में बहुत महत्वपुर्ण भूमिका अदा करती है, इस सब्जियों में कुछ ऐसे विशेष औषधीय तत्व होते है जिनमें ना सिर्फ कैंसर ठीक होने में मदद मिलती हैं बल्कि कैंसर पुनः ना हो ऐसा भी शरीर क्रिया विज्ञान का सिद्धान्त प्रमाणित करता है। कैंसर रोगी को हरी सब्जियों का अधिकाधीक सूप बनाकर सेवन करना चाहिए और सामान्य तया जैसे सब्जी बनाते है, वैसे भी बनाकर खाना चाहिए। रोगी के परिवारजनों को यह कोशिश करनी चाहिए की सब्जियां अपने खेत पर या अपने आंगन में और अपने छत के गमलों में उगाए और अगर ऐसा किसी भी हालत में संभव नहीं होने पर सब्जी मंडी से सब्जियां खरीदकर घर लाते ही उन्हें उबलते हुए पानी में

डालकर पानी को आंच से निचे उतार दे और 8–10 मिनट तक पानी में पड़ी रहने दें, बाद में पानी को फेंक दे। इस क्रिया से सब्जियों के जहर की 25% मात्रा ओसमोसीस क्रिया के माध्यम से कम हो जाती हैं, सब्जियों को काटकर बनाने से पूर्व भी गर्म पानी वाला प्रयोग करना काफी लाभप्रद रहता हैं।

अब बात करते हैं उन विशेष प्रकार की सब्जियों की जिनके सेवन से कैंसर जल्दी ठीक होता हैं और शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी होता हो। श्री नवग्रह आश्रम की रिसर्च टीम इन सब्जियों के सेवन पर विशेष जोर देती है।

टमाटर– लाल और हरा टमाटर कैंसर रोगी को बहुत ही लाभ प्रदान करता हैं। टमाटर में पाया जाने वाला लाल रंग प्रोस्टेट कैंसर सहीत ब्लड कैंसर और आंतो के कैंसर में बहुत लाभप्रद है। टमाटर में लाईकोपीन नाम का एक ताकतवर एंटीऑक्सीडेन्ट फाईटो केमिकल होता है। इसके साथ टमाटर में विटामीन और खनीज तत्व मिलते है, जो कैंसर को हराने में सक्षम हैं।

हल्दी – कैंसर रोगी अगर कच्ची हल्दी का सेवन करता हैं तो, उसे फाइबर के साथ करक्युमीन तत्व पाया जाता है। इसके सेवन से रोगी के शरीर में कैंसर कोशिकाओं को मारने की क्षमता कई गुणा बढ़ जाती हैं, हल्दी पाउडर में भी प्रयाप्त मात्रा में करक्युमीन पाया जाता है। इसे गौमूत्र के साथ लेने से इसके गुण 4 गुना बढ़ जाता हैं। NCBI कि प्रकाशित रिपोर्ट में हल्दी को सुपर एंटीऑक्सीडेंट और एंटीइलेमेटरी गुण के कारण यह हल्दी रक्त कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर, लंग्स कैंसर, गेस्ट्रोइंटेस्टाईन कैंसर में बहुत लाभप्रद हैं।

मूंग – मूंग की हरी फलीयां एवं मूंग साबूत और इसके छिलके सहीत दाल में फेनोलिक एसीड और एथोंसायनिन तत्व होने के कारण कैंसर जल्द समाप्त होता हैं। मूंग की फली एवं दाल और दानों में एन्टीऑक्सीडेंट तत्व के साथ एन्टी कैंसर प्रोपर्टी होती हैं।

ब्रोकली – ब्रोकली ठण्डे प्रदेशो में पैदा होने वाली एक चमत्कारी हरी सब्जी है, जो सब्जी है, जो सलाद और सब्जी दोनों रूपों में खाई जाती हैं। ब्रोकली में सल्फोरा फेन नामक एक फाईटो केमिकल का योगीक होता है, जो प्रोस्टेट कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर,

माउथ कैंसर में ब्रोकली की सब्जी और सलाद से बहुत फायदा होता हैं। विटामीन K. और विटामीन C. का भण्डार हैं।

गोभी – गोभी परिवार की सम्पूर्ण सब्जियां कैंसर के खिलाफ लड़ने की क्षमता पैदा करती हैं, फूल गोभी के अन्दर PEITC नाम एंटी कैंसर तत्व होता हैं। पत्ता गोभी गांठ गोभी में भी एंटी कैंसर प्रोपर्टी होती हैं।

गाजर – गाजर में विटामीन्स और एंटीऑक्सीडेंट पाये जाते हैं। गाजर सम्पूर्ण विश्व में आसानी से मिलने वाली केन्द्र रूपी सब्जी हैं, जो सलाद और सब्जी दोनों ही रूपों में सेवन की जाती हैं। इसमें विटामीन A, विटामीन K और बिटा केरोटीन का एक बहुत अच्छा श्रोत हैं प्रोस्टेट और पेट के कैंसर में इसका नियमित सेवन करने पर मात्र 3 माह में कैंसर में 25% की कमी देखी गई। यह रिसर्च बड़े पेमाने पर की गई हैं।

लहसुन – लहसुन के बारे में लोगों की यह धारणा हैं कि इसके सेवन से कोलेस्ट्रॉल कम होता हैं, बी.पी. सामान्य होती हैं और इसके सेवन से चर्मरोग कम होते हैं। हां ये तीनों ही धारणाऐ बिल्कुल सही हैं, परन्तु लहसुन कैंसर रोगीयों के लिए एक रामबाण औषधी भी हैं। इसमें बहुत अच्छी लाभकारी फोर्म में सल्फर पाया जाता है, जो इम्युन सिस्टम को मजबूत बनाने का काम करता हैं। इसमें पाये जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट और सल्फर कैंसर ट्यूमर को बढ़ने से रोक देते हैं।

पालक और मेथी पत्ते – पत्तेदार हरी सब्जियों में पालक व मेथी के पत्तों में प्रयाप्त मात्रा में लोह तत्व होने से रोगी का हिमोग्लोबीन बहुत अच्छी गति से बढ़ता हैं। पालक और मेथी में प्रोटीन, आयरन, मेग्नीशियम, पोटेशियम और केल्शियम जैसे पोषक तत्वों के साथ–साथ विटामीन A. भी मिलता हैं। इन पत्तोवाली सब्जियों से पाचन क्रिया भी बहुत अच्छे से होती है। कब्ज समाप्त होती हैं।

षकरकन्द – बहुत आसानी से मिलने वाला यह कन्द स्वादिष्ट होने के साथ–साथ सर्व सुलभ और सस्ता भी हैं, परन्तु इसके औषधीय गुणों का कोई मुकाबला नही है। इसमें पर्याप्त मात्रा में स्टार्च होता हैं, इसमें प्रॉटीन, विटामीन C., विटामीन B6, विटामीन A., पोटेशियम व मेग्नीशियम होने से कैंसर रोगी को बहुत लाभ

प्रदान करता है। शकरकन्द ब्रेस्ट और फेफड़े के कैंसर में बहुत ही अच्छे परिणाम देता हैं।

कैर सांगरी – राजस्थान में कैर के पेड़ पर लगने वाले कच्चे केरीये (ढ़ालु), कैर के फल और खेजड़ी की फलीयां जिसे सांगरी कहा जाता हैं इन दोनों को राजस्थान में सुखाकर सम्पूर्ण विश्व में निर्यात किया जाता है। ये दोनों ही सब्जियां एक साथ बनाई जाती हैं, इसके सेवन से रोगी के शरीर में प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता हैं। कब्ज समाप्त होती हैं। इसमें एंटीऑक्सीडेंट तत्व पाये जाते हैं।

रतालु, गराडु – ये दोनों ही प्रकार के जमीकन्द बहुत ही अच्छे किस्म के फाइबर वाले होते हैं और रतालु एवं गराडु कन्द में उत्तम प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट पाये जाते हैं। रतालु से बड़ी आंत, थाइराईड और रेक्टम कैंसर में बहुत लाभ होता हैं। इसे न्यूट्रीशियन, डाईनामाईट भी कहा जाता है। इसे कुछ क्षैत्र में पिंडालु भी कहा जाता हैं। इसमें कार्बोहाईड्रेट 25% विटामीन A, B, फोलिक एसीड, पोटेशियम, बिटा कैरोटीन होने से कैंसर को जल्दी ठीक करने की क्षमता होती हैं।

अतः मैं सभी कैंसर रोगियों को सलाह देता हूं कि, ये सब्जियां आपकी प्राथमिकता पर होनी चाहिऐ मात्र इन सब्जियों के नीयमित सेवन करने से आप 15% कैंसर को अतिरिक्त तेजी से समाप्त कर लेते हैं।

बैंगन – अभी हाल के वर्षो में वैज्ञानिकों ने कैंसर कोशिकाओं के विस्तार को रोकने के लिए सोलनम बायो एक्टीव योगीको की पहचान की हैं, जो अच्छे कारगर परिणाम देने में सफल रहे हैं। बैंगन का बोटनी नेम सोलानम मेलोन्गेना हैं। इसमें आयरन की मात्रा भी अतिरिक्त पाई जाती हैं। अतः ब्लड कैंसर के रोगियों में यह विशेष लाभप्रद पाया गया हैं।

मैं आप सभी पाठकों से एक निवेदन करना चाहता हूं कि हरी सब्जियों से कैंसर कि तिव्रता को निश्चित रूप से नियंत्रित किया जा सकता हैं। क्योंकि पुरे विश्व में वैज्ञानिकों ने 5 से अधिक प्रकार के ग्लाईको एल्कलाईड योगीकी पता लगाया हैं जिनमें

सोलनिन, चाकोनिन, सोलासोनाईनिन, सोला मार्गिन और टेमेटिन जैसे बहुत असरदार योगीकी के अलावा बिटा केरोटीन कई विटामीन जैसे A, K, B भी कैंसर के खिलाफ लड़ाई लड़ने में अपना योगदान देते हैं।

अतः आप इनका उपयोग सूप के रूप में, सलाद के रूप में (आहार के रूप में) करके कैंसर को हरा सकते हैं और कैंसर से जीत सकते हैं।

कैंसर चिकित्सा में फलों का महत्व

कैंसर रोग के ईलाज में जितना महत्व परहेज का हैं, उतना ही महत्व फल, सब्जियों और जौ आहार रोगी ग्रहण करता हैं, उसका भी है। रोगी द्वारा वैसे तो हरी सब्जियां फल, दूध और कई प्रकार के पोष्टिक आहार का सेवन किया जाता हैं परन्तु मैं आपको कुछ विशेष गुणों वाले फलों के बारे में बताने जा रहा हूं। जो फल विशेष रूप से एन्टीऑक्सीडेन्ट गुणों के कारण विशेष औषधिय गुणों के कारण कैंसर रोगी को यथा सम्भव खाने चाहिए या उनका ज्यूस बनाकर पीना चाहीये।

इसके पिछे 4 प्रमुख कारण हैं, फल पाचन में आसान होते हैं, फलों में भूख बढ़ाने की क्षमता होती है और मैं अन्य भोज्य सामग्री की तुलना में जहरीले तत्वों की मात्रा कम होती हैं। इसके साथ फलों में प्रयाप्त मात्रा में फाइबर होते हैं इन फाइबर के कारण रोगी को कब्ज सहित पेट और पाचन की परेशानियों से छुटकारा मिलता हैं।

इस श्रंखला में सर्वप्रथम में सलाह दुगां 1. जामून जैसा **ब्लु बेरी**– यह फल अपने में कई प्रकार की एन्टीकैंसर प्रोपर्टी रखते हैं यह एन्टीऑक्सीडेन्ट होने के साथ–साथ इसमें कई फाईटो केमिकल होते हैं जो हमारी कोशिकाओं के DNA परिवर्तन को रोकते हैं यानी कैंसर को पुनः पैदा नही होने देने में और सामान्य लोग जिनको कैंसर नही हैं, उनको यह फल बचाता हैं।

यह जामून जैसा दिखता जरूर हैं पर, इसमें मीठास अधिक होता हैं, इसे हिन्दी में नील बदरी भी कहा जाता हैं। इसमें भरपूर मात्रा में फाइबर होता है, विटामिन सी, विटामिन के और मेगनीज पर्याप्त मात्रा में पाया जाता हैं इस फल को 100 ग्राम प्रतिदिन खाने की सलाह देता हूं। इसके सेवन से मोटापा भी कम होता है। तनाव कम करने में भी यह फल मदद करता है।

2. **अनार**– आमतोर पर आप सभी जानते हैं कि अनार के सेवन से आपके शरीर में रक्त का निर्माण तेजी से होता है। अनार में ऐसे एन्टीऑक्सिडेन्ट पाये जाते हैं, जिनमें कार्बनडाइ गैसो का दुषप्रभाव जो हमारी कोशिकाओं को होता हैं, उन कोशिकाओं की रिपेयरींग अनार के सेवन से होती हैं। कैंसर रोगी का पाचन प्रभावित होने से जा ए.डी.एल. कोलोस्ट्रॉल के विपरीत प्रभाव को अनार का रस समाप्त करता हैं। इसमें बहुत अच्छी मात्रा में एन्टी कैंसर प्रोपर्टी होती हैं। अनार का सेवन हमारे शरीर से टॉक्सिन यानी जहरीले तत्वों को शरीर से बाहर निकालता हैं। अनार का सेवन करते समय दानों को चबाना चाहिये क्योंकि इसमें पर्याप्त मात्रा में फाइबर होता हैं, विटामिन सी और कई उपयोगी खनिज लवण पाये जाने के कारण नई कोशिकाओं का निर्माण गुणवत्ता पूर्ण एवं तेजगति से होता हैं।

3. **अंगूर –** अंगूर के फल में और बीज में भारी मात्रा में एन्टी कैंसर प्रोपर्टी होती है। वैज्ञानिको ने रिसर्च से प्रमाणीत किया हैं कि, पोमेलो साइट्रस फलों के गुदे में बायो एक्टिव कपांउड बर्गमोटिन पाया जाता हैं इंटरनेशनल मॉलिक्यूलर सांईसेज की प्रकासित रिपोर्ट के अनुसार अगुंर एंटीऑक्सिडेंट, एंटी इफ्लेमेटरी और एन्टी कैंसर गुणों के कारण मल्टीपल मायलोमा, ब्रेस्ट कैंसर, प्रोस्टेट कैंसर, लिवर कैंसर, फेफड़े के कैंसर, स्किन कैंसर इन सभी कैंसर में लाभदायक हैं। इसके सेवन से रोगी की भूख भी बढ़ती हैं और पाचन क्रिया में भी सुधार होता हैं।

4. **सेब** – इस फल में पर्याप्त मात्रा में फाइबर, पोटेशियम, विटामिन सी. और 3–4 प्रकार की एन्टी कैंसर प्रोपर्टी पाई जाती हैं। सेब के रस का सेवन करने से पाचन संस्थान में सुधार होता हैं, अतः कैंसर रोगी सेब फल को अपने डाईट चार्ट में आवश्यक रूप से शामिल करें।

5. **संतरा –** खट्टे फलों की श्रेणी में आने वाला यह फल कैंसर रोग का दुश्मन माना जाता हैं, इसमें विटामिन सी. पर्याप्त मात्रा में होने के साथ फोलेट, थायमिन और पोटेशियम भी पाया जाता हैं, इन तत्वों के अलावा कई खनीज लवण और आवश्यक पोषक तत्व संतरे में होते हैं, जो एन्टी ऑक्सिडेंट होने के साथ एन्टी कैंसर प्रोपर्टी भी रखते हैं।

6. **कैला –** गले और मुंह के कैंसर रोगीयों के लिए निगलने में आसान होने के साथ इस में कैंसर से लड़ने के लिए विटामिन B6, मेगनीज, विटामिन सी. के साथ पेक्टिन नामक फाइबर होता जो कैंसर को जल्दी समाप्त करने में अपना योगदान देते हैं। कैंसर रोग से जो बार–बार दस्त होती हैं, उसको रोकने में भी यह फाइबर मदद करता हैं।

7. **स्ट्रॉबेरी** – स्ट्रॉबेरी भले ही महंगा फल हैं परन्तु, इसके गुण कैंसर को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसमें पाये जाने वाले विटामिन सी., पोटेशियम, मेगनीज, फालेट और एन्टीऑक्सिडेंट तत्व पाये जाते हैं जिसके कारण पेट व आंतो के कैंसर में स्ट्रॉबेरी विशेष लाभ प्रदान करती हैं।

इसके साथ–साथ जामून, नाशपत्ती, अमरूद और निबूं जैसे फल भी कैंसर को ठीक करने में मददगार होते हैं।

सब्जियों से चिकित्सा

अब इन सब्जियों से बन सकती है कैंसर की दवाईयां, रिसर्च में हुआ चौंकाने वाला खुलासाः–

कैंसर दिनों दिन लोगों के लिए काल बनता जा रहा हैं। हर साल कैंसर से दुनिया भर में 96 लाख लोगों की मौत हो रही हैं। साल 2020 में कैंसर करीब दो करोड़ नए मामले सामने आए थे।

कैंसर आज दुनिया का सबसे गंभीर बीमारी बन चुका है। इससे होने वाली मौत कि आंकड़े भी काफी डरावने हैं। साल 2020 में दुनियाभर में कैंसर से करीब एक करोड मौतें हुई थीं। वहीं भारत की बात करें तो 159 लोगों की मौत कैंसर की वजह से हर घंटे हो रही है। इन आंकड़ों के जरीए कैंसर की गंभीरता

को हर कोई समझ सकता है। ऐसे में कैंसर के ईलाज के लिए दुनियाभर के वैज्ञानिक नए–नए रिसर्च करते रहते हैं। हर रिसर्च में एक नई बात सामने आती हैं।
वहीं अब पौलेंड के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में बताया कि आने वाले समय में सब्जियों से कैंसर की दवांए बनाई जा सकती हैं। शाधकर्ताओं ने सोलनम जीन वाले पौधों में ऐसे बायोएक्टिव यौगिकों की पहचान की हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक, इस यौगिक की मदद से कैंसर के ईलाज के लिए नई दवाएं बनाई जा सकती हैं कैंसर पर किया गया यह शोध 'जर्नल फ्रंटियर्स इन फार्माकोलॉजी' में प्रकाशित किया गया हैं।
कैंसर पर किया गया यह रिसर्च प्रोफेसर मैग्डालेना विंकील के नूतृत्व में पालैंड के पोजनैन स्थित 'एडम मिकीविक्जि यूनिवर्सिटी' के शोधकर्ताओं ने किया है। शोधकर्ताओं ने ग्लाइको अल्कलॉइड नामक बायोएक्टिव यौगिकों की समीक्षा की है। बता दें कि यह यौगिक टमाटर, आलू जैसी सब्जियों में पाया जाता है। रिसर्च में ये बात सामने आई है कि इस यौगिक से कैंसर का ईलाज संभव हो सकता हैं।
शोध में ये बात सामने निकलकर आई है कि ग्लाइको अल्कलॉइड कैंसर कोशिका की वृद्धि को रोकने और कैंसर कोशिका को खत्म कर सकता है। शोधकर्ताओं ने इस रिसर्च में 5 ग्लाइको अल्कलॉइड यौगिक– सोलनिन, सोलासोनाइन, चाकोनीन, टोमैटिन और सोलामार्गिन का अध्ययन किया है। शोधकर्ताओं के मुताबिक, कई पौधे ऐसे हैं जो जहरीले होते हैं। हालांकि, सही खुराक जहर को भी दवा में परिवर्तित कर सकता है। वैज्ञानिकों को अगर अल्कलॉइड की एक सही खुराक मिल जाए तो इसकी मदद सो कई बीमारियों के लिए दवाई बनाई जा सकती हैं।

कैंसर चिकित्सा श्री नवग्रह आश्रम मॉडल

कैंसर की बीमारी आज विश्व व्यापी समस्या बन चुकी है। यह कब महामारी घोषित की जाऐगी मात्र इसकी औपचारिक घोषणा होना बाकी हैं। इस बीमारी के कारणो पर बहुत कुछ इस पुस्तक में विस्तार से लिखा जा चुका है। कैंसर अब घर–घर की कहानी

बन चुका हैं। पहले मैं कहता था, हो सकता है कैंसर आपसे चार कदम दुर हो, परन्तु अब मैं अनुभव कर रहा हूँ, की शायद कैंसर आपसे एक कदम के फासले पर ही कहीं खड़ा हो। इसकी भया वहता इतनी अधिक दर्दनाक और जानलेवा होती जा रही है। इस कैंसर को ठीक करने के लिए पुरी दुनिया भर के वैज्ञानिक, डॉक्टर, वैद्य, रिसर्चर, गुणीजन हकीम लगे हुऐ है और सभी का उद्‌देश्य एक ही है की जैसे तैसे कैंसर मुक्त विश्व का निर्माण हो पाये, पर यह अभी दुर की कोड़ी जैसा ही दिख रहा है, क्योंकि जब तक तम्बाकू, शराब, मांस आहार, सफेद नमक, पेस्टी साइड का निर्माण पैदावार, प्रसंस्करण, विक्रय और उपभोग बन्द नही होगा यह स्वप्न ही रहेगा।

दुनिया में जितनी भी पैथीज है, उनमें सब दावे करते है, जितने लोग उतनी कहानियाँ, उतना ही भटकाव। कैंसर जब किसी परिवार के सदस्य को होता है, तब सभी परिवार वालों के सोचने की शक्ति बन्द सी हो जाती है, उस समय सर्वप्रथम लोग ऐलोपेथी की और भागता है और उसमें भी सरकारी नही प्राइवेट चिकित्सालय उसे आकर्षित करते है, वह कई दिनों तक होने वाली जाँचे पर जाँचे, सभी हॉस्पिटल का अपना प्रोटोकॉल, अपनी ही जाँचों को सही मानने के पिछे अपना खुद का लोभ चाह पूर्व की जाँच कुछ घंटे पहले की ही हो। ऐसे समय कैंसर रोगी के परिवार वाले सही जानकारी के अभाव में अपनी कमाई के पैसो से तो हाथ धौ ही बैठते है, साथ में रोगी भी नही बच पाता है और जब वही परिवार किसी रोगी के कैंसर को मात देने की खबर सुनता है की, उस कैंसर विजेता को भी वही कैंसर था, जो उनके परिजन को था। वह परिवार अपने को ठगा सा महसूस करता है। ये सब होता हैं:– अल्प जानकारी, अल्प ज्ञान, घबराहट में मैनेजमेंट नही कर पाना, पड़ोसीयों, रिश्तेदारों और परिवार वालों का अज्ञानता पूर्ण इमोशनल दबाव। ऐसी स्थिति में मैं मेरी कैंसर क्लास में लोगों को पिछले 8–9 वर्षो से यही समझा रहा हूँ की, कैंसर कोई तूफान या भूकंप नही है, जो इसका पता चलते ही पुरा का पुरा परिवार इससे घबरा जाऐं और सही–गलत, अच्छे–बुरे, उचित–अनुचित का फैसला करने में आप अपना 100% नही दे पाऐं और एक गलत निर्णय आपके रोगी के जीवन और

आपके बैंक बैलेंस दोनों ही के लिए यह खतरनाक शाबित हो जाए।

अब आप मैरी बात समझ गये होंगे की, ऐसे समय में क्या करना है। मैं आपको बताता हुँ, आपको इस मैनेजमेंट को पांच भागो में बांटकर देखना चाहिए–

1.आप अचानक भागम–भाग की बजाए एक सिद्धान्त को समझे, बीमारी धीरे–धीरे आती है और धीरे–धीरे ही ठीक होती है, जबकि ऐक्सीडेन्ट एक दम होती है और इलाज की आवश्यकता भी एक दम होती हैं। कैंसर बहुत कमजोर बीमारी है, घबराहट की बजाए शान्त चित्त से, किस पेथी और किस संस्थान के परिणाम सर्वोत्तम है, उसका चयन करें। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ की, इस बारे में श्री नवग्रह आश्रम के परिणाम ना सिर्फ सर्वोत्तम है बल्कि सबसे कम पैसे या गरीबों के लिए निःशूल्क इलाज भी हैं। एक माह का अधिकतम खर्च उसे चार हजार रूपये से अधिक नहीं है।

2.आपके मरीज की हालत कैसी है, क्योंकि बहुत सी बार आप रोगी को एक हॉस्पिटल से दुसरे हॉस्पिटल, एक पेथी से दुसरी पेथी में लेकर भागना शूरू कर देते है। ऐसी हालत में रोगी की हालत बहुत नाजुक हो जाती है, कीमो, रेडिएशन, सर्जरी करवाते–करवाते रोगी अण्डरवेट होने के साथ बहुत कमजोर हो जाता है। उसका हिमोग्लोबीन भी बहुत कम हो जाता है। ऐसी हालत में मैं आपको सलाह देता हूं कि, आप रोगी को ऐलोपेथी में और अधिक कष्ट देने की बजाए आयुर्वेद को अंगीकार करें और नवग्रह आश्रम जैसी संस्था का सहारा ले, जहां आपको उचित सलाह और बिना लोभ लालच के सही सलाह दी जाती हैं।

3.रोगी स्वयं क्या चाहता है, इस बात का बहुत महत्व है। क्योंकि रोगी का मन जिस पेथी या जिस डॉक्टर के प्रति अधिक विश्वास करता है, उसके अपने फैसले में वो स्वयं असहज महसूस नही करेगा और मानसिक मजबुती उसको जल्दी ठीक होने में मदद करेगी। वो जिस पेथी और डॉक्टर की बात कह रहा है, हो सकता वह सही हो तो आप उसकी बात को प्राथमिकता देने का प्रयास करें। हां अगर उसकी जानकारी अगर कमजोर या गलत हैं तो आप उनको सम्पूर्ण जानकारी सही–सही बताकर उसको आप

द्वारा सुजाए जा रहे केन्द्र के लिए आप अपने विवेक से उसे सोशल मीडिया, युट्यूब की सामग्री की प्रमाणीकता आप वहां से लाभ प्राप्त लोगों से जानकारी ले सकते है या आप चाहे तो रोगी की चिकित्सा प्रारम्भ करने से पूर्व आप उस केन्द्र तक पहुंचकर या अपने किसी विश्वसनीय मित्र के द्वारा जारकारी लेने के बाद रोगी को वह सब जानकारी दें, रोगी को पुरे विश्वास में ले। मेरा ऐसा मानना है कि नवग्रह आश्रम आपके इस बिन्दू पर 100% खरा उतरता हैं।

4. किसी भी कैंसर चिकित्सा करने वाले संस्थान पर कार्यरत डॉक्टर (वैद्य) कितने योग्य है, उनको प्रतिदिन कितने रोगी देखने का अनुभव है। उनकी शिक्षा का स्तर क्या हैं। उस संस्था के पास बेसिक रिसर्च कार्य का कितना अनुभव है। उस संस्थान के पास अपना कितना आधारभूत हैं। उस संस्थान द्वारा दि जाने वाली उसकी पेथी के बेसिक सिधान्तो के साथ खरी उतरती हैं या नहीं। इन सभी बिन्दूओं को अगर हम श्री नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान के परिपेक्ष में देखें तो यहां चार डॉक्टर हमेंशा आपकी सेवा में रहते है। यहां प्रत्येक माह करीब 8–10 हजार पुराने और नये रोगी चिकित्सा हेतु आते हैं। इसमें कैंसर के करीब 6 हजार रोगी होते है। इतने रोगियों की चिकित्सा करने के कारण अनुभव बहुत गहरा हो जाता है। आश्रम के चिकित्सक इस माप दण्ड पर बिल्कुल खरे उतरते है। नवग्रह आश्रम की अपनी बहुत बड़ी रिसर्च टीम है, जिसमें कही डॉक्टर, बोटनी प्रोफेसर, वैद्य, साइंटिस्ट रोगी उनके परिजन आदि आश्रम के स्टेटीशियन के संम्पर्क में रहते है और इस रिसर्च का निचोड़ कैंसर रोगी को विश्वास करने के लिए पर्याप्त है। भारत में कैंसर चिकित्सा के नाम पर किराणे की दुकानो की तरह पता नही किन–किन बड़े वैज्ञानिकों के नाम पर आयुर्वेद की ABCD नही जानने वाले लोगों के आयुर्वेद के नाम से ऐलोपेथी में बिना ओंकोस्पेश्लिस्ट के कैंसर चिकित्सा करना सब कैंसर रोगियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा हैं।

5.कैंसर एक बार ठीक होने के बाद, दौबारा पुनः नही लोटे जिसे सामान्य भाषा में रिकरेन्स होना कहते है, ऐलोपेथी स्वयं यह स्वीकार करती है कि, कीमो के 6 माह बाद, रेडिएशन

के 9 माह बाद और सर्जरी के बाद 1वर्ष के भीतर–भीतर कैंसर रिकरेन्स होता है। एक बार रिकरेन्स होने के बाद रोगी शरीर और धन दोनों ही मोर्चो पर असहाय हो जाते है। मैं पूर्ण विश्वास से कह सकता हूँ की, आयुर्वेद से कैंसर ठीक होने के बाद रिकरेन्स की संभावना नही के बराबर रहती है। श्री नवग्रह आश्रम सेवा संस्थान का रिकॉर्ड बहुत अच्छा है, अब तक ठीक हुए हजारों लोगों के इन्टरव्यू हमारे चेनल पर मौजूद है और लाखों रोगियों का डाटा हमारे पास मौजूद है।

अतः आप आँख बन्द करके श्री नवग्रह आश्रम पर विश्वास कर सकते हैं।

कैंसर ठीक होने का महत्वपूर्ण कारण-मोटिवेशन

कही लोगों की ऐसी धारणा हैं की, कैंसर केवल औषधी से ही ठीक होता हैं। मैं ऐसा नही मानता हूँ की केवल औषधी ही कैंसर को ठीक करती हैं, बल्कि कई ऐसे कारण और भी हैं, जो कैंसर को जल्दी ठीक करते हैं जैसे–

मोटिवेशन– कैंसर रोग की चिकित्सा करने वाले सभी चिकित्सकों से मेरा अनुरोध हैं कि, आप चाहे आयुर्वेद के चिकित्सक हैं या ऐलोपेथी के डॉक्टर हैं या नेचुरोपेथी से डॉक्टर हैं, मैं मेरा निजी अनुभव बता रहा हूं की कैंसर रोगी को अगर आप मोटिवेशन देते हैं, तो वह बहुत जल्दी ठीक होने लगता हैं, इसके पीछे उसके शरीर में पैदा होने वाले कई हार्मोन्स और केमिकल हैं, जो उसके भय रहित होने और प्रसन्नचित होने से उसके शरीर में ऑक्सिटॉसीन और डोपामाइन नाम के रसायनों का निर्माण होता हैं और इन दोनों को एन्टी कैंसर रसायन माना गया हैं। यह तो हुआ इसका वैज्ञानिक कारण। अब मन जब मजबूत होता हैं, तो रोगी अपनी दिनचर्या को अनंद और सक्रियता से प्रारम्भ करके निरन्तर उत्तम हालत में लाना चाहता हैं। क्योंकि दुनिया में कोई भी प्राणी मरना नही चाहता हैं, नही मरने की इच्छा को मोटिवेशन संजीवनी जैसी औषधी का कार्य करता हैं। मन के हारे हार हैं, और मन के जीते जीत जैसी कहावते यूं ही नही बनी हैं। हिम्मते मर्दा मदद ए खूदा कहावत भी इसी मोटिवेशन थैरेपी का हिस्सा हैं।

मैने पिछले 8 वर्षो के चिकित्सा अनुभव में कैंसर रोगियों के परिजनों और स्वयं रोगियों द्वारा यह कहते सुना हैं और लोगों को इस मोटिवेशन के लिए कई बार कैंसर क्लास में आते और बैठकर सुनते देखा हैं। रोगी ऐसा कहते हैं कि यह कैंसर क्लास औषधी से भी अधिक फायदा करती हैं, क्योंकि हम औषधी लेना ही तब शुरू करेंगे जब हम पूर्णरूपेण अपने मन में यह विश्वास स्थापित कर लें की मुझे जीना क्यों जरूरी है। मुझे जो मोटिवेशन दिया जा रहा हैं। वह मैरी भलाई के लिए है, इसमें आश्रम का अपना कोई नीजी स्वार्थ नहीं हैं, आश्रम तो स्पष्ट कहेता हैं, औषधी आप चाहे तो अपने घर बना सकते हैं, आपको आश्रम से औषधी प्राप्त करना कतई आवश्यक नहीं हैं।

जब रोगी अन्य रोगियों से बात करता हैं और अन्य रोगी जब अपने सुधार के बारे में बात करता हैं, तो रोगी मोटिवेटेड होता हैं। यह मोटिवेशन रोगी को युट्यूब चेनल पर सक्सेस स्टोरी सुनकर भी होता हैं। सर्वाधिक मोटिवेशन तब होता हैं, जब ठीक हुए रोगी द्वारा स्वयं या उसके परिजनो द्वारा क्लास में सेकड़ो रोगियों और उनके परिवारजनों के सामने कैंसर से जंग जीतने की कहानी बताई जाती हैं। मैं अक्सर कहता हूँ की कैंसर उपचार का विषय नही, प्रबन्धन का विषय हैं(Cancer in not a subject of treatment it a subject of management) जो यह मोटिवेशन भी कैंसर चिकित्सा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इस पुस्तक का लेखन भी मेरा इसी उद्देश्य से हैं की रोगी यह समझ सके की रोगी चाहे तो अपनी हिम्मत के बल–बुते पर उचित मात्रा में औषधी लेते हुए, पुरे परहेज रखते हुए जल्द से जल्द कैंसर को हरा सकता हैं।

मैरे द्वारा सम्पादित पुस्तक ”पत्थरों में कोंपले” इसी श्रंखला का पहला नींव का पत्थर हैं, इस किताब में 250 कैंसर योद्धाओं के नाम पते सहीत उनकी स्वयं की वाणी में कहे गये इन्टरव्यू का लेखन हैं, जो 100% प्रमाणित और विश्वसनिय हैं। इस पुस्तक का धेय वाक्य हैं ”डॉक्टर आपने मेरी मृत्यु की घोषणा करने में बहुत जल्दी करदी” यानी आपके द्वारा 10–15 दिन बची जिन्दगी की घोषणा भी मुझे नहीं डिगा पाई और मैंने मोटिवेशन

के कारण आस्था, औषधी और परहेज के सिद्धान्त के अन्तर्गत कैंसर हराया हैं, हराया जा सकता हैं।

कैंसर ठीक करने का ब्रह्मास्त्र हैं आस्था

कैंसर रोगी चाहता की उसका कैंसर जल्द से जल्द ठीक हो, बिना कष्ठ उठाए ठीक हो, परिवार भी आर्थिक कंगाली से बच्च जाऐं। ऐसी हालत में उस रोगी को में हमेशा तीन सुत्रों की याद दिलाता हूं, पहला सुत्र है आस्था, दुसरा औषधी और तिसरा परहेज।

मैं आपसे समझना चाहता हूं, कि कैंसर रोगी के लिए आस्था बहुत ही आवश्यक अंग होने के साथ रोगी को अपने अन्दर से पूर्ण आत्म विश्वास के साथ, आत्म विश्वास आता हैं। रोगी के मन में जितनी अधिक आस्था होती हैं, उतना ही उसमें आत्म विश्वास होता हैं। कैंसर चिकित्सा में मेरा अनुभव यह कहता हैं की आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में आस्था तीन स्तर पर होना आवश्यक हैं :– 1. आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर। 2. औषधी पर। 3. अपने इस्ट यानी जिस को भी वह अपना देवता मानता हैं, चाहे वह वाहे गुरू हो, ईश्वर हो, अल्लाह ताल्ला हो, चाहे प्रभु इसु हो।

व्यक्ति जब बिमार होता है, तो वह अपने आपको दोषी मानने लगता हैं, की मैंने कोई पाप किया हैं, इसलिए मुझे कैंसर हुआ हैं। जब की कैंसर होने में पाप या पून्य कुछ भी लेना–देना नहीं है। कैंसर होने का लेना–देना रोगी द्वारा की गई गलतियां जैसे तम्बाकू, शराब, नॉनवेज और अन्य वो सभी गलतियां जिनके कारण कैंसर होता हैं। अतः आस्था में किसी प्रकार की कमी नहीं आनी चाहिऐ क्योंकि हम सभी लोग उस परम पिता की सन्तान हैं, यानी जो भी इस श्रष्टी को चलाने वाला हैं, वह हमारा पिता हैं, कोई पिता अपनी सन्तान को क्यों कष्ट देगा, क्यों बीमार करेगा।

अब दुसरा प्रश्न उठता हैं, आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति पर तो इसमें तो किसी भी रोगी को यह विश्वास होना परम आवश्यक हैं की 5 हजार वर्ष पुरानी चिकित्सा पद्धति हैं। जिसके विश्व की सबसे पुरानी चिकित्सा पद्धति है। जिसके विश्वसनीय

होने के लिए महर्षि चरक, महर्षि सुश्रुत, महर्षि वाग्भट्ट द्वारा बताये अर्बूद कर्करा रोग को ठीक करने के लिए गिलोय, अर्बूद नाशनी, तुलसी, हल्दी, गौमूत्र आदि का उल्लेख अपनी संहिताओं में स्पष्ट रूप से उल्लेख हैं। इससे भी बड़ा आस्था का आश्वासन अथर्व वेद देता हैं, क्योंकि वेदों की विश्वसनीसता पर कोई भी व्यक्ति अविश्वास कर ही नहीं सकता हैं, क्योंकि वेदों में सबसे अधिक जोर दिया है, प्राकृतिक चिकित्सा विधी पर यानी आयुर्वेद कहता है, सभी औषधियां तो आपके आस–पास ही हैं, नीम, तुलसी, गिलोय सब कुछ फिर आप की आस्था उस परम पिता में क्यों नहीं होगी।

श्री नवग्रह आश्रम से ठीक होने वाले अधिकांस रोगी अपनी बातचीत में और अपने साक्षात्कार में यहीं कहते हैं कि हमारी आस्था आश्रम की चिकित्सा पद्धति में इसलिए अधिक प्रकट हुई की यहां बिना लोभ लालच के जितने भी रोगी ठीक हो रहे हैं। उन सब के द्वारा बिना दबाव छल कपट के आस्था पूर्ण तरीके से औषधी और परहेज रखते हुऐ कैंसर रोग को हराया हैं जबकि ऐलोपेथी के डॉक्टर साहब ने तो हमे 10 दिन या एक माह की अवधि दे दी थी की आप इतना ही जी पाओगे जब ठीक हुए रोगी का इन्टरव्यु सुनते हैं या यहां की प्रकाशित पुस्तक "पत्थरों में कोंपले" पढ़ते हैं तो हमारी आस्था और मजबूत हो जाती हैं।

मैं अक्षर कैंसर क्लास में यह बात बताता हूं की अगर आपको 100 नम्बर का प्रश्न पत्र अगर हल करने को दिया जाए जिसमें सभी प्रश्न करने अनिवार्य हो और सभी प्रश्नों के अंक भी सम्मान हो, ऐसी हालत में ऐसा करने पर रोगी 66% अंक प्राप्त कर चुका हैं, अब उसके मन में आत्म विश्वास पूर्ण आस्था का भाव जगता हैं, और यह आस्था 33 नम्बर प्रदान करती है, और रोगी 99 नम्बर प्राप्त कर लेता हैं।

मेरा सभी रोगी एवं उनके परिजनों से अनुरोध हैं कि बिना आस्था तो सामान्य से सामान्य बीमारी भी ठीक नहीं होती हैं। अतः पूर्ण आस्था से बड़ी से बड़ी लड़ाई जीती जा सकती हैं।

गौमूत्र

गोमूत्र–बायो मेडिसिन, एंटीबायोटिक, एंटी फंगल, एंटी कैंसर

गौमूत्र का प्रयोग भारत, म्यामार और नाइजिरिया जैसे देशो में पारम्परिक चिकित्सा में वर्षो से किया जाता रहा हैं। कैंसर जैसे रोगों के उपचार में गौमूत्र के लाभ आज किसी से छुपा हुआ नहीं हैं।

आयुर्वेद और गौमूत्र – आयूर्वेद में गौमूत्र का वर्णन चरक सहिंता, सुश्रुत सहिंता व वाग्भट्ट सहिंता जैसे सभी मुख्य सहिंताओं में मिलता हैं, जिसमें गौमूत्र के गुण, औषधिय निर्माण में उपयोग रोगों में उपचार के लिए व बाह्य प्रयोग आदि का विस्तृत वर्णन हैं।

आयुर्वेद में गौमूत्र को कृमिघ्न (आंत में किड़ो के संक्रमण में उपयोगी), कुष्ठघ्न (त्वचा विकारों में उपयोगी) कडूं (खुजली), उदर रोग (जलोदर में), विषघ्न (विष–विरोधी), पांडु (एनीमिया में) गुल्म (पेट के ट्यूमर), दीपनीय (पाचन में सुधार करने वाला) और ब्रोन्कियल अस्थमा, कॉलेस्ट्राल, मोटापा, एलर्जी व अबुर्द (कैंसर) में उपयोगी माना हैं।

शिव गुटिका, पंचगव्य घृत, गौमूत्र हरीतकी जैसी कई औषधियों का मुख्य घटक गौमूत्र हैं।

गौमूत्र का प्रयोग विषाक्त औषधियां जैसे धतुरा के बीज को गौमूत्र में 12 घंटे तक भिगोने पर शुद्ध माना जाता हैं। ऐसे ही गौमूत्र का उपयोग भलात्तक, गुगुल को, लौह को शुद्ध करने के लिए किया जाता हैं।

पुनर्नवा कषायम, व्योषदि गुग्गुलु, खदिरादि कषायम का कांकायनवटी जैसी कई औषधियों के उपयोग में गौमूत्र अनुपान (औषधी के साथ पिने हेतु) के रूप में साथ दिया जाता हैं।

एडिमा (सूजन) में कफ़ दोष की वृद्धि के कारण हरीतकी के साथ गौमूत्र दिया जाता हैं।(च. चि. 12वां अध्याय), (ठर्मिनलिया चेबुला)

गौमूत्र व वर्तमान रिसर्च – कैंसर में गौमूत्र का उपयोग व लाभ की कई रिपोर्ट, रिसर्च पेपर, सफल कहानियां व रोगियों का अनुभव उपलब्ध हैं। सभी रिसर्च पेपर व रोगियों के अनुभव आदि की चर्चा करना सार्थक नहीं होगा इसलिए सीधे निष्कर्ष की बात करते हैं।

वर्तमान रिसर्च से साबित हैं कि गौमूत्र लिम्फो साइटो में एपोप्टोसिस (कोशिकिय मृत्यु) को कम करता हैं और उन्हे जीवित रहने में मदद करता हैं, और क्षतिग्रस्त DNA की कुशलता से मरम्मत करता हैं। जो कैंसर की रोकथाम में सहायक होता हैं। इसके अतिरिक्त गौमूत्र प्रतिरक्षा–क्षमता (इम्यूनिटी पावर) को बढ़ाता हैं और व्यक्ति के स्वास्थ्य में सुधार करता हैं। गौमूत्र फ्री रेडिकल्स (मुक्त कण) के निर्माण को रोकता हैं और एंटी–एजिंग (बुढ़ापा–विरोधी) के रूप में कार्य करता हैं।

विभिन्न अध्ययनों से सिद्ध हुआ हैं, की गाय के मूत्र में अच्छे एन्टीबैक्टीरियल (जीवाणुरोधी) गुण पाए जाते हैं। जो ओफ्लॉक्सासिन, सेफोडॉक्सिम और जेंटामाइसिन जैसी मानक दवाओं के सम्मान हैं, और यह जीवाणु रोधी गुण मल्टीड्रग – रजिस्टेट (MDR) ई. कोलाई व क्लेबसिएला न्यूमोनिया के खिलाफ भी पाई गई हैं। इसके अतिरिक्त गौमूत्र में एंटी–फंगल व मोटापा को रोकने के गुण भी वर्तमान रिसर्च में उपलब्ध हैं।

इस प्रकार कैंसर रोधी गुण, इम्यूनिटी बूस्टर व एंटी–एजिंग, एंटी बैक्टिरियल व एंटी वायरल गुणो के कारण कैंसर में गौमूत्र एक महाऔषध से कम नहीं हैं। जिसमें भी भारतीय मूल की गायों का मूत्र श्रेष्ठ पाया गया हैं। गौमूत्र विषैला अपशिष्ट नहीं हैं। गौमूत्र 95% पानी 2.5% यूरिया व शेष 2.5% खनिज लवण, हार्मोन व एंजाइम का मिश्रण हैं।

गौमूत्र का एंटीकैंसर प्रभाव यूरिक एसिड के एंटी ऑक्सीडेंट गुण और एंलेटोइन के कारण होता हैं। एंलेटोइन घाव भरने में भी सहायक हैं। स्वर्णक्षार (ओरम हाइड्राक्साइड), कार्बोलिक एसिड, कैल्शियम व मैग्निशियम के कारण होते हैं। कैलिकेरिन एक वैसोडाइलेटर हैं जो हृदय के स्वास्थ्य को बनाए रखता हैं। गौमूत्र इंटरल्यूकिन–I व इंटरल्यूकिन–II के स्त्राव को

बढ़ाता हैं, जो जीवाणु संक्रमण कीर रोकथाम व नियंत्रण में सहायक हैं।
इसी प्रकार गौमूत्र में नाइट्रोजन, सल्फर, सोडियम, कैल्शियम आदि खनीज विभिन्न रोगों में उपयोगी हैं।
गौमूत्र का संग्रहण – सबसे पहले ध्यान रहे की गौमूत्र देशी नस्ल की गाय का उपयोग में लेना हैं उनमें भी कुंवारी बछिया का गौमूत्र सबसे श्रेष्ठ होता हैं। गौमूत्र संग्रहण के लिए गौमूत्र की प्रथम व अन्तिम भाग का गौमूत्र छोड़कर मध्यम भाग का गौमूत्र एकत्रित करना होता हैं।
गौमूत्र का प्रयोग कैसे करें – यदि ताजा गौमूत्र उपलब्ध हैं तो ताजा ही प्रयोग करें। अन्यथा संग्रहीत करने के लिए गौमूत्र को उसे कांच के पात्र में छानकर भर लेवें। भरने के बाद इसे छायादार व ठण्डे स्थान 8°c तापमान (फ्रिज के निचले हिस्से) पर रखें। इस संग्रहीत गौमूत्र को जब भी प्रयोग करना हो तो इसकी उपयूक्त मात्रा लेकर उबालकर ही प्रयोग करना चाहिए।
गौमूत्र को संग्रहीत करने की एक आसवन विधि भी जो वर्तमान में काफी प्रचलित हैं। इसमें गौमूत्र को आसवन विधि से अर्क तैयार करके बोतलों में भर लिया जाता हैं। इससे गौमूत्र का मूलभूत संघटन विघटीत हो जाता है, और जो लाभ हमें मिलना चाहिए वह नहीं मिलता हैं। गौमूत्र अर्क विधि एक व्यवसायीकरण की निति है, यह कहीं भी आयुर्वेद और रोगी के हित में नहीं हैं।
गौमूत्र कौन ले सकता हैं– गौमूत्र का सेवन प्रत्येक आयु अवस्था में किया जा सकता हैं। रोग, आयु उद्देश्य की विभिन्नता में गौमूत्र की मात्रा और लेने की अवधी तय की जाती हैं। 10 वर्ष के कम उम्र के बच्चों में आयुर्वेद चिकित्सक के परामर्श अनुसार गौमूत्र का प्रयोग करना चाहिए। गर्भिणी (गर्भावस्था) में गौमूत्र का प्रयोग न करें।
गौमूत्र की मात्रा लेने का तरीका व समय – गौमूत्र के सेवन का सही समय प्रातः काल का होता हैं। गौमूत्र का सेवन रोग के सही होने के 3–4 माह पश्चात तक प्रयोग करना चाहिए। गौमूत्र की मात्रा 5ml से से प्रारम्भ करके क्रमानुसार बढ़ाते हुए 50ml तक तक अधिकतम प्रयोग किया जा सकता हैं। जो दिन में 1 बार या 2 बार (सुबह–शाम) प्रयोग कर सकते हैं।

गौमूत्र को प्रयोग करने के लिए ताजा गौमूत्र या संग्रहीत गौमूत्र को उबालकर उपरोक्त मात्रा में प्रयोग करना चाहिए।
गौमूत्र को एकल रूप में अथवा रोग के अनुसार अलग–अलग औषधियों के साथ प्रयोग किया जा सकता है। जैसे –
कैंसर में गौमूत्र को हल्दी (गांठ हल्दी) के साथ प्रयोग करना चाहिए। 50ml गौमूत्र में 5gm हल्दी डालकर इसे उबालकर छानकर प्रयोग करना चाहिए। जलन की स्थिति में इसमें अल्प मात्रा में पानी मिलाया जा सकता हैं। सूजन/शोध (एडिमा) की अवस्था में गौमूत्र को हरीतकी के साथ उबालकर प्रयोग करें। चर्म रोगों में गौमूत्र दारू हरिद्रा के साथ प्रयोग करें। चर्म रोगों में गौमूत्र माक्षिक भस्म के साथ सेवन करें। इसी प्रकार गौमूत्र को भिन्न–भिन्न रोगों की अवस्था में भिन्न–भिन्न औषधियों के साथ आन्तरिक व बाह्य रूप से प्रयोग किया जाता है।

सावधानियां –

- गाय के संक्रमण की स्थिति में गौमूत्र प्रयोग न करें।
- गौमूत्र को उपयुक्त एयर–टाईट पात्र में बन्द करके उपयुक्त तापमान (8°c) पर ही संरक्षित करके रखे।
- अपच, पेट में जलन, गर्भावस्था में गौमूत्र का प्रयोग न करें।
- सदैव गौमूत्र कम मात्रा (5ml) से प्रारम्भ कर क्रमानुसार मात्रा बढ़ानी चाहिए।

शहद और कैंसर चिकित्सा

शहद के औषधीय गुणों से कौन परिचित नहीं हैं, सभी डॉक्टर, वैद्य और रोगी और उनके परिजन इस बात पर अपनी सहमती रखते है, की शहद एक उत्तम औषधी होने के साथ–साथ अपने आप में एक अनुठा गुण रखता हैं। इस गुण को आयुर्वेद की दृष्टि से अगर समझें तो इसे चरक, वाग्भट्ट सहीत कईं महर्षियों ने श्रैष्ठ अनुपात घटक माना है।

अनुपात का मतलब होता हैं, ऐसा घटक जैसे दूध, शहद, गौमूत्र के साथ औषधी को चूर्ण, चटनी जैसी किसी भी अवस्था में

जिस सहायक यानी मिश्रण घटक के साथ उस औषधी के औषधिय तत्व कई गुना बढ़ जाते हैं, और औषधी के सक्रिय प्रभाव बताने का समय भी बहुत जल्दी हो जाता है। औषधी सामान्य तरीके से लेने पर 5–6 घण्टे में अपना असर दिखाए और 10 ग्राम औषधी सामान्य लाभ देगी वहीं औषधी शहद के साथ लेने पर 1 घण्टे में असर दिखाएगी और 10 ग्राम औषधी 20 ग्राम के बराबर लाभ देगी।

शहद के औषधिय गुण :– शहद एंटी बैक्टीरियल हैं, एन्टी सेप्टिक हैं, एंटी आक्सीडेंट हैं, प्रतिरक्षा क्षमता बढ़ाने वाला हैं, हानिकारक शूक्ष्म जिव नासक हैं, शहद एनर्जिफूड हैं, शहद पाचन में मदद करता हैं, विटामिन B-6, C होता हैं, एमीनो एसीड होता हैं, यह कब्ज नासक होता हैं, कैंसर रोधी गुण होने के साथ–साथ कैंसर कोशिकाओं को समाप्त करने की क्षमता रखता हैं।

शहद की मात्रा :– अगर आपकी पाचन क्रिया अच्छी हैं तो एक दिन (24 घण्टे) में 50ml तक शहद खा सकते हैं। रोगी अधिक कमजोर हैं, तो इसकी मात्रा कम भी कि जा सकती हैं।

कैंसर रोग में शहद के निम्न उपयोग हैं :– 1. अदरक को बारीक चटनी बनाकर समान मात्रा में शहद मिलाकर अदरक शहद की चटनी प्रातः भूखे पेट व दोपहर दो समय 50–50 ग्राम मात्रा में चटाने से चमत्कारीक परिणाम मात्र 25–30 दिन में आते दिखाई देते हैं।

2. श्री नवग्रह आश्रम के आयुर्वेद कीमो को शहद के साथ ही लेने की सलाह दी जाती हैं। इसके दो लाभ होते हैं। हिमोग्लोबीन बढ़ता हैं, और ऐलोपेथी से कीमो लेने से मरीज की हालत खराब होने लगती हैं, क्योंकि रोगी की WBC बहुत तेजी से कम होती हैं, और शहद का सेवन करने से WBC (स्वेत रक्त कणीकाऐं) तेजी से बढ़ती हैं,

3. नीम की पत्तियां, तुलसी की पत्तियां, सदासुहागीन की पत्तियों के साथ शहद के सेवन से कैंसर में चमत्कारी लाभ मिलते हैं।

4.शहद सिधा–सिधा औषधी के रूप में भी लिया जा सकता हैं, क्योंकि शहद में प्रचुर मात्रा में आयरन, कैल्शियम, सोडीयम, क्लोरीन, पोटेशियम और मेग्निशियम पाया जाता है। अतः कैंसर रोगी के शरीर में अगर इन मिनरल्स की कमी हैं और उसकी रोग

प्रतिरोधक क्षमता कम है, तो शहद के सेवन से अच्छा लाभ प्राप्त होता है।

6. कच्चा या ठंडा दूध और शदह – कैंसर रोगी को 250ml देशी गाय के या बकरी के दूध के साथ अगर शहद दिया जाए तो कैंसर रोग में बहुत जल्दी लाभ प्राप्त होता है। दूध अगर कच्चा है या एक बार गर्म करके पुनः ठण्डा किया हुआ हो (शहद को कभी गर्म नही करना चाहिए या गर्म प्रदार्थ में नही मिलाना चाहिऐ) उसमें 25ml तक शहद मिलाकर उसे अच्छा फेट ले और उसे पी जाऐं अथवा शहद को अकेला पी कर ऊपर से दूध का सेवन कर लें इससे अच्छा लाभ होता हैं।

गेहूँ के ज्वारे का रस (व्हीट ग्रास ज्यूस)

गेहूँ के ज्वारे के रस को हरा खून भी कहते हैं, इसमें पाये जाने वाले तत्व खून में पाये जाने वाले तत्वों से काफी मिलते हैं। यह शरीर के लिये एक शक्तिशाली टॉनिक की तरह कार्य करता है। इसमें प्रचुर मात्रा में श्रेष्ठ प्रोटीन होता है। इसमें मौसमी और नारियल से भी ज्यादा विटामिन ई एवं मैगनीज पाया जाता है।

कैंसर चिकित्सा में गेहूँ के ज्वारे का रस बहुत उपयोगी है, क्योंकि इसमें बीटाकैरोटिन क्लोरोफिल, लाइकोपिन, विटामिन्स (सी, ई) भरपूर मात्रा में मिलते हैं। कैंसर रोधी आहार की समुचित जानकारी रोगी को दिये जाने से रोगी को न केवल सही आहार की उपयोगिता का अंदाजा हो जाता है बल्कि शरीर की रूग्णावस्था, कमजोरी, थकान से भी निजात मिल जाती है। एंटीऑक्सीडेंट मूल रूप से कोशिकाओं की तेज सफाई को सुनिश्चित करते है, जिससे कैंसर से बचने में मदद मिलती है व शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। एंटीऑक्सीडेंट स्वाभाविक रूप से सभी फल–सब्जियों एवं रसों में मिलता है। गेहूँ के ज्वारे के रस (व्हीट ग्रास ज्यूस) में लगभग सभी जीवनरक्षक विटामिन ए, बी, सी और ई तथा लगभग सभी खनीज (कैल्शियम्, मोटेशियम, सेलेनियम, लौह व जिंक), क्लोरोफिल, सभी पाचक तत्व एन्जाइम के रूप में और सभी उर्वरक पोषक तत्वों के साथ प्रोटीन व अमीनो एसिड प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

कैंसर की जाँचे

कैंसर की जांच के लिए X-Ray, U.S.G, CT. SCAN, MRI, PAT-CT या PAT-SCAN किया जाता हैं।
X-Ray की लगभग रेट 125–500 रूपये। U.S.G (sonoghraphy) रेट 500–1000 रूपये। CT. SCAN की लगभग रेट 1500–2500 रूपये। MRI की लगभग रेट – 3000–5000 रूपये। PAT-SCAN की लगभग रेट 18000–22000रूपये।

लंग कैंसर में X-Ray कराया जाता हैं। एक्स–रे रेडियेसन की एक छोटी मात्रा है हड्डियों में कैल्सियम होने से वे एक्स–रे को सब से ज्यादा सोखती है जिसके कारण हड्डियां सफेद दिखाई देती है।
वसा और अन्य नरम ऊतक कम सोखते है वे स्लेटी दिखाई देते हैं।हवा X-Ray सबसे कम सोखती है इसलिए फेफड़े काले दिखाई देते हैं। पेट के कैंसर में U.S.G कराया जाता है। कैंसर में बिमारी की स्थानीय सीमा का आंकलन करने के लिए अल्ट्रासाउंड एक उपयोगी तकनीक हैं। सीटी स्कैन का उपयोग शरीर के लगभग सभी हिस्सों को देखने के लिए किया जा सकता हैं। लीवर, लंग्स, ब्रेन, फेफड़े आदि में कैंसर का पता करने के लिए भी C.T-SCAN कराया जाता हैं। MRI विशेष रूप से ब्रेन ट्यूमर में करायी जाती हैं। हड्डी के कैंसर में भी MRI कराते हैं। मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के ट्यूमर को देखने का सबसे अच्छा तरीका है MRI । PAT-CT द्वारा शरीर के सभी हिस्सों में से कहां–कहां कैंसर है। उसकी जाँच की जाती हैं। इसके द्वारा शरीर के कौन–कौनसे हिस्से में कैंसर है उसका पता किया जाता हैं। **X-Ray एक्स–रे** को सामान्य भाषा में X-RADIATION (एक्स–रेडियेशन) कहते हैं, इसकि खोज 1895 में जर्मनी प्रोफेसर विलहेम कान राड रोएंट जेन कि इसे हिन्दी में एक्स–किरण कहां जाता हैं। **U.S.G** इसे अल्ट्रासाउंड सोनोग्राफी या सोनोग्राफी भी कहां जाता हैं। यह ध्वनी पर्वतन के सिधान्त पर कार्य करती है, इसके माध्यम से वे विशेषताए से पेट के आन्तरीक अंगों का चित्र लिया जाता हैं। आजकल यह कलरफुल भी होने लगी हैं। इसे

अग्रेजी में ULTRASOUND व SONGRAM को मिलाकर ULTRA SONGRAM (USG) कहते हैं।

C.T सीटी–स्केन कि फुल फार्म होती है, COMPUTED TOMOGRAPHY SCAN यानी कम्यूटरी कृत सोनोग्राफी। यह शरीर के कठोर अंगों को देखने के लिए कि जाती हैं। इसके कम्यूटर द्वारा नियंत्रण वाला एक्श–रे भी कह सकते हैं।

PAT-CT पेट सीटी – पाजीट्रॉन एमिशन सोनोग्राफी कहते है इसमें मरीज को एक विशेष ग्लूकोज के साथ रेडियो आईसोटोप का इन्जेक्शन दिया जाता हैं। इसकि वजह से कैंसर ग्रस्त कोशिकाएं चमकती हुई फोटो देती हैं।

MRI इसे हिंदी में चुम्बकिय अनुवाद प्रतिबिम्ब कहते हैं। व अग्रेजी में MAGNETICRESONANCE IMAGUING यानी मेगनेटिक रेजोनेस इमेजिंग कहते हैं। रोगी को एक बहुत शक्तिशाली रेडियेसन यूक्त ट्यूब मे लेटाकर बार–बार गुजारा जाता है। इसका संचालन रेडियोग्राफर ही कर सकता हैं। इस पूरी प्रक्रिया को टेलिविजन मॉनीटर पर देखा जाता हैं। और इसकी फोटो एक्श–रे जैसी फिल्मो के रूप में लेकर केन्द्रीय कंप्यूटर के माध्यम से प्रिन्ट रिपोर्ट प्राप्त कि जाती हैं। इस क्रिया में 15 से 90 मिनट तक लग जाते हैं।

क्र.सं.	कैंसर नाम	English Name	मार्कर टेस्ट
1.	ब्रेन ट्यूमर	Glioma	5- HIAA, NSE
2.	गले का कैंसर	Laryngeal	CEA, SCCA, CA19-9, LASA
3.	थायराइड कैंसर	Thyroid	T3-T4, TSH, TG, CA125
4.	आहार नली	Esophageal	CEA, CYFRA21-1, CA19-9
5.	फेफड़ों कैंसर	Lung Cancer	CEA, CYFRA21-1, NSE
6.	स्तन कैंसर	Breast Cancer	CEA, CA125, CA15.5, CA-27.29
7.	आमाशय कैंसर	Stomach Cancer	CEA, CA19.9
8.	आंत कैंसर	Colone Cancer	CEA, MPK, CA-19.9
9.	किडनी कैंसर	Renal Cancer	CEA, ESR
10.	एड्रीनल कैंसर	Adrenal Cancer	SERUM INHIBIN PRO-AC
11.	मूत्राशय कैंसर	Urinary bladder	CA-19.9, TSA, CA50
12.	प्रोस्टेट कैंसर	Prostate Cancer	PSA
13.	वृषण कैंसर	Testicular	AFP, HCG, PDG
14.	बच्चेदानी के मुंह	Cervical Cancer	CA125, CEA, CA19.9

क्र.सं.	कैंसर नाम	English Name	मार्कर टेस्ट
15.	बच्चेदानी कैंसर	Uterine Cancer	CA125, SCCA, CA15.3
16.	अंडाशय कैंसर	Ovarian Cancer	CA125, CA15.3, HE4, AFP
17.	पेनक्रियाज	Pancreatic	CA19.9, LFT, AFP
18.	लीवर कैंसर	Liver Cancer	AFP, LFT, CA-19.9
19.	आंख कैंसर	Eye Cancer	LDH
20.	पित्ताशय कैंसर	Gallbladder	CEA, CA19.9, AFP
21.	अस्थि (सार्कोमा)	Sarcoma Cancer	ALP, LDH
22.	लिमफोमा कैंसर	Lymphoma	BETA 2 M, CBC
23.	ल्यूकेमिया कैंसर	Blood Cancer	FBC, LPT
24.	जीभ कैंसर	Tongue Cancer	CEA
25.	जबड़े कैंसर	Buccal Mucosa	CEA
26.	गुदाद्वार कैंसर	Rectum Cancer	CEA
27.	नासिका कैंसर	Nasopharyngeal	CA15-9, CEA
28.	चमडी कैंसर	Skin Cancer	HMB-45 MelDx, S100

- रेडियोलोजिकल जाँचे:– USG(sonographi) CT-SCAN, MRI, PET SCAN
- स्तन कैंसर में mamography, ऑस्टिया सार्कोमा में x-ray, आहारनजी व आमाशय कैंसर में Colonoscopy अतिरिक्त जांचे।

बायोप्सी क्या है, व जांच कैसे होती है –

इसमें टिशू की जांच माइक्रोस्कोप द्वारा करते हैं और इसे करने के निम्नलिखित तरीके है :–

पूरी गिल्टी की जांच

कैंसर की गिल्टी को या तो पूरा या उसमें से एक टुकड़े को ऑपरेशन द्वारा निकालकर उसकी जांच की जाती हैं। अगर संभव हो तो पूरी गिल्टी को समूचा निकालना चाहिए, जैसे कि स्तन की गिल्टी परंतु अगर ट्यूमर बहुत बड़ा हो या वह आसपास के अंगों से जुड़ा हो तो उसमें से एक टुकड़े को निकालकर उसकी

बायोप्सी जांच कराना चाहिए। गिल्टी के इस टुकड़े की माइक्रोस्कोप द्वारा जांच करना एक जटिल क्रिया है। इस टुकड़े को जरूरत के अनुसार अलग–अलग रासायनिक पदार्थों द्वारा रंगा जाता है और फिर माइक्रोस्कोप के नीचे रखकर इसकी जांच होती हैं। माइक्रोस्कोप के नीचे यह अपने आकार से 2500,000 गुना अधिक बड़ा करके देखा जा सकता हैं। इससे प्रत्येक कोशिका स्पष्ट नजर आती है और उसकी विसतृत रूप से जांच की जा सकती हैं। बायोप्सी की जांच में कम से कम 48 घंटे लग सकते हैं, परंतु फ्रोजन तकनीक से यह संभव है कि टिशू का रोग निदान 5 या 10 मिनट में किया जा सके। बायोप्सी जांच सें निम्नलिखित चीजों का पता लगता हैं।

- कैंसर की किस्म और उसकी उप–किस्म तथा उसकी वृद्धि की अवस्था।
- कैंसर की कोशिका का खून और लसिका धमनियों में प्रवेश हुआ है कि नहीं, अगर यह हुआ है तो यह बीमारी की अग्रिम स्टेज की और संकेत करता हैं।

सी.टी. स्कैन

1972 में प्रोफेसर गोडफ्रे ने अलेन कारमाक के साथ मिलकर निदान के लिए रेडियोलॉजी में एक क्रांतिकारी तकनीक का अन्वेषण किया, जिसे कंप्यूटराइज्ड टोमोग्राफिक स्कैनिंग (सी.टी. स्कैन) कहते हैं। इस तकनीक के प्रभाव और महत्व का इस चीज से पता लगता है कि इन दोनों वैज्ञानिकों को इस आविष्कार के लिए 1979 में चिकित्सा और शरीर विज्ञान के क्षेत्र में संयुक्त रूप से नोबल पुरस्कार दिया गया था।

सी.टी. स्कैन में अंगों के प्रतिबिंब को क्रास सेक्शनल रूप में देखा जाता है और इस कारण अंगों के प्रतिबिंब एक–दूसरे को ढांकते नहीं है जैसा कि साधारण एक्सरे फिल्म में होता हैं। सी.टी. स्कैन टिशू घनत्व में थोड़ी–थोड़ी भिन्नता को दिखाता है और इस तरह रोगग्रस्त टिशू के अदंर मौजूद तरल पदार्थ, चर्बी और कैल्शियम को दिखाने में मदद करता हैं। 3 मि.मी तक के छोटे आकार के ट्यूमर का सी.टी. स्कैन द्वारा पता लगाया जा सकता

है। परंतु सी.टी. स्कैन द्वारा मरीज को रेडियेशन मिलता है, अतएव इस तकनीक का उपयोग विवके एवं सावधानी से करना चाहिए।

एम.आर.आई (मैगनेटिक रोजोनेंस इमेजिंग)

एक्सरे द्वारा निदान में एम.आर.आई एक महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। एक चुंबकीय क्षेत्र में परमाणु रेडियो फ्रिक्वेंसी संकेतों को उत्पन्न करते हैं और इसी क्रिया का उपयोग एम.आर.आई की तकनीक में किया जाता हैं। संकेत उत्पन्न करने वाले परमाणु प्राकृतिक होते हैं और शरीर के टिशू को बनाते हैं। सी.टी. स्कैन की तुलना में एम.आर.आई. के कई लाभ हैं – इसमें एक्सरे की आवश्यकता नहीं होती है और प्रतिबिंबों को भिन्न–भिन्न कोणों से (बहुपक्षीय) लिया जा सकता है, जिससे सही निदान करने की क्षमता बहुत बढ़ जाती है। इसके द्वारा दो तरह के टिशू में पाई जाने वाली विषमता सी.टी. स्कैन की अपेक्षा अधिक स्पष्ट होती है, अतः एम.आर.आई. द्वारा उत्पन्न चित्र भी अधिक लाभदायक होते हैं। इसके द्वारा एक–दूसरे के समकोण पर दो प्लेन में प्रतिबिंब पाना भी संभव है। इस तकनीक में आयोनाइजिंग रेडियेशन का उपयोग नहीं होता है, अतएव इस तकनीक का उपयोग एक मरीज में बार–बार किया जा सकता हैं। एम.आर.आई. तकनीक द्वारा मेटाबोलिक क्रिया का विश्लेषण किया जा सकता है और किसी भी बीमारी के निदान में यह एक विशेष योगदान हैं।

हड्डियों और जोड़ों की जांच करने के लिए एम.आर.आई. सी.टी. स्कैन से अधिक अच्छा माना जाता हैं।

मैमोग्राफी

स्तन में स्थित ट्यूमर को प्राथमिक अवस्था में जबकि वह बहुत छोटा होता है न तो बाहर से टटोला जा सकता है और न यह शरीर में कोई लक्षण उत्पन्न करता है और इस अवस्था में स्तन के ट्यूमर का पता लगाने के लिए एक्सरे की एक विशेष जांच का उपयोग किया जाता है जिसे मैमोग्राफी कहते हैं। लोगों में यह एक गलत धारणा बनी हुई है कि मैमोग्राफी एक कष्टकर प्रक्रिया है, जबकि सचाई यह है कि अनुभवी लोगों द्वारा इस क्रिया को करने से मरीज को केवल थोड़ी असुविधा होती हैं। मैमाग्राफी स्तन में मौजूद टिशू का पूर्ण विवरण देता है और छोटे से ट्यूमर

का पता करने में इसका विशेष योगदान है, अन्यथा ट्यूमर कुछ समय तक छुपा रहता है और उसका पता केवल विकसित अवस्था में ही चलता है जब उसका सफल ईलाज कठिन होता हैं।

उन मरीजों में जिनमें स्तन के ट्यूमर का बाहर से पता लगता है, मैमोग्राफी उसका विश्लेषण अच्छी तरह देता है, और इससे कैंसर के ट्यूमर को बिनाइन या अकैंसर के ट्यूमर से अलग पहचाना जाता है। मैमोग्राफी ट्यूमर के आसपास अन्य ट्यूमर को भी पहचान सकता है और इसके द्वारा यह भी देखा जाता है कि कहीं दूसरे स्तन में तो कैंसर नहीं है, और इन सबका ईलाज में और मरीज के भविष्य पर बहुत प्रभाव पड़ता है। अगर मैमोग्राफी द्वारा स्तन में किसी ट्यूमर का पता लगता है तो उसकी बायोप्सी करनी चाहिए और इसे एक विशेष तकनीक द्वारा किया जाता हैं जिसे स्टिरिओटैक्टिक कहते हैं।

विकसित देशों यथा अमेरिका, इंग्लैंड, आदि देशों में 50 वर्ष से अधिक आयु की प्रत्येक स्त्री को हर दो वर्ष के बाद मैमोग्राफी करवाना होता है ताकि यह पता लग सके कि कहीं उसे स्तन का कैंसर तो नहीं है। परंतु हमारे भारतवर्ष में आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह संभव नहीं हो पाया है और इसका दूसरा कारण है कि स्तन का कैंसर हमारे देश में उतना आम नहीं हुआ है। परंतु उन सब महिलाओं को, जिन्हें कैंसर होने का खतरा अधिक है, नियमित रूप से मैमोग्राफी करवाना चाहिए, और इसका विस्- तृत विवरण स्तन कैंसर के अध्याय में दिया गया हैं।

कुछ कैंसरों के शुरूआती सकेंत

बदलती दिनचर्या और खानपान में अनियमितता के कारण लोगों को आजकल कैंसर जैसी घातक बीमारी जकड़ रही है। दरअसल कैंसर जैसी बीमारी तब शुरू होती है, जब कोशिका के DNA में कोई म्यूटेशन आज जाता है। हमारे शरीर की कोशिका मे। म्यूटेशन आने पर शरीर की कोशिका अनियंत्रित रूप में विभाजित होकर बढ़ना शुरू कर देती है। ये अनियंत्रित कोशिकाएं ही कैंसर का रूप ले लेती है।

कैंसर एक ऐसी बीमारी है, जिसके बारे में मरीज को तब पता चलता है, जब वह आखिरी स्टेज में पहुंच जाता है। दरअसल कैंसर के शुरूआत से ही हमारा शरीर कुछ संकेत देना शुरू कर देता है, लेकिन शरीर के इन संकेतों को हम सामान्य दर्द महसूस होता है, जो सामान्य शारीरिक दर्द ही लगता हैं।

शरीर में कोई बदलाव हो रहा है तो अनदेखा न करें हो, हो सकता है कैंसर। शरीर में लगातार हो रही खुजली, हो सकता है लिवर प्रॉब्लम। शरीर के किसी भी हिस्से में लंबे समय तक दर्द का बने रहना। छाती, फेफड़े में दर्द या सिरदर्द, पेट में दर्द की समस्या बना रहनां। लंबे समय से खांसी हो रही है। खांसी के साथ बलगम और खून आना। पेशाब में खून की समस्या है तो यह गंभीर समस्या का ईशारा है। महिलाओं को मेनोपॉज के बाद जांच कराते रहना चाहिए। मल में खून आना, मसूड़ों या मुंह से खून आना सामान्य नहीं हैं। अचानक वजन कम होना, लगातार थकान बने रहना।

अच्छा तो यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष कम से कम बार शारीरिक जांच करा लेनी चाहिए और कैंसर के लिए यह और अधिक आवश्यक होता है। कैंसर की बीमारी कम उम्र में भी हो सकती है, परंतु कैंसर का प्रकोप आमतौर पर वृद्धावस्था में ही देखा जाता है। अतएव यह उचित है कि 40 वर्ष से अधिक उम्र के प्रत्येक स्त्री पुरूष को प्रतिवर्ष कम से कम एक बार पूरी तरह अपनी शारीरिक जांच करा लेनी चाहिए। पहले यह भी बताया जा चुका है कि जिन व्यक्तियों में कैंसर के खतरे की निशानियां मौजूद हैं उन्हें शारीरिक परीक्षण और जांच जल्दी से जल्दी करा लेनी चाहिए। डॉक्टर द्वारा शारीरिक जांच करवाने के अलावा प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर की जांच खुद करनी सीख लेनी चाहिए, खास करके उन हिस्सों की जिन्हें आसानी से छुआ जा सकता हैं। स्तन के स्वंय परीक्षण का वर्णन स्तन कैंसर के अध्ययन में विस्तृत रूप से किया गया हैं।

यह तथ्य अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि प्रारंभिक अवस्था में कैंसर के पता लग जाने से कैंसर की बीमारी एकदम ठीक हो सकती है।

ब्रेन ट्यूमर

कैसे पहचाने ब्रेन ट्यूमर के लक्षण :–
सिरदर्द रहना ब्रेन ट्यूमर का शुरूआत लक्षण माना जाता है, हालांकि, ट्यूमर के लक्षण इस बात पर निर्भर करते हैं कि इसका साइज क्या है और ये दिमाग के किस हिस्से में है, कुछ केस में ट्यूमर सीधे दिमाग के टिशूज पर असर करते हैं तो किसी को दिमाग के आसपास इससे दिक्कत महसूस होती है। ब्रेन ट्यूमर के अन्य मुख्य लक्षण –

ब्रेन ट्यूमर के शुरूआती लक्षण :–
पहले सिर में लगातार हल्का दर्द रहना, समय के साथ सिर दर्द का अधिक बढ़ना, चक्कर आना, उल्टी आना, आखों की रोशनी कम होना या धुंधला दिखाई देना, हर चीज डबल दिखना, हमेशा हाथ–पैर में सनसनी होना, कोई भी चीज याद करने में समस्या होना, बोलने या समझने में परेशानी, सुनने, स्वाद या स्मेल में दिक्कत होना, डबल विजन, थकान महसूस होना, डिप्रेशन, कुछ मरीजों खासकर महिलाओं में हार्मोन्स बदलाव होने लगता है, गले में अकड़न महसूस होती हैं।

कब दिखते हैं ब्रेन ट्यूमर के लक्षण – कैंसर रिसर्च यूके के अनुसार जब व्यक्ति की खोपड़ी में मौजूद जगह कम होने लगती है तो ट्यूमर के लक्षण दिखने लगते हैं, ट्यूमर का आकार बढ़ने के कारण ऐसा होता है। ट्यूमर के लक्षण कैसे होंगे, यह ट्यूमर की स्थिति पर भी निर्भर करता है। ट्यूमर बढ़ने में कितना समय लेगा, यह अलग–अलग व्यक्तियों में अलग–अलग हो सकता है, इसे बढ़ने में कुछ ही महीनों से लेकर कुछ साल तक लग सकते है।

ब्रेन ट्यूमर में परेशानी –
ब्रेन ट्यूमर एक खतरनाक बीमारी है और इसके मरीज को कई तरह की परेशानियां हो सकती हैं, कैंसर रिसर्च यूके के अनुसार 80 फीसदी ब्रेन ट्यूमर पीड़ितों को झटके महसूस होते हैं। ब्रेन

ट्यूमर से पीड़ित व्यक्ति अपने हाथ बाजुओं और पैरो में झटके व अन्य अंगों में खिंचवा महसूस करता हैं।

ये बहुत ही महत्वपूर्ण है कि ब्रेन ट्यूमर से संबंधित आवश्यक जानकारी पता हो ताकि आप उन लोगो की सहायता कर सकें जिनमें ब्रेन ट्यूमर के लक्षण दिखें। लगातार सिरदर्द या देर से शुरू होने वाला सिरदर्द (50 साल की उम्र के बाद), उल्टी आना, अचानक आखों में धुंधलापन आना, आपको होने वाले सिरदर्द के लक्षण का बार–बार दिखना, दोहरी दृष्टि, शरीर के किसी भी भाग कमजोरी महसूस होना और रूकना और चलने के दौरान दौड़ना कुछ ऐसे लक्षण हैं जिनकी झलक आपको किसी डॉक्टर से परामर्श लेने की आवश्यकता है। ब्रेन ट्यूमर को बेहतर समझने के लिए आपको पहले ट्यूमर की कुछ जानकारी चाहिए। यह ट्यूमर घातक हो सकते हैं और इसके किसी भी हिस्से में हो सकते हैं यह तो नाम से ही मानक है कि ब्रेन ट्यूमर ब्रेन में होने वाला ट्यूमर है ब्रेन ट्यूमर दो प्रकार के होते हैं। प्राइमरी या दूसरा सैकंडरी। प्राथमिक मस्तिष्क ट्यूमर वे हैं जो मस्तिष्क में संबंधित हैं वहीं द्वितीयक मस्तिष्क ट्यूमर वे होते हैं जो किसी अन्य अंग से मस्तिष्क तक वर्ग हैं। द्वितीयक ब्रेन ट्यूमर प्राथमिक ब्रेन ट्यूमर की तुलना में अधिक होते हैं। तथ्य, 40 प्रतिशत घातक ट्यूमर शरीर के अन्य अंगों से मस्तिष्क तक पहुंच जाते हैं।

कैसे होता है प्राइमरी ब्रेन ट्यूमर :–

प्राइमरी ब्रेन ट्यूमर हल्का या कैंसर युक्त भी हो सकता है. युवाओं की बात करें तो उनमें गिलोमास (gliomas) किस्म का ब्रेन ट्यूमर सबसे ज्यादा पाया जाता है। इसके अलावा, दिमाग और रीढ़ की हड्डी की झिल्लियों से पैदा होने वाला ट्यूमर भी युवाओं में काफी पाया जाता है, इसे मेंनिंगोमास (meningiomas) कहते हैं। ये ट्यूमर ब्रेन सेल्स यानी मस्तिष्क कोशिकाओं से पैदा हो सकता है, नर्व सेल्स से हो सकता है, पिटचाइटरी यानी दिमाग के सबसे निचले हिस्से पर स्थित ग्रंथि से हो सकता है। दिमाग को जो झिल्लियां घेरे रहती हैं, वहां से भी ये ट्यूमर फल–फूल सकता हैं।

बेहद खतररनाक होता है सेकंडरी ट्यूमर :–
यह ट्यूमर की खतरानाक स्टेज भी कही जा सकती है। अगर किसी को सेकंडरी ट्यूमर है तो समझिए वो ब्रेन कैंसर ही है, ऐसा कैंसर होता है जो शरीर के दूसरे हिस्सों से निकलकर ब्रेन तक पहुंचता है। यानी, अगर कोई फेफड़ों के कैंसर, ब्रेस्ट कैंसर, किडनी कैंसर या त्वचा के कैंसर से पीड़ित है तो उस इंसान के दिमाग पर भी इसका असर पहुंच सकता है और उसे सेकंडरी ब्रेन ट्यूमर हो सकता है। ये बेहद घातक माना जाता है। ब्रेन और सेंट्रल स्नायुतंत्र का ट्यूमर बच्चों का कैंसर लगभग 26 प्रतिशत है। हालाकि ज्यादातार ब्रेन ट्यूमर के खतरे नहीं होते। आयोनाइजिंग रेडिएशन से संपर्क और ब्रेन टृयूमर का पारीवारिक इतिहास ही ब्रेन ट्यूमर का जोखिम बढ़ रहा है। ईलाज की बेहतर संभावना के लिए इसकी शुरूआती अवस्था में पता लगाना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

ब्रेन ट्यूमर में नवग्रह आश्रम का उपचार
ब्रेन ट्यूमर द्वारा उत्पन्न कैंसर में आश्रम की औषधियों के अच्छे परिणाम हैं। खासतोर से बिना सर्जरी करवाए रोगियों में अधिक अच्छे परिणाम हैं, मैं ब्रेन कैंसर रोगियों को सलाह देता हूं, की वह आश्रम की निम्न औषधियों का सेवन पुरे मनोयोग आत्मविश्वास और परहेज के साथ करें।

रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, सोजिस 3 चम्मच का काढ़ा बनाकर व माइग्रेन व आयुर्वेदिक कीमों दोनो ही औषधियों का चूर्ण 2–2 चम्मच शहद के साथ चटनी बनाकर सेवन करें। उपरोक्त औषधियां इतनी ही मात्रा में सांयकाल भी सेवन करें। हरे पत्तों का ज्यूस और हल्दी व गौमूत्र का सेवन नियमित रूप से करते रहें। रोगी बार–बार CT स्केन, MRI कराने से बचे एवं अति आवश्यक होने पर 6 माह में एक बार ये जाँचे करवाऐं। रोगी अगर अधिक समय अच्छी नींद निकालता हैं तो उसे अधिक लाभ होता है।

आँख का कैंसर

आजकल लोगों को तरह–तरह की बीमारियां होने लगी हैं, कोरोना काल में बिमारियां और ज्यादा बढ़ गई हैं, अगर आपको आंख में कोई परेशानी हो तो ये आपके लिए खतरानाक हो सकती है। लंबे समय तक आंख से धुधला दिखना, आंख लाल होना या फिर आंख से पानी आना आंख में कैंसर और ट्यूमर होने के संकेत हो सकते है। आंख शरीर का वो हिस्सा है। जिसमें जरा सी परेशानी होने पर इंसान तिलमिल जाता है। हालांकि कई बार लोग आंख में होने वाली इन समस्याओं को नजरअंदाज करते हैं, और बीमारी भयंकर रूप ले लेती है। आंख में होने वाला ट्यूमर आपको कुछ ऐसे संकेत देता है, जिसे समझना आपके लिए जरूरी हैं।

आंख का कैंसर आमतौर पर शुरूआत में लक्षण नहीं दिखाता है और किसी का ध्यान नहीं जाता है। हालांकि यदि आप नीचे दिए गए किसी भी संकेत और लक्षणों का अनुभव करते हैं, तो तुरंत अपने नेत्र रोग विशेषज्ञ से परामर्श लें –
(1) आई नेविगेशन या आई फ्लैश। (2) कार्निया के चारों और धुंधलापन, सफेदी और छाया, विशेष रू‍ से हाइलाइट प्रकाश। (3) आंख के सफेद हिस्से पर एक गहरा तिल जो आकार में बढ़ जाता है और चारों और रक्त वाहिकाओं से युक्त होता हैं। या रक्त बहता है। (4) दर्द के साथ दृष्टि में कमी। (5) आपकी पलक पर या आपकी आंख में ट्यूमर है जो आकार में बढ़ रहा है, रक्त वाहिकाएं बन रही हैं। (6) आँख के रंग में परिवर्तन।

क्यों होता है आंखों का कैंसर ?
आंखों का कैंसर होने के पीछे कोई एक वजह नहीं होती कई रिस्क फैक्टर हो सकते हैं, जैसे –
UV रेज का लगातार आंखों पर पड़ना, रेडियशन एवं जेनेटिक, कभी–कभी शरीर के किसी और अंग के कैंसर खून के द्वारा आंखों में फैल सकते हैं, इसे मेटास्टैटिक या सेकेंडरी कैंसर कहा

जाता है। ये ज्यादातर ब्रेस्ट या लंग कैंसर के मरीजों में देखने को मिलता हैं।

आंखों में होने वाला कैंसर वैसे तो आम नहीं है पर अगर इसका समय पर ईलाज न हो तो ये जानलेवा भी हो सकता है, आंखों में होने वाले कैंसर को हम दो हिस्सों में बांट सकते हैं –

पहला – एक्स्ट्रा ऑक्यूलर कैंसर जो ऑयलबॉल के बाहर वाली जगह पर होता है, जैसे पलकों का कैंसर, आंसुओं की ग्रंथि का कैंसर, सॉफ्ट टिश्यू या मसल का कैंसर।

दूसरा – इंट्रा ऑक्यूलर कैंसर ये आईबॉल के अंदर होता है। ये आंखों के (यूवीअल) स्ट्रक्चर पर निकलता है। यूवीअल हमारी आंखों के अंदर एक परत होती हैं। बच्चों में सबसे आम कैंसर होता है रेटिनोब्लासटोमा, ये कैंसर रेटिना (आंखों के अंदर एक परत) या आंखों के परदे पर होता हैं।

रेटिनोब्लास्टोमा क्या है ?

रेटिनोब्लास्टोमा आख का एक कैंसर है। यह ज्यादातर छोटे बच्चों में, आमतौर पर 3 वर्ष की आयु से पहले होता है। यह कैंसर 5 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों में शायद ही कभी विकसित होता है। रेटिनोब्लास्टोमा आँख के रेटिना में बनता हैं। रेटिना आँख के पीछे तंत्रिका ऊतक की एक पतली परत होती है। रेटिना की कोशिकाएं प्रकाश और रंग का पता लगाती हैं। रेटिनोब्लास्टोमा से एक आँख (एकतरफा, सबसे आम) या दोनों आँखें (दोनों तरफ) प्रभावित हो सकती हैं।

अधिकांश रोगियों में, रेटिनोब्लास्टोमा आँख तक ही सीमित रहता है और इस कैंसर का ईलाज बहुत अधिक संभव है। समय से पूर्व रोग की पहचान और उपलब्ध ईलाजों के कारण इस कैंसर के ठीक होने की दर 95 प्रतिशत से ऊपर है। यदि इस बीमारी का ईलाज नहीं किया जाता, तो यह शरीर के अन्य भागों तक फैल सकती है, जहां इसका ईलाज करना बहुत कठिन हो सकता है। आनुवंशिक रेटिनोब्लास्टोमा से पीड़ित रोगियों को जीवन में बाद में अन्य कैंसर होने का भी अधिक जोखिम होता हैं।

रेटिनोब्लास्टोमा के जोखिम कारक और कारण

अधिकांश स्थितियों में, रेटिनोब्लास्टोमा एक वंशाणु में परिवर्तन या उत्परिवर्तन के कारण होता है जो रेटिनोब्लास्टोमा (RB) वंशाणु के नाम से जाना जाता है। जब आरबी वंशाणु में उत्परिवर्तन होता है, तो कोशिकाएं असामान्य रूप से बढ़ती और विभाजित होती हैं। रेटिनोब्लास्टोमा दो प्रकार के होते है : गैर–आनुवंशिक और आनुवंशिक।

आँख के कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच का काढ़ा बनाकर व प्रतिरक्षा, माइग्रेन व आयुर्वेदिक कीमों तीनों ही औषधियों का चूर्ण 2–2 चम्मच शहद के साथ चटनी बनाकर सेवन करें। उपरोक्त औषधियां इतनी ही मात्रा में सांयकाल भी सेवन करें।

नाक का कैंसर

नाक का कैंसर (Nasal Cancer) :– नाक का कैंसर क्या है – सामान्यतया हम जब शरीर रचना विज्ञान या शरीर क्रिया विज्ञान पढते है या उसे समझते है, तब हमें ENT शब्द भी सुनने को मिलता है यानी कान नाक गला यह तिनों अंग हमे बाहर से अलग–अलग दिखाई देते है। परन्तु आन्तरीक संरचना में यह तिनों ही आपस में मिले होते है। अगर किसी व्यक्ति को नाक में सोजीस, दर्द या कैंसर होता है तो उसका दर्द कान और गले में भी महसूस होता हैं। किसी भी व्यक्ति को नाक का कैंसर तब होता हैं जब नाक के अदंर बलगम बनाने वाली कोशिकाएं या नाक में कैंसर की कोशिकाएं असामन्य रूप से विकसित होने लगती हैं। नाक के कैंसर का पता चलने पर बहुत घबराने की आवश्यकता नहीं हैं। यह आसानी से ठीक होने वाला कैंसर हैं।

नाक के कैंसर के कारण : – तम्बाकू सेवन, धुम्रपान से, नासिका गुहा का रसायनों के सम्पर्क में आना, साइनस कि लम्बे समय तक दिक्कत रहने से भी, वायु प्रदुषण के संपर्क में अधिक आना, गले या सिर में रेडियोथेरेपी लेने से भी इसकी संभावना अधिक होती हैं।

नाक के कैंसर के लक्षण –

नासिका से श्वांस लेने मे कष्ट होना, नासिका गुहा में मांस की वृद्धि का दिखना, नासिका के आसपास सुजन, नाक बंद रहना, मुख खोलने में दिक्कत होगा, दांतो में सुन्न होना, शरीर में थकान महसूस होगा।

नाक के कैंसर से बचाव –

तम्बाकू उत्पादों का सेवन नहीं करें, धूम्रपान न करें, डिब्बा बंद आहार से पहरेज करें, अधिक वायु प्रदुषण क्षेत्र से बचे व मास्क का प्रयोग करें, शुद्ध व सात्विक खाद्य पदार्थो का प्रयोग करें।

नाक के कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार –

रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच का काढ़ा बनाकर व प्रतिरक्षा व आयुर्वेदिक कीमों दोनो ही औषधियों का चूर्ण 2–2 चम्मच शहद के साथ चटनी बनाकर सेवन करें। उपरोक्त औषधियां इतनी ही मात्रा में सांयकाल भी सेवन करें।

गौघृत से नस्य कर्म करें, धूमपान–धुमनेत्र पर औषध का लेप करके उसकी धुआ को नासिक से गृहण करना, कफ नाशक औषध का प्रयोग, निमगिलोय, तुलसी, सदाबहार, हल्दी, त्रिकटु, (पीप्पली,काली मिर्च,सोंठ) आदि औषध का मिश्रण प्रयोग करें।

मुंह का कैंसर

मुंह का कैंसर मुंह या गले के ऊतकों में होता है। ये सिर और गर्दन का कैंसर है जो कि कैंसर का एक बड़ा समूह है। इसमें होंठ, गाल, जीभ, मुंह का नीचे का हिस्सा, कठोर और नरम तालु, साइनस, और गले के कैंसर शामिल हैं। यदि इनका सही समय पर उपचार न किया जाए तो यह जानलेवा भी हो सकते हैं।

मुंह का कैंसर होना अब बहुत ही सामान्य है और अगर इसका पता जल्दी चल जाए तो इसका उपचार आसानी से भी किया जा सकता है। अगर आप नियमित रूप से डेंटिस्ट के पास जाते हैं, तो आमतौर पर वह मुंह के कैंसर को शुरूआती चरणों ही पकड़ लेते हैं। पुरूषों को मुंह का कैंसर होने का

जोखिम महिलाओं की तुलना में दोगुना होता हैं। 50 वर्ष से अधिक उम्र के पुरूषों को सबसे ज्यादा जोखिम होता हैं। धूम्रपान और तम्बाकू का उपयोग मुंह के कैंसर का मुख्य कारण हैं।

भारत में मुंह के कैंसर की स्थिति –
भारत में, हर 1,00,000 में से 20 लोग मुंह के कैंसर से पीड़ित है जो कि सभी प्रकार के कैंसर का 30 प्रतिशत हिस्सा है। मुंह के कैंसर के कारण भारत में 5 से अधिक लोग हर घंटे मरते हैं। कैंसर पंजीकरण भारत में अनिवार्य नहीं है। इसलिए वास्तविक आंकड़े और मृत्यु दर अधिक हो सकती हैं क्योंकि कई मामले रिकॉर्ड ही नहीं किए जाते हैं।
भारत में मुंह के कैंसर से होने वाली मृत्यु का एक तिहाई हिस्सा तम्बाकू के उपयोग के कारण होता है और इसे रोका जा सकता हैं।

मुंह के कैंसर के प्रकार –
(1) होंठों का कैंसर, (2) जीभ का कैंसर, (3) गाल का कैंसर, (4) मसूड़ों का कैंसर, (5) मुंह के तले (जीभ के नीचे) का कैंसर, (6) सख्त और नरम तालु के कैंसर।

मुंह के कैंसर के प्रकार निम्नलिखित हैं
(1) **स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा –** मुख गुहा और ओरोफैरिंक्स (गले का मध्य हिस्सा) में पाए जाने वाले 90 प्रतिशत से ज्यादा कैंसर स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा होते हैं। आम तौर पर, गले और मुंह तथाकथित स्क्वैमस कोशिकाओं के साथ होते हैं। जो फ्लैट होते हैं और एक स्केल के समान तरीके से व्यवस्थित होते हैं। स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा का मतलब है कि कुछ स्क्वैमस कोशिकाएं असामान्य हैं।
(2) **वेरूकस कार्सिनोमा –** लगभग 5 प्रतिशत मुंह का ट्यूमर एक वर्कर्सस कार्सिनोमा होते हैं, जो स्क्वैमस कोशिकाओं से बना बहुत धीमी गति से बढ़ने वाले कैंसर का एक प्रकार है। इस प्रकार के मौखिक कैंसर शायद ही शरीर के अन्य हिस्सों में फैलते

हैं लेकिन मूल के स्थल के आसपास के ऊतकों पर आक्रमण कर सकते हैं।

(3) **माइनर सलाईवरी ग्लैंड कार्सिनोमास** – यह मुंह का कैंसर छोटे लार ग्रंथियों पर विकसित हो सकते हैं, जो मुंह और गले के अस्तर में पाए जाते हैं।

मुंह के कैंसर के लक्षणों को आमतौर पर अन्य या कम गंभीर स्थितियों के रूप में समझने की गलती हो जाती है। इसमें मुख्य रूप से दांत का दर्द, और छाले शामिल है। ऐसे में यह सुझाव दिया जाता है कि नियमित डेंटल चेकअप कराएं। यह लक्षणों के सही कारणों का पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका होता हैं।

मुंह के कैंसर के शुरूआती लक्षण क्या है?

आप खुद से शीशे के सामने खड़े होकर अपने मुंह के अंदर देख सकते हैं। अगर आपको कोई भी घाव, छाला, गांठ या कोई भी असामन्य बदलाव दिखता है जो कुछ हफ्तों से या ईलाज करवाने के बाद भी ठीक न रहा हो, तुरंत डॉ. से संपर्क करें। डॉ. जांच करके पहचान सकते हैं कि यह मुंह के कैंसर की शुरूआत है या नहीं।

मुंह के कैंसर के लक्षण

मुंह का कैंसर हो जाने पर निम्नलिखित लक्षण हो सकते है –

ठीक नहीं होने वाला छाला – मुंह में छाला जो ठिक न रहा हो, मुंह के कैंसर का लक्षण हो सकता हैं। **मुंह मे पैचं** – मुंह में मखमली सफेद, लाल या धब्बेदार पैच होना। **घाव ठीक न हो रहा हो** – चेहरे, गर्दन या मुंह पर घाव होना और 2 सप्ताह के भीतर उनका ठीक न होना कैंसर कैंसर की पहचान हो सकती हैं। **वजन घटना** – अकारण बहुत वनज घटना कैंसर का संकेत हो सकता हैं। **मुंह में आसामन बदलाव** – होंठ, मसूडों या मुंह के अन्य क्षेत्रों में सूजन, गांठ, धब्बे, पपड़ी या कटाव विकसित होना। **खून बहना** – मुंह से बिना किसी वजह खून बहना।

मुंह के कैंसर के चरण –

स्टेज 0 – कैंसर वहीं है जहां से शुरू हुआ था और फैला नहीं है।

स्टेज 1 – कैंसर छोटा ही है और कहीं भी फैला नहीं हैं।

स्टेज 2 – कैंसर बड़ा हो गया है लेकिन फैला नहीं है।

स्टेज 3 – कैंसर बड़ा हो गया है और आसपास के ऊतकों और या लिम्फ नोड्स (लसीका तंत्र का हिस्सा) में शायद फैला हो सकता हैं।

स्टेज 4 – कैंसर जहां से शुरू हुआ था वहां से कम से कम एक अन्य शरीर अंग तक फैल गया है, इसे माध्यमिक या मेटास्टेटिक कैंसर के रूप में भी जाना जाता हैं।

मुंह के कैंसर के कारण क्या हैं –

मुंह के कैंसर का सबसे आम कारण तंबाकू की लोकप्रियता है। इसके साथ अलग–अलग रूप हैं। इसे चबाया जा सकता है या धूम्रपान किया जा सका हैं। नाश्ते वाले तंबाकू का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है जैसे मावा, खेनी, पान, पान मसाला आदि। इसे बीड़ी, हुक्का, सिगरेट आदि के रू॰ में इस्तेमाल किया जा सकता है। हमारे देश का ये सभी रूप में खतरनाक और कैंसर के कारण बनते हैं।

एक महीने में कम से कम एक बार मुख की आत्म परीक्षा करें –

तेज रोशनी में आईने के सामने खड़े होंकर अपने होठ और अपने मसूड़ों के सामने के हिस्से को महसूस करें। अपने सिर को पीछे झुकाएं और अपने मुंह की ऊपरी परत को देखें और महसूस करें। अपने गाल को खीचें और अपने मुंह के अंदर, अपने गालों की परत और पीछे के मसूडो को देखें। गर्दन के दोनों तरफ और निचले जबड़े में गांठों या बढ़े हुए लिम्फ नोड्स को महसूस करें। अपने दंत चिकित्सक को तत्काल सपर्क करें यदि आपको अपने मुंह में कोई असामान्य बदलाव या मुंह के कैंसर का कोई भी लक्षण महसूस हो।

नियमित तोर पर अपने दंत चिकित्सक के पास जाकर परीक्षण कराएं – भले ही आप अपने मुंह का अक्सर स्वंय परीक्षण करते हों लेकिन कभी–कभी छोटे धब्बे या मुंह में घाव खतरनाक हो सकते हैं और अपने आप देखने मुश्किल हो सकते हैं। अमेरिकन कैंसर सोसायटी मुंह के कैंसर के लिए 20 साल से अधिक उम्र के व्यक्तियों को हर तीन साल में और 40 साल से अधिक उम्र के लोगों को सालाना जांच कराने की सलाह देती हैं।

मुंह के कैंसर का प्रारंभिक चरण में पता लगाने से सफल उपचार की संभावना बढ़ सकती हैं।

मुंह का कैंसर

हमारे देश के पुरूषों में होने वाले कैंसर के रोगों में मुख का कैंसर सबसे अधिक पाया जाता है और स्त्रियों में भी यह काफी तादाद में पाया जाता है। इतनी भारी मात्रा में मुख का कैंसर होने का मुख्य कारण है तंबाकू को चबाने की आदत को होना, जो हमारे देश के हर हिस्से में देखी जाती है। यह आदत उतरी भारत के राज्यों में दिखाई नहीं देती, इसलिए इन प्रांतों में रहने वाले पुरूषों एवं स्त्रियों में मुख का कैंसर उतनी अधिक मात्रा में नहीं दिखाई देता है जितना कि उतर प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि में। मुंह में लंबे समय तक गुटका रखने की आदत के कारण गाल के अंदर, मसूड़ों, जीभ आदि में उतेजन होता है और गुटका रखने की आदत, तंबाकू खाने की आदत से बहुत अधिक हानिकारक हैं।

पान मसाला खाने की आदत बढ़ती जा रही है और अनुसंधान से पता लगा है कि लंबे समय तक पान मसाला खाने से कैंसर हो सकता हैं।

मुख का कैंसर सबसे अधिक मात्रा में होता है मुंह के अंदर नीचे के हिस्से में, ओंठ, जीभ और फैरिंक्स में। कैंसर मुख के अन्य स्थानों पर भी हो सकता हैं।

जीभ का कैंसर

जीभ का कैंसर आमतौर पर जीभ के हाशिए या नोक पर आंरभ होता है। यह आमतौर पर घाव के रूप में आंरभ होता है, जो कि

प्रारंभिक अवस्था में बहुत छोटा होता है, परंतु धीरे–धीरे आकार में बढ़ता है। उगंलियों द्वारा छुने जाने पर यह घाव दूसरे हिस्सों की तुलना में सख्त महसूस होता है। जल्दी ही जीभ का कैंसर गर्दन में स्थित लसिका ग्रंथियों में मेटास्टेटिस के रूप में फैल जाता है। इसलिए जीभ के कैंसर के अधिकतर मरीज जब चिकित्सक के पास अपनी जांच कराने जाते हैं तो उनकी लसिका ग्रंथियों में मेटास्टेटिस पहले से ही मौजूद होता है। दो सप्ताह के आम ईलाज से ठीक नहीं होने वाला जीभ का घाव कैंसर की शंका उत्पन्न करना है, खास कर अगर मरीज की उम्र 40 वर्ष से अधिक हो।

मुंह के नीचे के हिस्से और गालों के अंदर का कैंसर

भारत में तंबाकू खाने की आदत के कारण, इस जगह का कैंसर काफी तादाद में पाया जाता है। प्रांरभिक लक्षण बहुत स्पष्ट नहीं होते हैं, अतः उन पर बहुत गौर नहीं किया जाता है, परंतु बीमारी बढ़ती जाती हैं। दर्द, सूजन, घाव, खाना खाने और बात करने में असुविधा आदि इस बीमारी को प्रांरभिक लक्षण होते हैं।

माउथ कैंसर का आयुवेदिक इलाज

मुंह के कैंसर रोगी को सर्वप्रथम यह सलाह दि जाती हैं, की उसे भोजन, फल और अन्य खाने की सामग्री को खाना नहीं हैं। उसे भी लिक्वीड बनाकर पीने की सलाह देता हूं, क्योंकि मुंह के अन्दर घाव बार–बार छिलने से और साफ–सफाई पुरी नहीं होने के कारण घाव में गहरी–गहरी केवेटीज बन जाती हैं। इसके कारण रोगी का कैंसर बढ़ता जाता हैं। माउथ कैंसर के रोगी को मुख कुल्ला औषधी से दिन में 5–6 बार कुल्ला करने की सलाह दि जाती हैं, 2 चम्मच दवा 200 मी.ली. पानी में डालकर 6–7 घण्टे भीगने देने के बाद मिक्सी में ग्राइन्ड करके छान लेने के पश्चात इस पानी का इस्तेमाल कुल्ले के लिए करें। आश्रम की औषधियां रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच का काढ़ा बनाकर आयुर्वेदीक कीमों 2 चम्मच चूर्ण शहद के साथ सेवन करने की सलाह दि जाती हैं, उपरोक्त मात्रा में इतनी ही औषधी का सेवन सांय काल भी करना हैं। हरे पत्तों का ज्यूस और हल्दी व गौमूत्र का सेवन प्रातःकाल और सांय काल नियमित रूप से सेवन करें।

थायराइड कैंसर

कैंसर एक जानलेवा बीमारी है। यह जिस अंग में पनपती है इसे उसी नाम से जाना जाता हैं। थायराइड कैंसर भी इसी का उदाहरण है। थायराइड आपके गले में तितली के आकार की एक ग्रंथि होती है। यह ग्रंथि शरीर में सबसे ज्यादा जरूरी हार्मोन को बनाती है, जो हृदय गति, रक्तचाप, शरीर के तापमान और वजन को नियंत्रित करता है। इसके अलावा शरीर के मेटाबॉलिज्म को भी कंट्रोल करने का काम करता है। ऐसे में इस ग्रंथि में होने वाली किसी भी तरह की परेशानी आपके जान को जोखिम में डाल सकती हैं। थायराइड कैंसर की कोशिकाओं में होता है। आपके एडम एप्पल (गले पर उभार) के ठीक नीचे, आपकी गर्दन के आधार पर स्थित एक तितली के आकार का ग्रंथि। आपका थायराइड हार्मोन पैदा करता है जो आपके हृदय गति, रक्तचाप, शरीर के तापमान और वनज को नियंत्रित करता है।

थायराइड कैंसर शायद पहले कोई लक्षण पैदा न करे। लेकिन जैसे–जैसे यह बढ़ता है, यह आपकी गर्दन में दर्द और सूजन पैदा कर सकता है।

अधिकांश थायराइड कैंसर रोग की शुरूआत में कोई लक्षण या संकेत नजर नहीं आतें हैं। लेकिन जैसे–जैसे थायराइड कैंसर बढ़ता है आप कुछ बदलावों का अनुभव कर सकते हैं।

थायराइड कैंसर कितना खरनाक होता हैं?

कैंसर का समय पर पता लग जाने से इसका उपचार आसान हो जाता हैं। वैसे तो लोग थायराइड कैंसर से कम ही मरते हैं, लेकिन इसकी गंभीरता को नजरअंदाज करना आपको मौत के करीब ला सकता है। थायराइड कैंसर कई प्रकार के होते हैं जिसमें से कुछ इस स्वभाव के होते हैं कि तेजी से हड्डियों और शरीर के दूसरे अंगो में फैलने लगते हैं। ऐसे में सबसे ज्यादा खतरा आपके फेफड़ों को होता हैं।

NHS के अनुसार, थायराइड कैंसर तब होता है जब थायरायड की कोशिकाएं अपने डीएनए में परिवर्तन विकसित करती हैं। जो

कोशिकाओं को बताते हैं कि क्या करना है। परिवर्तन, जिसे डॉ. म्यूटेशन कहते हैं, कोशिकाओं को बढ़ने के लिए कहते हैं। जब ये कोशिकाएं जीवित रहती हैं जब स्वस्थ कोशिकाएं स्वाभाविक रूप से मर जाती हैं। और ऐसे में जमा होने वाली कोशिकाएं एक ट्यूमर का निर्माण करती हैं।
थायराइड एक गंभीर बीमारी है जिसमें टी–3 और टी–4 हार्मोन का उत्पादन कम या ज्यादा होने की वजह से रोगी का गर्दन में सूजन, वनज में कमी, भूख में वृद्धि, मल त्याग बढ़ना, अनियमित मासिक धर्म, तेजी से या अनियमित दिल की धड़कन, थकान, चिड़चिडापन, कापंना, बालों का पतला होना और पलकों का पीछे हटना जैसी समस्याएं हो सकती हैं।
टी–3 और टी–4 के कम होने के कारण आपको थकान, ज्यादा ठंड लगना, हार्ट रेट कम होना, वनज बढ़ना, भूख में कमी, याददाश्त कमजोर होना, तनाव, मांसपेशियों में थकान, फर्टिलिटी कम होना आदि समस्याएं हो सकती हैं।

थायराइड कैंसर पुरूषों की तुलना में महिलाओं में अधिक बार होता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह हार्मोन एस्ट्रोजन से संबंधित होने के कारण हो सकता है। इसके साथ ही रकडिएशन के उच्च स्तर के संपर्क से थायराइड कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा यह बीमारी आनुवंशिक भी होती है। थायराइड कैंसर के प्रकार जो जेनेटिक होते हैं, उनमेंद मेडुलरी थायराइड कैंसर और पैपिलरी थायराइड कैंसर शामिल हैं।

थायराइड कैंसर के शुरूआती लक्षण

अगर गले में दर्द के साथ–साथ सूजन जैसा भी महसूस हो, तो इस लक्षण को अनदेखा ना करें बल्कि तुंरत नजदिकी डॉ. से सलाह लें। थायरायड कैंसर के शुरूआती लक्षण के रूप में रोगी काफी कमजोरी, हद से ज्यादा जोड़ों और मांशपेशियों में दर्द महसूस होने लगता है। व्यक्ति को काफी थकान और कमजोरी महसूस होने लगती है।
इसके अलावा इसके लक्षणों में गांठ का बनना, जो आपकी गर्दन पर महसूस की जा सकती है, आपकी आवाज का बदलना जिसमें

स्वर का बदलना शामिल है, निगलने में कठिनाई, आपकी गर्दन और गले में दर्द रहना, आपकी गर्दन में लिम्फ नोड्स में सूजन होना आदि भी शामिल हैं।

थायराइड कैंसर के लक्षण –
1. गर्दन में एक गांठ बनना और कभी–कभी गांठ का तेजी से बढ़ना, 2. गर्दन में सूजन होना, 3. गर्दन के सामने के हिस्से में दर्द और कभी–कभी दर्द का कान तक जाना, 4. गला बैठना या आवाज में अन्य परिवर्तन होना जो ठीक नहीं होते, 5. निगलने में कठिनाई होना, 6. सांस लेने में कठिनाई होना, 7. ठंड की वजह से न होने वाली खांसी, 8. गर्दन और गले में दर्द, 9. गले के लिम्फ नोड्स में सूजन।

यदि आपको इनमें से कोई भी लक्षण होते हैं, तो तुंरत अपने चिकित्सक से बात करें। यह लक्षण कई गैर–कैंसर स्थितियों या अन्य कैंसर के कारण भी सकते हैं। थायराइड में गांठें सामान्य और सौम्य होती हैं। फिर भी, यदि आपको इन लक्षणों में से कोई भी होता है, तो तुरंत अपने चिकित्सक के पास जाएं।

महिलाओं में थायराइड कैंसर के लक्षण –
महिलाओं में थायराइड कैंसर के शुरूआती लक्षणों के रूप में देखा गया है कि उन्हें पीरियड्स के दौरान सामान्य से काफी ज्यादा दर्द होता है। ऐसा होने पर महिलाओं को एक बार डॉ. से परामर्श जरूर ले लेना चाहिए। इसके अलावा महिलाओं में यदि प्रेगनेंसी से जुड़ी किसी प्रकार की समस्या हो रही हो, तो सबसे पहले थायराइड टेस्ट करा लें।

थाइराइड कैंसर के प्रकार

पैपिलरी थायराइड कैंसर –
पैपिलरी थायराइड कैंसर, थायराइड कैंसर का सबसे आम प्रकार है जो उन कूपिक कोशिकाओं से उत्पन होता है, जो थायराइड हार्मोन का उत्पादन और संचय करती हैं। यह कैंसर किसी भी उम्र में हो सकता है लेकिन अक्सर यह 30–50 साल के लोगों को प्रभावित करता हैं।

फॉलिक्युलर थायराइड कैंसर –

फॉलिक्युलर थायराइड कैंसर भी थायराइड की कूपिक कोशिकाओं से उत्पन होता हैं। यह आमतौर पर 50 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को प्रभावित करता हैं।

मेडयुलरी थायराइड कैंसर –

मेडयुलरी थाइरायड कैंसर उन थायराइड कोशिकाओं में शुरू होता है जिसे सी कोशिका कहते हैं जो कैल्सीटोनिन हार्मोन उत्पन करती हैं। रक्त में कैल्सीटोनिन का ज्यादा स्तर, प्रारंभिक चरण में मेडयुलरी थायराइड कैंसर का पता लगा सकता है। कुछ आनुवंशिक लक्षणो से मेडयुलरी थायराइड कैंसर का खतरा बढ़ जाता है, हालांकि यह आनुवंशिक लक्षण असामान्य होते हैं।

ऐनाप्लास्टिक थायराइड कैंसर –

ऐनाप्लास्टिक थायराइड कैंसर एक दुर्लभ और तेजी से बढ़ने वाला कैंसर है जिसका ईलाज बहुत मुश्किल है। यह कैंसर आमतौर पर 60 या उससे अधिक उम्र के वयस्कों में होता हैं।

थायराइड लिंफोमा –

थायराइड लिंफोमा, थायराइड कैंसर का एक दुलर्भ प्रकार है जो थायराइड में प्रतिरक्षा प्रणाली कोशिकाओं में शुरू होता है और बहुत जल्दी बढ़ता है। थायराइड लिंफोमा आमतौर पर बड़े वयस्कों में होता हैं।

निम्नलिखित कारक थायराइड कैंसर के खतरे को बढ़ा सकते हैं–

1. महिलाएं – पुरूषों की तुलना में महिलाओं में थायराइड कैंसर अधिक होता हैं, 2. विकिरण सम्पर्क – विकिरण के ज्यादा संपर्क में आने से थायराइड कैंसर का जोखिम बढ़ जाता हैं, 3. कुछ आनुवंशिक सिंड्रोम – मेडयुलरी थायराइड कैंसर, कई एंडोक्राइन न्यूलासिआ और पारिवारिक एडिनोमैटिस पॉलीपोसिस जैसे कुछ सिंड्रोम का पारिवारिक इतिहास थायराइड कैंसर का जोखिम बढ़ा सकता हैं।

थायराइड कैंसर कि जटिलताएं क्या हैं ?

उपचार के बावजूद थायराइड कैंसर फिर से हो सकता है, भले ही आपका थायराइड निकाल दिया गया हो। ऐसा हो सकता है कि सूक्ष्म कैंसर कोशिकाएं हटाए जाने से पहले थायराइड से बाहर फैल गयी हों। थायराइड कैंसर फिर से होना ज्यादातर सर्जरी के बाद पहले पांच वर्षों में होता है लेकिन यह कुछ दशकों के बाद भी हो सकता हैं।

थायराइड कैंसर निम्नलिखित जगहों में पुनः उत्पन्न हो सकता है–

1. गर्दन के लिम्फ नोड्स में, 2. थायराइड ऊतक के छोटे टुकड़े जो सर्जरी में निकाले नहीं गए हों, 3. शरीर के अन्य क्षेत्र।

पुनः होने वाले थायराइड कैंसर का ईलाज किया जा सकता हैं। आपके डॉ. थायराइड कैंसर पुनरावृति के लक्षणों की जांच के लिए रक्त परीक्षण या थायराइड स्कैन कर सकते हैं।

थाइराइड कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

आप को ज्ञात होना चाहिए की यह कैंसर महिलाओं में अधिक पाया जाता हैं। परन्तु 20% पुरूषों में भी यह होता हैं। अधिकांश रोगी इस कैंसर से जंग जीत जाते है। क्योंकि इसकी ट्यूमर अधिकतर मामलों में एग्रेसीव नहीं होती है। श्री नवग्रह आश्रम से इसकी चिकित्सा करने के लिए रक्तशोधन 6 चम्मच, थाईराइड 3 चम्मच, सोजिस 3 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच इन सब का काढ़ा बनाकर और आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच शहद के साथ में लेनी हैं। यह औषधियां प्रातः एवं सांय दोनो समय लेनी है। गौमूत्र 50 मी.ली., हल्दी 5 ग्राम गांठ हल्दी का एक उबाला लेकर प्रातः और सांय छानकर सेवन करें। रोगी को आलू, चांवल, उड़द की दाल, आदि वात कारक भोजन से परहेज करना चाहिऐ।

गले का कैंसर

थ्रोट कैंसर को हिन्दी में गले कैंसर (Throat Cancer in Hindi) के नाम से जाना जाता है। गले का कैंसर एक प्रकार के ट्यूमर होता है, जो आपके गले (फेरनक्स), वॉयस बॉक्स (लारेंक्स) या टन्सिल में विकसित होता है। आपका गला एक मांसपेशी ट्यूब है जो आपकी नाक के पीछे शुरू होता है और आपकी गर्दन में समाप्त होता है। गले का कैंसर (Throat Cancer Symptoms in Hindi) अक्सर फ्लैट कोशिकाओं में शुरू होता है जो आपके गले के अंदर रेखाबद्ध होते हैं। आपका वॉयस बॉक्स आपके गले के ठीक नीचे होता है और गले के कैंसर के लिए यह अतिसंवेदनशील होता है। वॉयस बॉक्स उपास्थि या कार्टिलेज से बना होता है और इसमें मुखर तार (Vocal Cords) होते हैं, जो बात करते समय कंपन करते हैं। जिसमे हमारी आवाज हमारे मुंह से बाहर आती हैं।

गले के कैंसर के 7 संकेत :–

आवाज बदलना या आवाज में भारीपन आना, खाना निगलने में दिक्कत होना, तेजी से वनज घटना, लंबे गले में खराश रहना, कफ के साथ खून निकलना, गर्दन में सूजन और दर्द बने रहना। लंबे समय तक कान में दर्द होना।

ये परेशानी 2–3 सप्ताह के अंदर ठीक नहीं हो रही है तो बेहतर है डॉक्टर से परामर्श करने के लिए क्योंकि ये लक्षण कैंसर के कारण हो सकते हैं। गले के कैंसर का ईलाज संभव है अगर जल्दी पता चल जाए और गले में हो रही समस्या का पता चल जाता है। गले के कैंसर के इन लक्षण को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

आपको बता दें कि भारत में हर साल 3 से 6 प्रतिशत लोग गले में कैंसर की वजह से अपनी जान गवाते हैं। गले के कैंसर की वजह से महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों की मौत ज्यादा होती है। इस गंभीर बीमारी की वजह से जान गवाने का एक मुख्य कारण यह भी है कि लोग शुरूआती समय में गले के कैंसर की पहचान

नहीं करा पाते हैं। तो चलिए आज आपको गले में कैंसर के लक्षण के बारे में विस्तार से बताते हैं।

क्या होता है गले का कैंसर ?

गले का कैंसर में आपके गले में एक एक ट्यूमर बन जाता है। जो लोग अधिक मात्रा में शराब का सेवन करते हैं, या अपनी जीवनशैली में धूप्रपान को एक आदत बनाए हुए हैं, उन्हें गले के कैंसर का खतरा ज्यादा होता है।

गले का कैंसर स्वरयंत्र (आवाज बॉक्स), गले (ग्रसनी), मुखर डोरियों या टॉन्सिल में शुरू होता है। यह उन कैंसर का भी संकेत दे सकता है जो थाइरॉयड या अन्नप्रणाली (भोजन नली) में शुरू होते हैं। यह कैंसर ज्यादातर गले की अंदरूनी परत में फ्लैट कोशिकाओं में देखा जाता है।

कैंसर रोगों का एक समूह है जिसमें शरीर की कोशिकाओं का अनियंत्रित विभाजन शामिल होता है, जिसके परिणामस्वरूप कोशिकाओं का एक समूह बन जाता है, जिसे ट्यूमर कहां जाता हैं।

गले में कैंसर होने के कारण :–

धूम्रपान ना करें, शराब का अधिक मात्रा में सेवन करना, पेट से जुड़ी हुई समस्या खासतौर से एसिडरिफलेक्शन, अधिक मात्रा में तंबाकू का सेवन, पोषक तत्वों की कमी।

गले में कैंसर के लक्षण–

गले में हमोशा खराश रहना, 2. आवाज में बदलाव, 3. निगलने में परेशानी, 4. गले में खराश, 5. सांस लेने में तकलीफ, 6. आवाज में बदलाव, 7. खांसी में खून, 8. गले और में दर्द, 9. वजन कम होना, 10. खाना निगलने में तकलिफ।

गले के कैंसर के प्रकार :–

नासोफैरेनजील कैंसर – यह नासोफैरेन्क्स में शुरू होता है जो नाक के पीछे आपके गले का हिस्सा होता है।

ओरोफ्रैंजल कैंसर – यह ओरोफ्रैंजल में शुरू होता है जो आपके गले में, मुंह के दायें तरफ पीछे का हिस्सा होता है, जिसमें आपके टन्सिल भी शामिल हैं।

ह्य्पोफ्रेन्जल कैंसर – यह ह्य्पोफ्रेरिंक्स में शुरू होता है जो एसोफैगस और विंडपाइप से ऊपर हमारे गले का निचला हिस्सा होता है।

ग्लोटिक कैंसर – ग्लोटिक कैंसर मुखर तारों (वोकल कॉर्ड) में शुरू होता हैं।

सुपरग्लोटिक कैंसर – सुपरग्लोटिक कैंसर larynx के ऊपरी भाग में शुरू होता है और एपिग्लोटिस को प्रभावित करता है, जो उपास्थि का एक टुकड़ा है जो भोजन को आपके विंडपाइप में जाने से रोकता है।

सबग्लोटिक कैंसर – सबग्लोटिक कैंसर आपके वॉइस बॉक्स के निचले भाग में, अपने मुखर तारों के नीचे शुरू होता है।

गले के कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

गले के कैंसर रोगी को स्पष्ट निर्देश हैं, कि वह प्रयास करें की जितना हो सके सोलीड (ठोस) की बजाए सेमी लिक्विड या लिक्विड भोज्य सामग्री ही इस्तेमाल करनी हैं। फलों को ज्यूस के रूप में और सब्जियों को रस्सेदार रखते हुए सूप के रूप में ग्रहण करना हैं।

गले के कैंसर के रोगी को आश्रम की औषधी सोजिस 3 चम्मच, कफ़–खाँसी 3 चम्मच, रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच इन सभी का एक साथ काढ़ा बनाकर प्रातःकाल 8:00 बजे पूर्व सेवन कर लें और इसी मात्रा में इसी विधि से दोपहर 2 बजे बाद पुनः काढ़ा बनाकर सेवन करें। आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच शहद के साथ प्रातः और सांय सेवन करें। 5ग्राम हल्दी और 50 मी.ली. गौमूत्र का एक उबाला लेकर छानकर पिना हैं। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातःकाल 5:00 बजे और दोपहर 2:00 बजे सेवन करना हैं।

ट्रेकिया का कैंसर

स्वांसनली का कैंसर मुंह और नाक को फेफड़े से जोड़ने वाली नलिका को प्रभावित करता है। यह एक विशिष्ट ज्ञात कारण के बिना कैंसर का एक दुलर्भ रूप हैं। ट्रेकिया के कैंसर को प्राथमिक और माध्यमिक कार्सिनोमा के रूप में देखा जाता है। प्राथमिक कैंसर स्वांसनली से होता है जबकि दूसरा कैंसरा कैंसर के कारण होता है जो स्वांसनली में किसी अन्य स्थान से फैलता हैं।
लगभग 75 प्रतिशत प्राथमिक स्वांसनली के कैंसर या तो स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा (सबसे आम) या एडेनोइड सिस्टिक कार्सिनोमा (एसीडी) हैं। एडेनोइड सिस्टिक कार्सिनोमा 40 और 50 साल की उम्र के बीच पुरूषों और महिलाओं के बीच समान मात्रा में पाए जाते हैं और 1 प्रतिशत सिर और गर्दन के लिए कैंसर के लिए जिम्मेदार होते हैं। एसीसी में प्रगति की दर धीमी है। 60 से 70 साल की उम्र के पुरूष एससीसी से निरपवाद के रूप में प्रभावित होते हैं।
पासपोर्टरी ट्रेकिअल कार्सिनोमा ट्यूमर होते हैं जो फेफड़े, अन्नप्रणाली, तंरग, या स्वरयंत्र से स्वांसनली में फैलते हैं।

ट्रेकिया का कैंसर के कारण क्या हैं?

ट्रेकिया कैंसर का कोई स्पष्ट कारण नहीं है। धुम्रपान SSC का कारण माना जाता है। सामान्य तौर पर, यह स्पष्ट नहीं है कि प्राथमिक स्वांसनली का कैंसर विकसित होता है। ट्रेकिया कैंसर किसी भी उम्र में इंसानों को प्रभावित कर सकता हैं।

ट्रेकिया का कैंसर के लक्षण और संकेत क्या हैं?

उच्च वायुमार्ग की रूकावट – प्राथमिक लक्षण, निगलने में समस्या (डिस्फैजिया), खांसी में खून या खून से सना हुआ बलगम (हेमोप्टाइसिस), कर्कश स्वर, बार–बार बुखार आना, सीने में जकडन और ठंड लगना, जोर–जोर से सांस लेना और घरघराहट।

ट्रेकिया का कैंसर के चरण

सामान्य तौर पर, श्वांस नली के ट्यूमर का जैसे रूप में मंचन किया जाता हैं :–

प्रारंभिक या स्थानीय – कैंसर जो श्वांसनली तक सीमित है।

स्थानीय रूप से उन्त – कैंसर जो शरीर के आसपास की जगहों पर आक्रमण कर चुका हैं।

मेटास्टैटिक या उन्त – कैंसर जो दूरस्थ स्थानों में फैल गया है, जो जैसे कि यकृत, फेफड़ो या हड्डियाँ।

ट्रेकिया के कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार–

गले के कैंसर के रोगी को आश्रम की औषधी सोजिस 3 चम्मच, कफ़–खाँसी 3 चम्मच, रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच इन सभी का एक साथ काढ़ा बनाकर प्रातःकाल 8:00 बजे पूर्व सेवन कर लें और इसी मात्रा में इसी विधि से दोपहर 2 बजे बाद पुनः काढ़ा बनाकर सेवन करें। आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच शहद के साथ प्रातः और सांय सेवन करें। 5ग्राम हल्दी और 50 मी.ली. गौमूत्र का एक उबाला लेकर छानकर पिना हैं। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातःकाल 5:00 बजे और दोपहर 2:00 बजे सेवन करना हैं।

आहार नली का कैंसर

ऐसोफैगस कैंसर (खाने की नली का कैंसर) ऐसा कैंसर है जो एसोफैगस (एक लंबी, खोखली टयूब जो आपके गले से आपके पेट तक जाती है, जिसे खाने की नली या ग्रासनली भी कहते हैं) में होता हैं। आप जो भोजन खाते हैं एसोफैगस उसे पेट में पाचन के लिए पहुंचाती हैं।

खाने की नली का कैंसर आम तौर पर उन कोशिकाओं में शुरू होता है जो एसोफैगस के अंदर होती हैं। खाने की नली का कैंसर एसोफैगस में कहीं भी हो सकता है। महिलाओं की तुलना में पुरूषों को खाने की नली का कैंसर ज्यादा होता हैं।

दुनिया के कई क्षेत्रों में, जैसे एशिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में, खाने की नली का कैंसर बहुत आम हैं।

कुछ ऐसे कारक ज्ञात है, जो एयोफैगल कैंसल के विकास के जोखिम को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसमें शराब का सेवन, स्मोकिंग, गैस्ट्रोओसोफेगल रिफ्लक्स डिजीज, बैरेट एसोफैगस, अधिक वनज या मोटापा, पर्याप्त मात्रा में फल और सब्जियों का सेवन नहीं करना आदि शामिल हैं।

ऐसोफैगस कैंसर यानी खाने की नली में कैंसर एक सामान्य कैंसर है, जो पुरूषों को महिलाओं की तुलना में अधिक होता है। इसके शुरूआती स्टेज में व्यक्ति को सॉलिड चीजें खाने में परेशानी होती है और धीरे–धीरे यह परेशानी काफी ज्यादा बढ़ जाती है, जिसके बाद मरीज को दलिया जैसी लिक्विड चीजें भी निगलने में परेशानी का सामना करना पड़ता है और मरीज का लाईफ सिर्फ पानी पर सीमित रह जाता हैं। ऐसे में अगर आपको खाने पीने में किसी तरह की परेशानी हो तो तुंरत डॉक्टर से संपर्क करें। अधिकतर मामले ऐसी स्थिति पर सामने आते हैं, जब व्यक्ति के गले में कुछ फंस जाता है और वह डॉक्टर के पास आते हैं। इस स्थिति में बीमारी का डायग्नोस करने पर पता चलता है कि उन्हें एसोफैगस कैंसर हैं। ऐसी स्थिति मरीज के लिए गंभीर हो सकती हैं।

खाने की नली के कैंसर का कारण

हमारी कुछ आदतों और स्थितियों के कारण खाने की नली में कैंसर होने का खतरा ज्यादा रहता हैं।

शराब का सेवन, धूम्रपान, बैरेट एसोफैगस (इस स्थिति में खाने की नली का अस्तर नष्ट होने लगता है, जिसमें एसिडिटी की समस्या ज्यादा होती हैं), अधिक वनज होना, गैस्ट्रोओसोफैगल रिफ्लक्स डिजीज(GERD), पर्याप्त रूप से संपूर्ण आहार ना लेना। फल और सब्जियां कम खाना, एकैल्शिया की समस्या होना इस स्थिति में ग्रासनली और पेट के मध्य का हिस्सा पेशी वाल्व सही से कार्य करना बंद देती हैं।

खाने की नली के कैंसर के लक्षण :–

खाने में परेशानी (सोलिड खाने में परेशानी, लेकिन लिक्विड चीजें खाने में परेशानी नहीं हैं), अनियमित रूप से वजन में कमी आना, एसिडिटी की शिकायत होना, खट्टी डकार आना, उल्टी होना, खाने को निगलने में परेशानी होना, सीने में जलन, सीने में दर्द होना, निगलने में परेशानी, गले के आसपास दर्द होना, पेट में अचानक तेज दर्द होना, पुरानी खांसी दोबारा उठना, थकान महसूस होना, अत्यधिक हिचकी आना।

खाने की नली में कैंसर के प्रकार

भोजन नली का कैंसर कोशिकाओं के प्रकार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। खाने की नली में कैंसर के दो मुख्य प्रकार है :–

स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा – स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा प्रकार का ऐसोफैगल कैंसर, खाने की नली (ग्रासनली) के अस्तर को बनाने वाली फ्लैट, पतली कोशिकाओं में शुरू होता हैं। इस प्रकार का कैंसर, खाने की नली के ऊपरी या मध्य भाग में सबसे अधिक दिखाई देता हैं।

एडिनोकार्सिनोमा – जब ग्रासनली में श्लेष्म जैसे तरल पदार्थ का उत्पादन करने वाली ग्रंथियों की कोशिकाओं में कैंसर एडिनोकार्सिनोमा प्रकार का होता हैं। एडिनोकार्सिनोमा सबसे अधिक खाने की नली के निचले हिस्से को प्रभावित करता हैं।

अन्य दुर्लभ प्रकार – अन्य दुर्लभ के एसोफैगस कैंसर में निम्न को शामिल किया जा सकता है, जैसे – स्माल सेल कार्सिनोमा, सारकोमा, लिम्फोमा आदि।

आहार नाल कैंसर के पांच चरण

0 स्टेज – इस चरण में कैंसर का विकास नहीं होता है, केवल असामान्य कोशिकाएं पाई जाती हैं।

1 स्टेज – इस स्टेज में कैंसर केवल आहार नली की परत में पाई जाने वाली कोशिकाओं तक ही सीमित होता हैं।

2 स्टेज – इस स्टेज में ट्यूमर कोशिकाएं, आहार नली की बाहरी दीवार तक फैल चुकी होती हैं। इसके अलावा, कैंसर पास के 1 से 2 लिम्फ पोड्स तक फैल सकता हैं।

3 स्टेज – इस स्टेज का मतलब है कि कैंसर आंतरिक मांसपेशियों की परत या संयोजी ऊतक की दीवार में गहराई तक फैल गया है। तथा यह कैंसर आहार नली के आस पास के अंग या पास के अधिकांश लिम्फ नोड्स में फैल सकता हैं।

स्टेज 4 – यह कैंसर का सबसे विकसित और उन्नत चरण है। इसका मतलब है कि कैंसर शरीर में अन्य अंगों या आहार नली से दूर लिम्फ नोड्स तक फैल गया हैं।

खाने की नली में कैंसर परीक्षण :–

एंडोस्कोपी में डॉक्टर आपके गले में एक पतली लचीली टयूब जिसके आगे कैमरा होता है (एंडोस्कोप), आपके गले में डाल के परीक्षण करते हैं।

बायोप्सी – बायोप्सी में आपके डॉक्टर सर्जरी, एन्डोस्कोप या सुई का उपयोग कर के आपके गले में से एक टिश्यू निकालेंगे और कैंसर का परिक्षण करेंगे।

एक्स रे – सीटी स्कैन, एमआरआई (MRI) और पेट स्कैन यह दिखा सकते हैं कि कैंसर आपके गले से बाहर आपके शरीर के दूसरे हिस्सों तक पहुँच गया है या नहीं।

खाने की नली के कैंसर से बचाव :–

हालांकि ग्रसिका का एक कैंसर रोकने का कोई निश्चित तरीका नहीं है। फिर भी कुछ बचाव के तरीके अपनाकर व्यक्ति खाने की नली के कैंसर के जोखिम को कम कर सकता हैं। कैंसर के जोखिम को कम करने के लिए धुम्रपान न करें, तंबाकू के सेवन से परहेज करें, नियमित रूप से व्यायाम करें, शराब के अधिक सेवन से बचें, फल–सब्जियों का खूब सेवन करें और स्वस्थ वजन बनाए रखें।

आहार नाल कैंसर का आयुर्वेदिक ईलाज

जब किसी व्यक्ति को गले से खाना निगलने में परेशानी महसूस हो और ऐसा 10 से 15 दिन तक लगातार रहे तो आप तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें। आहार नाल के कैंसर के रोगी को आश्रम की औषधी रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच इन का एक साथ काढ़ा बनाकर प्रातःकाल 8:00 बजे पूर्व सेवन कर लें और इसी मात्रा में इसी विधि से दोपहर 2 बजे बाद पुनः काढ़ा बनाकर सेवन करें। आयुर्वेदिक कीमों, प्रतिरक्षा 2–2 चम्मच शहद के साथ प्रातः और सांय सेवन करें। 5ग्राम हल्दी और 50 मी.ली. गौमूत्र का एक उबाला लेकर छानकर पिना हैं। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातःकाल 5:00 बजे और दोपहर 2:00 बजे सेवन करना हैं।

लंग (फेफड़ो) कैंसर

लंग कैंसर क्या होता है ?

फेफड़े स्वांस क्रिया के अंग हैं और इनके द्वारा हम श्वांस ले पाते हैं। दाएं फेफड़े के तीन हिस्से होते हैं और बाएं के दो पश्चिमी देशों में, फेफड़े का कैंसर सबसे अधिक मात्रा में होता हैं। फेफड़े के कैंसर का धूम्रपान के साथ घनिष्ठ संबंध है। अधिकतर मरीजों में इस कैंसर के होने का कारण पता होता है और कई मरीजों में इससे बचाव भी संभव हैं। करीबन 90 प्रतिशत पुरूष एवं 80 प्रतिशत महिलाएं जो इस बिमारी के शिकार होते हैं, धूम्रपान करते हैं। यह जानने के बाद भी कि फेफड़े के कैंसर एवं धूम्रपान मे संबंध है, दूनिया भर में धूम्रपान करने वालों की संख्या में कोई कमी नहीं आई है और यह दुर्भाग्य की बात है। यह भी जाना गया है कि न केवल धूम्रपान करने वालों, परंतु आसपास रहने वाले व्यक्ति भी, जो धूम्रपान से निकले हुए धुएं को स्वांस द्वारा अपने अंदर लेते हैं (पैसिव स्मोकर), को भी फेफड़े का कैंसर होने का खतरा होता हैं।

लंग कैंसर (फेफड़ों का कैंसर) के कारण –

90 प्रतिशत फेफड़े के कैंसर के मामले धूम्रपान का परिणाम होते हैं। कुछ अन्य हानिकारक पदार्थ भी लंग कैंसर का कारण बन

सकते हैं जैसे एस्बेस्टोस, आर्सेनिक आदि। कभी–कभी लंग कैंसर होने का कोई स्पष्ट कारण नहीं पता चलता हैं।

धूम्रपान

सिगरेट, बीड़ी के पहले कश से वह आपके फेफड़ों के ऊतकों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देती है। फेफड़े इस नुकसान की मरम्मत कर सकते हैं, लेकिन लगातार धुएं के संपर्क में बने रहने पर फेफड़ों के लिए अपनी मरम्मत करना मुशिल या असंभव हो जाता हैं।

एक बार जब कोशिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं, तो वे असामान्य रूप से व्यवहार करना शुरू कर देते हैं, जिससे लंग कैंसर होने की संभावना बढ़ जाती हैं। स्माल सेल लंग कैंसर का कारण लगभग हमेशा भारी धूम्रपान होता हैं।

अन्य पदार्थ जो फेफड़ों के कैंसर का कारण बन सकते हैं :–
आर्सेनिक, कैडमिया, क्रोमियम, निकल, कुछ पेट्रोलियम उत्पाद, यूरेनियम।

फेफड़ो के कैंसर के संकेत

आमतौर पर लंग कैंसर के शुरूआती चरणों में कोई विशिष्ट संकेत और लक्षण नहीं होते हैं। फेफड़े के कैंसर के लक्षण आमतौर पर तब होते हैं जब रोग बढ़ जाता है :– खांसी, जो ठीक न हो रही हो, खांसी में खून आना, चाहे थोड़ा सा ही, सांस फूलना, छाती में दर्द, गला बैठना, अकारण वजन कम होना, हड्डियों में दर्द, सिरदर्द।

फेफड़े के कैंसर की जटिलतायें

फेफड़े के कैंसर से कई समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे –

(1) सांस फूलना – यदि कैंसर मुख्य वायुमार्ग को अवरूद्ध कर देता है तो फेफड़ों कैंसर से ग्रसित लोग श्वांस की तकलीफ का अनुभव कर सकते हैं। लंग कैंसर से फेफड़ों के आसपास तरल पदार्थ जमा हो सकता है, जिससे कारण सांस लेते समय फेफड़ों को पूरी तरह से फैलने में कठिनाई होती हैं।

(2) खांसी में खून आना – फेफड़ो के कैंसर से वायुमार्ग में रक्तस्त्राव हो सकता है, जो आपकी खाँसी में आने वाले रक्त (हिमाप्टिसिस) का कारण बन सकता हैं। कभी –कभी रक्तस्त्राव गंभीर हो सकता हैं। रक्तस्त्राव को नियंत्रित करने के लिए उपचार उपलब्ध हैं।

(3) दर्द – उच्च चरण में यह कैंसर जो फेफड़ों के अंदरूनी भागों या शरीर के किसी अन्य जैसे कि हड्डी में फैलकर दर्द का कारण बन सकता है। अगर आपको दर्द होता है, तो अपने चिकित्सक को बताएं। प्रारंभ में दर्द हल्का और आंतरायिका हो सकता है, लेकिन धीरे–धीरे स्थिर हो सकता है। दवाएं, विकिरण चिकित्सा और अन्य उपचार आपके लिए लाभदायक हो सकते हैं।

(4) सीने में तरल पदार्थ का जमा होना – लंग कैंसर के कारण छाती की गुहा में प्रभवित फेफड़ों के आसपास मौजूद स्थान में तरल पदार्थ जमा हो जाता है। छाती में एकत्र होने वाले इस द्रव के कारण रोगी को सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। इसके लिए उपचार उपलब्ध हैं।

लंग कैंसर (फेफड़ों का कैंसर) के प्रकार –

लंग कैंसर के कितने प्रकार होते हैं ?

फेफड़ों के कैंसर के दो प्रकार हैं। माइक्रोस्कोप से देखे जाने पर लंग कैंसर की कोशिकाएं बड़ी या छोटी दिखाई देती हैं। इसके आधार पर ही लंग कैंसर के प्रक्कर का नाम रखा गया है –

- **स्माल सेल लंग कैंसर (एनएससीएलसी) –** स्माल सेल लंग कैंसर लगभग हमेशा ज्यादा धूम्रपान करने वालों में होता है।
- **नॉन–स्माल सेल लंग कैंसर (एनएससीएलसी) –** गैर–छोटे सेल फेफड़ों के कैंसर कई प्रकार के फेफड़ों के कैंसर के लिए एक छाता शब्द है। गैर–छोटे सेल फेफड़ों के कैंसर में स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा, एडेनोकार्सिनोमा और बड़े सेल कार्सिनोमा शामिल हैं।

एनएससीएलसी फेफड़ों के कैंसर का अधिक सामान्य रूप है – 80–85 प्रतिशत लंग कैंसर के मामलों एनएससीएलसी के होते हैं।

स्मॉल सेल लंग कैंसर के चरण

समॉल सेल लंग कैंसर के दो चरण होते हैं – सीमित और व्यापक।

(1) **सीमित स्तर** में ट्यूमर एक फेफड़े में और उसके आसपास उपस्थित लिम्फ नोड्स में मौजूद होता हैं।

(2) **व्यापक स्तर** पर ट्यूमर दूसरे फेफड़े के साथ शरीर के अन्य अंगों को भी सवंमित कर देता हैं।

नॉन–स्माल सेल लंग कैंसर के चरण

नॉन–स्माल सेल लंग कैंसर के लिए टीएनएम विवरण चरणों के सरल वर्गीकरण में मदद करते हैं। इन चरणों को 1 से 4 तक लेबल किया जाता है। छोटी संख्याएं शुरूआती चरण की और संकेत करती है, जहां कैंसर कम फैला होता हैं।

(1) **स्टेज 1** तब होता है, जब ट्यूमर केवल एक फेफड़े में पाया जाता है और लिम्फ नोड्स में नहीं।

(2) **स्टेज 2** तब होता है, जब कैंसर सवंमित फेफड़ों के आसपास मौजूद लिम्फ नोड्स में फैलता है।

(3) **स्टेज 3** को दो भागों में विभाजित किया जाता है –

- **1.स्टेज 3ए** तब होता है, जब समन्वित फेफड़े की तरफ स्थित श्वांस नली, सीने की दीवार और डायाफ्राम के आसपास लिम्फ नोड्स में कैंसर फैल जाता हैं।
- 2.**स्टेज 3बी** तब होता है, जब कैंसर दूसरे फेफड़े या गर्दन में मौजूद लिम्फ नोड्स में फैल जाता हैं।

(4) **स्टेज 4** तब होता है, जब कैंसर पूरे शरीर और फेफडों के अन्य भागों में फैल जाता हैं।

फेफड़ो के कैंसर के लिए CT स्कैन

टगर कोई हेवी स्मोकर है यानी 15–20 साल से स्मोक कर रहा है और खांसी भी है तो उसे फेफड़ों का सीटी स्कैन करा लेना

चाहिए। ऐसे लोगों के लिए जो ड़ोज चेस्ट सीटी स्कैन भी किया जाता है, जिसकी कीमत कम (करीब 3000 रूपये) होती है और रेडिएशन भी कम होता है। अगर रिस्क नहीं है तो भी 40 साल की उम्र में एक बार फेफड़ों का सीटी स्कैन करा लेना चाहिए।

लंग कैंसर होने से कैसे रोकें ?

धूम्रपान करना शु्रू न करें – यदि आपने कभी धूम्रपान नहीं किया है, तो शुरू न करें। अपने बच्चों से धूम्रपान कभी न शुरू करने के बारे में बात करें ताकि वे समझ सकें कि फेफड़ों के कैंसर के इस प्रमुख कारण से कैसे बचा जाए।

पैसिव स्मोक से बचें – यदि आप धूम्रपान करने वाले के साथ रहते हैं या काम करते हैं, तो उसे छोड़ने के लिए आग्रह करें और जब वह सिगरेट पि रहा हों , उनसे दूर रहें।

काम पर कार्सिनोजेनिक पदार्थो से बचें – काम पर खुद को जहरीले रसायनों के संपर्क से बचाने के लिए सावधानी बरतें।

फल और सब्जियों से भरे आहार का सेवन करें – विभिन्न प्रकार के फलों और सब्जियों से भरपूर स्वस्थ आहार चुनें। विटामिन और पोषक तत्वों के खाद्य स्त्रोत चुनें। सप्लीमेंट के रूप में विटामिन की बड़ी खुराक लेने से बचें, क्योंकि वे हानिकारक हो सकते हैं।

फिट रहें – यदि आप नियमित व्यायाम नहीं करते हैं, धीरे–धीरे शुरूआत करें। लेकिन कोशिश करें कि आप नियमित रूप से एक्सरसाइज करें और फिट रहें।

फेफड़ो के कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

फेफड़ो के कैंसर रोगी को ठंडी पेय एवं भोजन सामग्री के सेवन से बचना चाहिए। अधिक धूल एवं धुऐं से रोगी को दुर रहना चाहिऐ। रोगी को गहरी श्वांसे और श्वांस संबंधी प्राणायाम करने की में सलाह देता हूं, प्रातःकाल भ्रमण फेफड़े के रोगी को अच्छा लाभ देता हैं।

श्री नवग्रह आश्रम की निम्न औषधियों का सेवन पूर्ण परहेज और पूर्ण विश्वास से सेवन करें। रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, कफ़–खाँसी 4 चम्मच काढ़ा बनाकर एवं

आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच शहद के साथ सेवन करें। 5 ग्राम हल्दी, 50 मी.ली. गौमूत्र में उबाला लेकर छानकर एवं हरे पत्तो का ज्यूस सेवन करें इतनी ही मात्रा में उपरोक्त औषधियां का सेवन सांयकाल भी उपयोग करें। फेफड़ो का कैंसर का रोगी अच्छी मात्रा में देशी गाय के घी, पनीर व दूध का सेवन खुब अच्छी मात्रा में करें, इसका अच्छा परिणाम प्राप्त होता हैं।

स्तन कैंसर

महिलाओं में होने वाला सबसे कॉमन कैंसर है ब्रेस्ट कैंसर।. इसका इलाज सही समय पर ना कराया जाए तो मौत भी हो सकती है। स्तन कैंसर एक या दोनों ब्रेस्ट में मैलिग्रेंट कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि है, यह बेहद घातक होता है। ब्रेस्ट कैंसर होता है, अधिकांश स्तन कैंसर डक्टस की लाइनिंग सेल्स या फिर ब्रेस्ट के ग्लैडुलर टिशू के लॉब्यूल में विकसित होता हैं।ब्रेस्ट कैंसर के चार स्टेज होते हैं. पहले स्टेज में यदि इसके लक्षणों को पकड़ लिया जाए तो पूरी तरह से ठीक होने की संभावना काफी अधिक बढ़ जाती है। स्टेज 3 और 4 काफी रिस्की और घातक साबित होता हैं।

महिलाओं में स्तन कैंसर के पहचाने जाने के कई जोखिम कारक हैं। –

परिवारिक इतिहास, BRCA1, BRCA2 और P53 जैसे जीनों में म्यूटेशन, लंबे समय तक अंतर्जात एस्ट्रोजेन के संपर्क में रहना, समय से पहले पहला मासिक धर्म, देर से रजोनिवृत्ति, गर्भनिरोधक गोली, हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी, उम्र बढ़ने के साथ ब्रेस्ट कैंसर होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है, ब्रेस्ट कैंसर होने के मामले सबसे अधिक 50 या इससे ऊपर की उम्र वाली महिलाओं में देखा जाता है, आपके बीआरसीए1 या बीआरसीए2 जींस में बदलाव होने के कारण भी ब्रेस्ट कैंसर का रिस्क बढ़ जाता है, फैमिली हिस्ट्री और पीरियड्स जल्दी शुरू होने से भी इसके होने का जोखिम रहता है, मेनोपॉज देर से होने के कारण भी ब्रेस्ट कैंसर के होने

का रिस्क बढ़ जाता है, खराब लाईफस्टाइल, अनहेल्दी डाइट, एक्सरसाइज ना करना, शारीरिक रूप से एक्टिव ना रहना आदि फैक्टर्स भी होते हैं।

स्तन (ब्रेस्ट) कैंसर के लक्षण –

स्तन के आकार में किसी भी तरह का कोई परिवर्तन होना, स्तन के किसी भी भाग में दर्द होना, निप्पल से दूध के अलावा लिक्विड डिस्चार्ज होना, स्तन या अंडरआर्म में एक नई गांठ, लम्प बनना, निप्पल के आकार में बदलाव, दर्द होना या लाल होना, स्तनो में दर्द, सूजन, टाइटनेस महसूस होना, सख्त महसूस होने वाले ब्रेस्ट में गांठ, ब्रेस्ट की बनावट में बदलाव, ब्रेस्ट के ऊपर डिंपल बनना या पक जाना, निप्पल में सूजन या रक्त जैसा डिस्चार्ज आना, निप्पल का अंदर की और धंस जाना, जब कुछ गलत लगे तो महिलाओं को समय पर जांच और चिकित्सक के पास जाना चाहिए।

स्तन कैंसर की पहचान के उपाय –

लगभग 90 प्रतिशत ब्रेस्ट कैंसर की पहचान महिलाएं खुद करती हैं। समय पर इसका पता चलने से न केवल ब्रेस्ट बच जाता है, बल्कि जिंदगी भी बच जाती है। इसलिए, ब्रेस्ट की स्वयं से जांच करने के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता।

मासिक स्तन स्व–परीक्षा करने का सबसे अच्छा समय आपकी अवधि शुरू होने के लगभग 3 से 5 दिनों के बाद होता है। इसे हर महीने एक ही समय पर करें। आपके मासिक चक्र के समय आपके स्तन उतने कोमल या गांठदार नहीं हैं। यदि आप मेनोपॉज से गुजर चुकी हैं, तो हर महीने उसी दिन अपनी जांच कराएं।

महिला को आईने के सामने खड़े होकर अपने ब्रेस्ट को देखना चाहिए। क्या ब्रेस्ट का आकार और बनावट एक जैसी है या कोई बदलाव नहीं हुआ है। एक ब्रेस्ट से दूसरे ब्रेस्ट का आकार में बड़ा होना सामान्य बात है। मासिक जांच से एक महिला को यह जानने में मदद मिलती है कि उसके लिये सामान्य क्या है। उसे अपनी त्वचा का रंग और टेक्सचर भी नोट करना चाहिए।

1.**स्तन में गांठ या मस्से :–** स्तन कैंसर के मामलों में दिखाई देने वाला यह सबसे आम लक्षणों में से एक हैं। स्तन में गांठों की जांच की जानी चाहिए, चाहे गांठें कोमल ही क्यों न हों।

2.**पूरे स्तन या किसी हिस्से में सूजनः–** स्तन के एक हिस्से या पूरे स्तन में किसी भी तरह की सूजन एक समस्या का कारण है। हालांकि यह संक्रमण या गर्भावस्था जैसी स्थिति में भी हो सकता है, लेकिन स्तन की त्वचा में जलन या डिंपलिंग जैसे अन्य लक्षण हैं या नहीं। यह खोज करना महत्वपूर्ण है। खुद से की गई स्तन परीक्षण किसी भी असामान्य परिवर्तन की जांच करने में मदद करेगी। ऐसा होने पर महिलाओं को तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

3.स्तन की त्वचा में परिवर्तनः– स्तन कैंसर का एक संकेत हो सकता है। इसमें शामिल हैः– जलन या त्वचा का लाल होना, त्वचा का मोटा होना, स्तन ऊतक के डिंपलिंग, त्वचा की बनावट में बदलाव।

4. निप्पल में बदलावः– निप्पल से किसी भी तरह के असामान्य तरल निकालने को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। साथ ही, निप्पल का अंदर की ओर को दबना भी स्तन कैंसर का लक्षण हो सकता है।अगर निप्पल में दर्द हो तो उसकी भी चिकित्सा करानी चाहिए।

5. अंडर आर्म में गांठ :– अगर अंडर आर्म में गांठ होती है, तो इसकी स्तनों से संबंधित होने की संभावना बहुत ज्यादा होती है। स्तन का ऊतक अंडर आर्म्स तक होता है। साथ ही, स्तन के कैंसर हाथों के नीचे मौजूद लिम्फ नोड्स से भी फैल सकते हैं।

अधिकतर महिलाओं में होने वाला स्तन कैंसर आनुवांशिक कारणों से होता है। अतः अमेरिका के नेशनल कैंसर इन्स्टीट्यूट ने लम्बे शोध के बाद यह नतीजा निकाला है कि जिन महिलाओं के परिवार में किसी को स्तन कैंसर रहा हो, उन्हें इस बीमारी के होने का खतरा सबसे अधिक होता है।

ब्रेस्ट कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

ब्रेस्ट यानी स्तन कैंसर महिलाओं में हार्मोन्स के कम या अधिक होने से भी होता है। इसके साथ–साथ वात की अधिकता भी इस रोग को बढ़ावा देती है। इस कैंसर को जल्दी ठीक करने के लिए रोगी को आलू, अचार और अधिक कार्बोहाइड्रेट युक्त भोजन नहीं करना चाहिये। अधिकांश रोगियों में यह कैंसर लंग के साथ–साथ एग्जलरी (कांखो) भूजाओं में भी पाया जाता हैं। अतः रोगी आश्रम की इन 6 औषधियों का सेवन करें :–1. रक्त शोधन, 2. कैंसर किट, 3. सोजिस, 4. आयुर्वेदिक कीमों, 5. कफ–खाँसी अगर रोगी को घाव बन चुका हैं, तो गांठ घाव मल्हम बना का घाव पर लगावें व सफाई का पुरा ध्यान रखें।

महिलाऐं क्योंकि अंग वस्त्र पहनती हैं जो की काफी टाईट होने के साथ बार–बार घाव पर चिपकते हैं। अतः स्तन के आकार से 25% बड़े किसी स्टील के कटोरे में छोटे–छोटे कई छेद करके स्तन के उपर हेलमेट कि तरह ढांक दे यानी कवर करदे, इससे यह लाभ होगा दवाई लम्बे समय तक त्वचा पर लगी रहेगी और कपड़े के स्पर्श से दर्द भी नहीं होगा और बार–बार नई कोशिकाऐं प्रभावित भी नहीं होगी। रोगी हरे पत्तों का ज्यूस व गौमूत्र स हल्दी का सेवन करता रहें।

पेनक्रियाटीक कैंसर

पेट के निचले और पिछले हिस्से में होने वाले कैंसर को अग्नाशय कैंसर, पेनक्रियाज कैंसर भी कहा जाता है, इस कैंसर का पता बहुत देरी से चलता हैं और रोगी बहुत कमजोर हालत में पहुंच जाता हैं। यह कैंसर औरतो की तुलना में मर्दो में अधिक होता हैं।

प्रारम्भिक लक्षण :– 1. पेट में बांई और लगातार दर्द का बने रहना। 2. अचानक शुगर लेवल के बढ़ जाने या घट जाने के साथ–साथ पाचन क्रिया का बहुत कमजोर हो जाना। 3. वजन में बहुत तेजी से लगातार गिरावट आने लगना। 4. बिना कारण के अत्यधिक थकान का आना। 5. पीले और मटमेले भुरे रंग का मूत्र आने लगना जो की पित्त की वजह से होता हैं। 6. पेट में

लगातार फुलाव होते रहना और कभी–कभी पानी बनने लगना यानी पेट बड़ा होने लगता हैं। 7. कभी–कभी बेहोश हो जाना और दिल की धड़कन का तेज चलने लगना। 8. पेरो और तलवों में सुजन आने लगना। 9. प्यास और भूख अधिक लगना पर पाचन ठीक नहीं होना। 10. मल में चिकनापन बना रहना।

पेनक्रियाटीक कैंसर होने के कारण

अग्नाशय कैंसर निम्न कारणों से अधिक होता है : – 1. जेनेटिक कारण से। 2. धूम्रपान से। 3. तम्बाकू सेवन से। 4. मोटापे से। 5. किटनाशकों के अधिक प्रयोग से। 6. अत्यधिक चटपटी कसेली और रिफाईन्ड तेल व समुन्द्री नमक से बनी भोजन सामग्री के सेवन से।

पहचान (जाँचे) कैसे करें:– इस कैंसर का सही पता लगाने के लिए 1. सीटी स्केन, 2. एम आर आई, 3. एन्डोस्कॉपी, 4 अल्ट्रासाउन्ड से पता चल जाता हैं में व्यक्तिगत रूप से इस कैंसर में बायोप्सी से बचने के सलाह देता हूं, 5. अग्नाश्य शोथ की हालत में लापरवाही नही करें वर्ना यह कैंसर में बदल जाता हैं।

पेनक्रियाटीक कैंसर का आयुर्वेर्दिक उपचार

पेनक्रियाज ग्लैंड यानी आपके भोजन को पचाने के लिए आवश्यक प्रदार्थ के निर्माण के साथ–साथ आपके शुगर लेवल को सही बनाये रखने के लिए भी इसका बहुत बड़ा योगदान रहता है। पेन्क्रियाज ग्लैंड में कैंसर होने की हालत में आश्रम द्वारा निम्न औषधियां लेने की सलाह दि जाती हैं। रक्तशोधन 6 चम्मच, सोजिस 3 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, लिवर 3 चम्मच, औषधियों का एक साथ काढ़ा बनाकर प्रातःकाल सेवन करें, और इन सभी औषधियों का इतनी ही मात्रा में और काढ़ा बनाकर सांयकाल 5:00 बजे पूर्व सेवन करें। 5ग्राम हल्दी और 50 मी.ली. गौमूत्र का एक उबाला लेकर छानकर पिना हैं। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातःकाल 5:00 बजे और दोपहर 2:00 बजे सेवन करना हैं।

विषेश – इस कैंसर के रोगी को हरी सब्जियों के सूप और फलों के ज्यूस के साथ आश्रम द्वारा सुझाए गये, हरे पत्तो के ज्यूस को प्रातः 5:00 बजे के आसपास एवं दोपहर 1:00 बजे के आसपास दिन में दो बार सेवन करें।

लीवर कैंसर

लीवर शरीर का सबसे बड़ा अंग होता है, यह तो आप जानते ही होंगे। यह पेट के दाहिने तरफ के रिब्स के पीछे होता है। लीवर के दो भाग होते हैं। लीवर कई ऐसे कार्य करता है, जिससे आप हेल्दी रहते हैं। खून में से हानिकारक तत्वों को बाहर निकालने का काम करता है। यह एंजाइम और पित का निर्माण भी करता है जो भोजन को पचाने में मदद करता है। लीवर के खराब होने के कई कारण होते है, जिसमें धूम्रपान, शराब की लत, मोटापा, खराब जीवनशैली, खानपान में गड़बड़ी आदि जिम्मेदार होते हैं। कई रोगों से आपका लीवर ग्रस्त हो जाता है, जिसमें से सबसे गंभीर लीवर कैंसर हैं।

आमतौर पर 40 साल की उम्र के लोगों में लीवर कैंसर होने की संभावना युवाओं की तुलना में अधिक रहती हैं। लीवर कैंसर को कई बार हेपेटिक कैंसर के नाम से भी जाना जाता हैं। लीवर कैंसर हमारे लीवर की संरचना में शुरू होता है और धीरे–धीरे दिखता है। जब कैंसर लीवर से उसके आसपास के अन्य अंगों में दिखता है जहां लीवर की अन्य गतिविधियों में भी हस्तक्षेप करने लगती हैं तब लीवर कैंसर घातक हो सकता है और इस चरण को मेटास्टेसाइज कहते हैं। शुरूआत में लीवर कैंसर के कोई खास लक्षण नहीं दिखते हैं, लेकिन जैसे–जैसे लीवर बढ़ता है, वैसे–वैसे इसके लक्षण महसूस होना शुरू हो जाते हैं। लीवर कैंसर के ज्यादातर मामलों में मूल कारण का पता नहीं चलता है कुछ मामलों में हेपेटाइटिस का संक्रमण प्रमुख हो सकता हैं।

लीवर कैंसर का कारण क्या हैं ?

जेनेटिक्स – यदि आपके परिवार में लीवर की बीमारी का इतिहास है, तो लीवर कैंसर के विकास की संभावना अधिक होती हैं।

सिरोसिस, डायबिटीज, फैटी लीवर, अधिक मोटा होना, वजन का बहुत अधिक बढ़ना भी इस बीमारी का कारण बन जाता हैं, पुराना संक्रमण – हेपेटाइटिस बी या हेपेटाइटिस सी वायरस से जुड़े किसी भी पुराने संक्रमण से जुड़े लीवर कैंसर हो सकता हैं, रासायनिक पदार्थ – विनाइल और आर्सेनिक जैसे रासायनिक पदार्थों का सेवन, दुलर्भ बीमारियां – लीवर कैंसर के विकास को विल्सन की बीमारी और टायरोसिनेम जैसी दुर्लभ बीमारियों सें जोड़ा गया हैं, धुम्रपान और शराब के दुरूपयोग से रोगियों में लीवर कैंसर का विकास हो सकता हैं, जन्म से ही – जन्म से ही किसी दोष या स्वास्थ्य समस्या के दोष के कारण भी यह परेशानी हो सकती हैं।

लीवर कैंसर के लक्षण क्या हैं ?

लीवर कैंसर की शुरूआत में कोई विशेष लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। लेकिन जैसे–जैसे लीवर कैंसर की स्थिति समय के साथ बिगड़ने लगती है वैसे–वैसे इसके लक्षण महसूस होने लगते हैं। लीवर कैंसर के प्रमुख लक्षण लिखे गए हैं :–

1. वजन कम होना, 2. भूख कम लगना, 3. पेट के ऊपरी हिस्से में दर्द होना, 4. कमजोरी और थकान होना, 5. पीलिया होना (आंखों और त्वचा के साथ हिस्से का पीलापन, 6. मल सफेद होना, 7. वजन कम होना, 8. उल्टी होना, 9. जी मिचलना, 10. बुखार आना, 11. खुजली होना, 12. हेपटेमेगाली, 13. पेट में सूजन, 14. पैरों में सूजन होना, 15. दाहिने कंधे की ब्लेड में या ब्लेड के आस–पास दर्द होना, 16. नार्मल खुजली, 17. बढ़े हुए स्पलिन, 18. त्वचा पर खुजली होना।

लीवर कैंसर के प्रकार :–

लीवर कैंसर दो प्रकार के होते हैं :– लीवर कैंसर की आशंका प्राथमिक और द्वितीय लीवर कैंसर से जुड़ी है। प्राथमिक लीवर

कैंसर लीवर में होता है, जहां असामान्य रूप से कोशिकाएं विभाजित होने की आशंकाए होती है और तेजी से बढ़ने लगती हैं। जबकि दूसरा लीवर कैंसर पास के या अन्य बाहरी अंगों के कैंसर का परिणाम होता हैं।

हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा (एचसीसी) – 75 प्रतिशत लीवर कैंसर हेपेटोसेलुलर कार्सिनोमा पर आधारित होते हैं। यह हिपेटाइटिस बी या सी से संबंधित संक्रमण के माध्यम से उत्पन्न होता हैं।

फाइब्रोलैमेलर हेपैटोसेलुलर कार्सिनोमा (एफएलसी) – एक दुर्लभ प्रकार का लीवर कैंसर है जो आमतौर पर 40 वर्ष से कम उम्र के किशोरों और वयस्को में बढ़ता हैं, यह कैंसर अन्य प्रकार के कैंसर से अलग हैं, क्योंकि यह उन लोगों में होता हैं, जिनका लिवर स्वस्थ होता हैं।

कोलंजियोकार्सिनोमा – यह लीवर के पित–नलिका में होता है और दोनों में लीवर कैंसर के 10–20 प्रतिशत तमामले होते हैं।

एंजियोसारकोमा – यह लीवर में रक्त वाहिकाओं से शुरू होता है और वहां से तेजी से बढ़ रहा है। 1 प्रतिशत लीवर कैंसर के मामले इस प्रकार के होते हैं।

एंटीबॉडी लीवर कैंसर – जब शरीर के किसी अन्य स्थान से प्राथमिक कैंसर आंतरिक रूप से लिवर में पहुंचकर उसको प्रभावित करता है, तो यह दूसरा लीवर कैंसर में बदल जाता है। अधिकांश लीवर कैंसर के मामलों को इस प्रकार के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता हैं।

लीवर कैंसर से बचाव के उपाय :–

विशेषज्ञों के अनुसार, किसी भी अन्य तरह के कैंसर से होने वाली मौतों में लीवर कैंसर तीसरा सबसे बड़ा कारण है। यदि आप लीवर कैंसर से बचना चाहते हैं, तो अपने आहार विटामिन ई की मात्रा अधिक रूप से शामिल करें। विटामिन ई, के अधिक सेवन से काफी हद तक लीवर कैंसर से बचा जा सकता है। इसके लिए विटामिन ई सप्लीमेंट के साथ–साथ आप विटामिन ई युक्त आहार का सेवन करें।

शराब और धुम्रपान से दुरी

शराब और धुम्रपान का सेवन कम करने से भी आप काफी हद तक लीवर कैंसर से बचे रह सकते हैं। इसके अलावा अल्कोहल के सेवन से लीवर में सिरोसिस की समस्या हो जाती है, जो बाद में कैंसर का कारण बनती हैं।

खानपान पर ध्यान दें –

लीवर तक फैलने वाले कुछ प्रकार के कैंसर जैसे– कोलोन, ब्रेस्ट और लंग कैंसर का संबंध आपके खान–पान से भी हो सकता हैं। आपके लिए बेहतर होगा कि आप वजन न बढ़ने दें। अपने शरीर का वजन संतुलित रखें। फाइबर से भरपूर तथा सैचुरेटेड फैट की कम मात्रा वाला आहार लें। साबुत अनाज, सब्जियां और फल का सेवन करें।

पालक खाएं खूब –

पालक सेहत के लिए बहुत हेल्दी होता है। आप इसे सलाद, सब्जी, सूप किसी भी रूप में खा सकते हैं। पालक में घुलनशील एवं अघुलनशील दोनो प्रकार के फाइबर होते हैं, जो पाचनतंत्र के लिए उपयोगी हैं। इसमें विटामिन ई पर्याप्त मात्रा में होता है, जो पाचनतंत्र के लिए उपयोगी हैं। इसमें विटामिन ई पर्याप्त मात्रा में होता है, जो लीवर कैंसर से बचाने में मदद करता हैं।

लीवर कैंसर के आयुर्वेदिक उपचार :–

लिवर कैंसर का इलाज आयुर्वेद से और विशेष तौर से श्रीनवग्रह आश्रम से करने पर अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं इसके लिए रोगी को विशेषतोर से देशी गाय के घी का सेवन 25 ग्राम/दिन से अधिक नहीं करने की सलाह दी जाती हैं। रोगी हरे पत्तों का ज्यूस प्रातः एवं दोपहर दिन में दो बार सेवन करें, अधिक मात्रा में फाइबर का सेवन करने हेतु सब्जियों के सूप का सेवन 3–4 दिन बार करें। तली हुई भोजन सामग्री को बिल्कूल इस्तेमाल नहीं करें।

आश्रम कि औषधियों रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, लिवर–पिलिया 4 चम्मच, साजिस 3 चम्मच औषधियों का

काढ़ा प्रातः और सांय सेवन करें। इसके अलावा आयुर्वेद कीमों 2–2 चम्मच प्रातः और सांय सेवन करें। इसके अलावा आयुर्वेद कीमों 2–2 चम्मच प्रातः व सांय दोनो वक्त सेवन करें। हल्दी एवं गौमूत्र का सेवन दोनों गर्म किए गौमूत्र में छान लेने के बाद करीब 100 मी.ली. पानी मिलाकर सेवन करें।

विरेचन कर्म :– इस उपचार में रोगी के शरीर की क्षमता अनुसार हर प्रकार से शरीर के जहरीले पदार्थों को बाहर निकाला जाता हैं जिससे मरीज को दस्त होते हैं। इस प्रक्रिया में छोटी आंत को भी साफ किया गया हैं।

इसके अलावा कुछ आहार के जरिए भी आयुर्वेद में कैंसर का ईलाज किया जाता है। जैसे हल्दी दुग्ध – हल्दी में कैंसर रोधी गुण मिल जाते हैं उसके अलावा शरीर में कई तरह की तत्वों की पूर्ती हल्दी करती है जो कैंसर को बढ़ने से रोकने में वह उपलब्ध होती हैं। इन सभी के अलावा आहार में आंवला, पपीता, सेब का सिरका, मुलेठी, मकोय, टमाटर और ग्रीन टी को शामिल किया जाता है। इन सभी में कैंसर रोधी गुण पाए जाते हैं साथ ही यह एंटीऑक्सीडेंट से भरपुर होते हैं जो हमारे शरीर को डिटॉक्स करने का काम भी करते हैं। इसलिए आयुर्वेद लीवर कैंसर का ईलाज करने के लिए इन आहारों को शामिल करता है। इसके साथ ही योगासन और हर प्रकार के उपयोग पर भी विशेषज्ञों की सलाह दी जाती है कि उनकी निगरानी में इसका उपचार किया जाता है जो की रासायनिक प्रक्रिया से मुक्त होता हैं।

पेरिटोनियल (पेट की थेली) कैंसर

जैसा की आप उपर पढ़ चुके हैं, की रोगी के पेट में जो पेरेटीनियल थेली होती हैं, वह बड़ी आंत, छोटी आंत, बाउल एरिया, लिवर आदि पेट के अंगो को संरक्षण और स्थान प्रदान करता हैं। इसमें कैंसर होने पर रोगी को सांस लेने में परेशानी, पेट में पानी भरने और पेट फुलने और पेट दर्द की शिकायत लगातार होने लगती हैं।

पहचानना है मुश्किल

पेरिटोनियल कैंसर के लक्षणों को शुरूआती अवस्था में पहचान पाना संभव नहीं है। जैसे–जैसे ये लक्षण बढ़ते जाते हैं, वैसे में समस्याएं बढ़ने लगती हैं।

पेरिटोनियल कैंसर के लक्षण

पेट में दर्द, गैस, सूजन व ऐंठन, हल्का भोजन लेने के बाद भी पेट में भारीपन महसूस होना, चक्कर आना, डायरिया, कब्ज, बार–बार यूरिन की समस्या, भूख कम लगना, अचानक से वजन बढ़ना व कम होना, असमान रूप से योनि से रक्तस्त्राव होना, सांस में कमी आदि लक्षण नजर आएं तो तुंरत डॉ. से संपर्क करें।

पेरिटोनियल कैंसर के निदान

पेरिटोनियल कैंसर के निदान के लिए डॉ. पहले आपके चिकित्सी इतिहास की जांच करेगा। फिर वह आपकी शारीरिक जांच के जरिए आपको होने वाली समस्याओं के बारे में पता लगाने की कोशिश करेगा। जरूरत पड़ने पर वह कुछ जांच भी करा सकते हैं।

पुरूषों से ज्यादा महिलाओं में खतरा

पेरिटोनियल कैंसर पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में ज्यादा देखा जाता है। जिन महिलाओं को ओवरियन कैंसर होता है। उनमें अपने आप पेरिटोनियल कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा बढ़ती उम्र में भी इसके होने की संभावना ज्यादा होती हैं। इस कैंसर का असर यूटरस, ब्लैडर और रेक्टम पर भी पड़ता है इसलिए कई बार महिलाएं इसे ओवरियन कैंसर भी समझ लेती हैं।

पेरिटोनियल कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

ऐसी हालत में रोगी को खाना थोड़ी–थोड़ी मात्रा में खाना चाहिऐ, और बार–बार खाना चाहिए, फलों का ज्यूस और हरी सब्जियों का सूप ही अधिक सेवन करना चाहिऐ। रोगी को श्री नवग्रह आश्रम की निम्न औषधियों का सेवन करना हैं। रक्तशोधन 6

चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, सोजिस 3 चम्मच, प्रतिरक्षा 3 चम्मच का एक साथ काढ़ा बनाकर सिप–सिप करके प्रातःकाल पिना हैं। 2 चम्मच आयुर्वेदिक कीमों को शहद के साथ सेवन करना हैं। 5ग्राम हल्दी और 50 मी.ली. गौमूत्र का एक उबाला लेकर छानकर पिना हैं। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातःकाल 5:00 बजे और दोपहर 2:00 बजे सेवन करना हैं। बाकि सभी औषधियां उपर लिखी मात्रा एवं विधी अनुसार दोपहर 2:00 बजे बाद सेवन करनी हैं।

आमाशय का कैंसर

पेट का कैंसर यानी पाचन संस्थान का कैंसर और खासतोर से आमाशय आदि अंगो में होने वाला कैंसर दर्द देने वाला तो होता ही हैं, इसके साथ–साथ पाचन क्रिया कमजोर और बार–बार दस्ते लगने और उल्टीयां होने से रोगी में बहुत अधिक कमजोरी आ जाती है।

वैसे तो अमाशय का कैंसर दुनिया भर में फैला हुआ है, किंतु जापान, कोरिया, चीन, आइसलैंड में बहुत अधिक तादाद में पाया जाता है और शायद इसका कारण है धुएं के साथ सेंकी हुई मछली खाने की आदत, जो शायद कैंसर को उत्पन्न करने में सहायक होती हैं।

लक्षणः– इस रोग से पीड़ित मरीज को एक लंबे समय तक इस बीमारी का पता नहीं लगता है। लेकिन अगर बीमारी आसपास के दूसरे अंगों में फैल जाती है या फिर इसके मेटास्टेसिस दूर के अंगों में फैल जाते हैं तब बीमारी का पता लग जाता हैं। इस बीमारी का ठीक समय से पता नहीं लगने के कारण इसका परिणाम अच्छा नहीं होता हैं।

95 प्रतिशत मरीजों में भूख और शारिरिक वजन का कम होना देखा जाता हैं। उल्टी में खून का होना भी कुछ मरीजों में देखा जाता है। जब ट्यूमर बड़ा हो कर खाने के पदार्थ को अमाशय में से छोटी आंत में जाने के रास्ते में रूकावट डालता है, तब मरीज को उल्टी और मितली की तकलीफ होती हैं। जब यह ट्यूमर बड़ा हो जाता है या मरीज बहुत पतला होता है तब बाहर से

ट्यूमर को टटोला जा सकता है। यह जान लेना चाहिए कि इस बीमारी में दर्द बहुत बाद में होता है जो ट्यूमर की बाद की अवस्था की और इशारा करता हैं।

आमाशय के कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

आश्रम की चिकित्सा पद्धति में स्पष्ट निर्देश हैं कि पेट के कैंसर में अधिक से अधिक फाइबर युक्त सब्जियां और आहार लिया जाना चाहिए, इसके लिए फलों का सेवन और सूप का सेवन करने की सलाह दी जाती हैं। आश्रम की रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, सोजिस 4 चम्मच का काढ़ा एक साथ बनाकर प्रातःकाल सेवन करें, और इसी मात्रा में काढ़ा बनाकर सांय काल पुनः सेवन करें। कब्ज गैस और अपच होने पर आश्रम द्वारा दी जाने वाली औषधी कब्ज या गैस का एक–एक चम्मच सामान्य जल के साथ फाकी के रूप में सेवन करें। गौमूत्र 50 मी.ली., हल्दी 5 ग्राम गांठ हल्दी का एक उबाला लेकर प्रातः और सांय छानकर सेवन करें। हरे पत्तो का ज्यूस प्रातः और दोपहर में 2 बार सेवन करें।

किडनी कैंसर

जिसे रीनल कैंसर कैंसर भी कहा जाता है, एक ऐसी बीमारी है जिसमें किडनी की कोशिकाएं घातक (कैंसरस) हो जाती हैं और ट्यूमर बन जाती हैं। किडनी बीन के आकार के 2 अंग होते हैं। वे शरीर में पीठ के मध्य से निचले हिस्से की और होते हैं। रीढ़ के दोनों तरफ एक–एक किडनी होती है। किडनी खून से गंदगी और अतिरिक्त तरल पदार्थ को फिल्टर करने में मदद करता हैं। तरल और गंदगी को युरिन के रूप में पतली नलियों के माध्यम से मुत्राशय में भेजता है जिन्हें मूत्रवाहिनी कहा जाता हैं। किडनी ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में भी मदद करता हैं। और वह यह तय करता हैं कि शरीर में पर्याप्त लाल रक्त कोशिकाएं हैं।

लगभग सभी किडनी कैंसर पहली बार छोटे टयूब (टयूब्यूल्स) के अस्तर में दिखाई देते हैं। इस तरह के किडनी के कैंसर को रीनल सेल कार्सिनोमा कहां जाता है। किडनी कैंसर एक अकेली

बीमारी नहीं है। बल्कि इसमें कई प्रकार के कैंसर होते हैं जो किडनी में होते हैं। जोखिम कारक वो है जो आपको कैंसर जैसी बीमारी होने की संभावना को बढ़ाता है।
डॉक्टर किडनी कैंसर के कारणों को नहीं जानते हैं। लेकिन कुछ कारक किडनी कैंसर होने के जोखिम को बढाते हुए दिखाई देते हैं।

1. धूम्रपान – धूम्रपान से रीनल सेल कार्सिनोमा (आरसीसी) विकसित होने का खतरा बढ़ जाता है। यदि आप धूम्रपान करना बंद कर देते हैं तो जोखिम कम हो जाता है, लेकिन धूम्रपान न करने वाले व्यक्ति के जोखिम स्तर तक पहुंचने में कई साल लग जाते हैं।

2. मोटापा – बहुत अधिक वनज वाले लोगों में आरसीसी विकसित होने का खतरा अधिक होता है। मोटापा कुछ हार्मोन में बदलाव का कारण बन सकता है जिससे आरसीसी हो सकता हैं।

3. हाई ब्लड प्रेशर – ज्यादा ब्लड प्रेशर वाले लोगों में किडनी कैंसर का खतरा अधिक होता है। ज्यादा ब्लड प्रेशर के ईलाज के लिए कोई दवा लेने पर भी यह जोखिम कम होता नहीं दिख रहा हैं।

4. पारिवारिक इतिहास – रिनल सेल कैंसर के मजबुत पारिवारिक इतिहास वाले लोगों में इस कैंसर के विकसित होने की संभावना ज्यादा होती है। यह जोखिम उन लोगों के लिए सबसे ज्यादा है जिनके भाई या बहन को कैंसर हैं।

5. कार्यस्थल – कई अध्ययनों ने सुझाव दिया है कि ट्राइक्लोरोइथिलीन जैसे कुछ पदार्थों के कार्यस्थल के संपर्क में आने से आरसीसी का खतरा बढ़ जाता है।

किडनी कैंसर के लक्षण

कई मामलों में, लोगों में किडनी के कैंसर के शुरूआती लक्षण नहीं दिखते हैं। जैसे –जैसे ट्यूमर बड़ा होता है, लक्षण दिख सकते हैं। इनमें से एक या अधिक किडनी कैंसर के लक्षण हो सकते हैं–
युरीन में खुन आना, कमर के बाजू या पेट में गांठ हो जाना, भूख न लगना, दर्द जो दूर नहीं होता, वजन कम होना जो बिना किसी

कारण, बुखार जो हफ्तों तक रहती है और सर्दी या अन्य संक्रमण के कारण नहीं होता हैं, अत्यधिक थकान, एनिमिया, एन्क्ल या पैरों में सूजन हो जाना।

किडनी का कैंसर जो आपके शरीर के दूसरे भागों में फैलता है, उसके लक्षण हो सकते है, जैसे :–
सांस लेने में कठिनाई, खूनी खाँसी, हड्डी में दर्द।

किडनी कैंसर के प्रकार

1. रीनल सेल कार्सिनोमा :–

रीनल सेल कार्सिनोमा (आरसीसी), जिसे रीनल सेल कैंसर या रीनल सेल एडेनोकार्सिनोमा भी कहा जाता है, किडनी कैंसर का सबसे आम प्रकार है। 10 में से 9 किडनी कैंसर रीनल सेल कार्सिनोमा होते हैं। हालांकि आरसीसी आमतौर पर किडनी के अन्दर एक ट्यूमर के रूप में बढ़ता है, कभी–कभी एक किडनी में 2 या ज्यादा ट्यूमर होते हैं या एक ही समय में दोनों गुर्दे में भी ट्यूमर होते हैं। आरसीसी के कई और प्रकार हैं, जो मुख्य रूप से इस पर आधारित हैं कि लैब में कैंसर कोशिकाएं कैसी दिखती हैं।

2. ट्रांजिशनल सेल कार्सिनोमा

ये कैंसर किडनी में हर 100 में से लगभग 5 से 10 ट्रांजिशनल सेल कार्सिनोमा (टीटीसी) होते हैं, जिन्हें यूरोथेलियल कार्सिनोमा भी कहा जाता हैं। ट्रांजिशनल सेल कार्सिनोमा किडनी में ही शुरू नहीं होता है, बल्कि रीनल पेल्विस की परत में होता है। टीटीस वाले लोगों में अक्सर वही लक्षण दिखते हैं जो रीनल सेल कैंसर वाले लोगों में होते हैं – मूत्र में खून और कभी–कभी, पीठ दर्द।

3. विल्मस ट्यूमर (नेफ्रोब्लास्टोमा)

विल्म्स ट्यूमर लगभग हमेशा बच्चों में होता है। ऐडल्ट में इस प्रकार का कैंसर बहुत दुर्लभ हैं।

4. रीनल सार्कोमा

रीनल सार्कोमा एक दुलर्भ प्रकार का किडनी कैंसर है जो ब्लड वेसल्स या किडनी के कनेक्टिव टीस्सू में शुरू होता है।

किडनी कैंसर का आयुर्वेदिक उपचार

किडनी कैंसर आजकल आम कैंसर होने लग गया है। किडनी के कैंसर में भी वहीं लक्षण प्रारम्भ में दिखते हैं जो किडनी की सामान्य बीमारी में दिखाई देते हैं। किडनी के कैंसर रोगी को आश्रम से रक्तशोधन 6 चम्मच, किडनी 4 चम्मच, हिमोग्लोबीन 2 चम्मच (शहद के साथ), कैंसर किट 6 चम्मच, आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच औषधी प्रातःकाल हिमोग्लोबीन 2 चम्मच के साथ कीमों 2 चम्मच दोनो के 4 चम्मच शहद एवं शेष औषधियों का काढ़ा बनाकर सेवन करना हैं। गौमूत्र 50 मी.ली. पांच ग्राम हल्दी के साथ एक उबाला लेकर छानकर पीना हैं। हरे पत्तो का ज्यूस प्रातःकाल पीना हैं, और उपर लिखी सारी प्रक्रिया दोपहर बाद पुनः दोहरानी हैं। किडनी रोगी को हरी सब्जियों में लोकी, तरोई, परमल, करेला, शिमला मिर्च का सेवर करना हैं और पवतान आटे का ही सेवन करना हैं।

यूरिनरी ब्लैडर कैंसर

मूत्राशय कैंसर मूत्राशय के ऊतको से उत्पन्न होने वाली एक बीमारी हैं। यह एक ऐसी बीमारी हैं, जिसमे कोशिकाएं असामान्य रूप से बढ़ने लगती हैं व शरीर के अन्य हिस्सों में भी फैलने की क्षमता रखती हैं। मूत्र में रक्त, पेशाब के साथ दर्द और पीठ के निचले हिस्से में दर्द इसके कुछ लक्षणों में शामिल हैं। ब्लैडर में कैंसर तब होता है, जब उसकी आतंरिक परतों में असाधारण रूप से ऊतक विकसित होने शुरू हो जाते हैं, ब्लैडर की वॉल के टिश्यूज के इंफैक्टेड होने के साथ वहां खून के थक्के जमने की वजह से इस कैंसर की शुरूआत होती है, ब्लैडर कैंसर महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों में ज्यादा होता है, यह किसी भी उम्र में हो सकता है।

मूत्राशय का कैंसर तीन तरह का होता है। इसमें यूरोटेलियन कार्सिनोमा, स्कवामस सेल कार्सिनोमा, एडनोकार्सिनोमा शामिल है। इसके अलावा मूत्राशय की सतह में होने वाले कैंसर

को सुपरफिशियल ब्लैडर कैंसर कहा जाता है। वहीं, मूत्राशय की सतह से मांसपेशियों तक फैलने वाले कैंसर को इनवेंसिव ब्लैडर कैंसर कहते हैं।

ब्लैडर मानव शरीर में पेट के नीचले हिस्से में स्थित एक खोखली थैलीनुमा अंग होता है, जो हमारे यूरिनरी सिस्टम का हिस्सा होता है. किडनी से छनकर आए यूरिन को ब्लैडर ही कलेक्ट करता है और यहीं से यूरिन शरीर के बाहर निकलता है। कुछ लोग ब्लैडर में कैंसर की बीमारी के शिकार हो जाते हैं, जो उन्हें मौत के द्वार तक ले जाती है. ब्लैडर में कैंसर तब होता है, जब उसकी आंतरिक परतों में असाधारण रूप से ऊतक विकसित होने शुरू हो जाते हैं। ब्लैडर की वजह से इस कैंसर की शुरूआत होती है।

ब्लैडर कैंसर महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों में ज्यादा होता है. यह किसी भी उम्र में हो सकता है. हालांकि एक स्टडी के अनुसार, यह कैंसर ज्यादातर 60 साल से ऊपर उम्र की पुरूषों को होता है. ब्लैडर कैंसर ज्यादातर मूत्राशय की अंदरूनी परत की कोशिकाओं में विकसित होता है. कैंसर मूत्राशय में होना काफी आम है।

ब्लैडर कैंसर के कारण

सिगरेट, सिगार या पीना, जहरीले रसायनों से संपर्क, कैंसर के उपचार में इस्तेमाल की जाने वाली दवाएं, बार–बार होने वाले मूत्र संक्रमण या सूजन, कैंसर की फैमली हिस्ट्री।

ब्लैडर (मूत्राशय) कैंसर के लक्षण

पेशाब में खून आना, पेशाब का रंग बदलना और लाल या काला रंग का दिखाई देना, कभी–कभी मूत्र सामान्य दिखाई देता है और लैब में ब्लड का पता चलता है, जल्दी–जल्दी पेशाब आना, पीठ दर्द, यूरिन में खून आना सबसे बड़ा सिप्टम है, ऐसा हो सकता है दर्द ना हो, मगर पेशाब लाल रंग का होता है, शौच या पेशाब में खून का आना, पेशाब करने के दोरान दर्द का होना, कभी – कभी पेट के निचले हिस्से में दर्द का होना, पीरियड्स के वक्त अधिक खून का आना, कभी–कभी यूरिन में जलन और यूरिन का रूकना।

यूरिनरी ब्लैडर कैंसर के मुख्य प्रकार हैं।

यूरोटेलियन कार्सिनोमा – यह सभी मूत्राशय के कैंसर का 90 प्रतिशत हिस्सा है, जो ज्यादातर वयस्कों मे पाया जाता है और मूत्राशय की यूरोटेलियन कोशिकाओं में शुरू होता है।

स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा – यह मूत्राशय को अस्तर करने वाली स्क्वैमस कोशिकाओं की जलन या सूजन के कारण होता है। यह सभी मूत्राशय के कैंसर का 4 प्रतिशत है।

एडेनोकार्सिनोमा – यह मूत्राशय की ग्रंथि कोशिकाओं से विकसित होता है और मूत्राशय के कैंसर का 2 प्रतिशत हिस्सा होता है।

अन्य प्रकार हैं –

मूत्राशय का सारकोमा – यह कैंसर मूत्राशय की वसा कोशिकाओं और मूत्राशय के सभी कैंसर का 2 प्रतिशत हिस्सा होता है।

स्माल सेल यूरिनरी ब्लैडर कैंसर – यह एक दुर्लभ प्रकार का ब्लैडर कैंसर है, और शरीर के अन्य भागों में तेजी से फैलता है।

अन्य कैंसर की तरह ब्लैडर कैंसर भी पांच चरणों में होता है।

चरण 0 इस चरण में, कैंसर मूत्राशय की परत के भीतर सीमित होता है।

स्टेज 1 कैंसर से परे फैल गया है लेकिन अभी भी मांसपेशियों की प्रतिक्रिया नहीं है।

स्टेज 2 इस स्टेज का मतलब है कि कैंसर मूत्राशय में मांसपेशियों की परत तक फैल गया है।

स्टेज 3 ब्लैडर के आसपास के हिस्से में कैंसर फैल गया है।

स्टेज 4 कैंसर आगे बढ़ गया है और शरीर के आसपास के हिस्सों में पहुंच गया है।

युरीन ब्लैडर कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

युरीन ब्लेडर के कैंसर रोगी को मूत्र त्याग की परेशानी के साथ बार–बार मूत्र में इन्फेक्शन और मूत्र में रक्त एवं पस सेल आने की शिकायत बनी रहती हैं। दर्द भी लगातार बना रहता है। अतः

अधिक दर्द की हालत में शाम को आश्रम की दर्द नामक औषधी के 6 चम्मच चूर्ण का काढ़ा बनाकर सोने से 1 घण्टे पूर्व सेवन करने की सलाह दर जाती हैं। इससे रोगी को रातभर आराम से नींद आती हैं। आश्रम द्वारा दर जाने वाली रक्तशोधन 6 चम्मच, बहुमूत्र 4 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच का एक साथ काढ़ा बनाकर प्रातःकाल सेवन करें एवं इतनी ही मात्रा में सांयकाल 5:00 बजे से पूर्व सेवन करें। यूरीन ब्लेडर के रोगी को आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच शहद से प्रातःकाल और सांयकाल सेवन करने की सलाह दी जाती हैं। हरे पत्तो का ज्यूस प्रातःकाल और दोपहर सेवन करें। 50 मी.ली. गौमूत्र और 5 ग्राम गांठ हल्दी का एक उबाला लेकर छानकर दोनो समय सेवन करें।

गर्भाशय कैंसर

गर्भाशय को बच्चेदानी भी कहा जाता हैं यह कैंसर गर्भाशय के अंदर की लाइनिंग जिसे एंडोमेट्रियल कहा जाता है, उससे होता हैं। यह बीमारी महिलाओं के माँ बनने की क्षमता को हमेशा के लिए खत्म कर देती हैं। गर्भाशय कैंसर महिलाओं को 30 से 35 की उम्र में अधिक फैलता हैं इस बीमारी का अधिक होना कई बार जानलेवा साबित भी हो जाता हैं, इसलिए इस बीमारी का सही समय पर इलाज होना अत्यंत आवश्यक होता हैं।

महिलाओं के प्रजनन अंगों में कई तरह के कैंसर होते है, गर्भाशय का कैंसर भी उन्ही में से एक है। इसे एंडोमेट्रियल कैंसर, बच्चेदानी का कैंसर या यूटेराइन कैंसर के नाम से भी जाना जाता है। जब गर्भाशय की आंतरिक परत में मौजूद कोशिकाओं में आनुवंशिक बदलाव आता है तो वे असामान्य रूप से विभाजित और विकसित होने लगती हैं।
कोशिकाओं के असामान्य रूप से विभाजन होने और बढ़ने के कारण गर्भाशय में ट्यूमर बनने लगता है। यह ट्यूमर आगे जाकर कैंसर में बदल जाता है। लोग अक्सर गर्भाशय के कैंसर और गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर को एक समझ लेते हैं। हालांकि, यह दोनों एक दूसरे से भिन्न यानी अलग प्रकार के कैंसर हैं। इस

ब्लॉग में आगे हम गर्भाशय कैंसर के प्रकार, चरण, कारण, लक्षण, और उपचार के बारे में विस्तार से जानने की कोशिश करेंगे।

गर्भाशय कैंसर से पीड़ित महिला खुद में कुछ लक्षणों को अनुभव कर सकती है। इसके मुख्य लक्षणों में निम्न शामिल हो सकते है– योनि से असामान्य रक्तस्त्राव या स्पॉटिंग होना, मेनोपॉज रजोनिवृत्ति के बाद योनि से सफेद पानी आना, मासिक धर्म के बीच रक्तस्त्राव होना, पीरियड्स का सामान्य से अधिक समय तक जारी रहना, योनि से अत्यधिक रक्तस्त्राव होना, लंबे समय तक रक्तस्त्राव होना, उम्र 40 से अधिक होने के बाद भी अधिक रक्तस्त्राव होना, पेट के निचले हिस्से में दर्द होना, सेक्स के दौरान दर्द महसूस करना, कुछ ऐसे कारक भी हैं जो गर्भाशय कैंसर के खतरे को बढ़ाते हैं।
इसमें निम्न शामिल हो सकते हैं :– उम्र 60–70 वर्ष से अधिक होना।
जिन्हें मेनोपॉज आ चूका है, हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी, मेनोपॉज देर से आना, पीरीयड्स जल्दी शुरू होना, निःसंतान या कभी प्रेगनेंसी नहीं होना, हार्मोनल परिवर्तन होना, वजन बढ़ना या मोटापा होना, शुगर और हाई ब्लड प्रेशर की शिकायत होना।

जब एंडोमेट्रियम की कोशिकाओं में आनुवंशिक परिवर्तन होता है तो वे कोशिकाएं असामान्य हो जाती हैं। असामान्य होने के बाद, ये कोशिकाएं तेजी से बढ़ने लगती हैं जिससे ट्यूमर का निर्माण होता है। यह ट्यूमर एक समय के बाद कैंसर में बदल जाता है। अब खास बात यह है कि एंडोमेट्रियम की कोशिकाओं में यह आनुवंशिक परिवर्तन क्यों होता है – इसके कारण की पुष्टि अभी तक नहीं हो पाई है। कुंछ विशेषज्ञो का मानना है कि एस्ट्रोजन का स्तर बढ़ने पर गर्भाशय कैंसर यानी बच्चेदानी में कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता है।
एस्ट्रोजेन और प्रोजेस्टेरोन अंडाशय यानी ओवरी में बनने वाले सेक्स हार्मोन हैं। जब इन दोनों के संतुलन में बदलाव आता है तो एंडोमेट्रियम में भी बदलाव आ सकता है। शोध के मुताबिक, अगर एस्ट्रोजेन के स्तर में वृद्धि हो, लेकिन प्रोजेस्टेरोन के स्तर में वृद्धि

न हो तो एंडोमेट्रियम की परत मोटी हो जाती है जो कैंसर का कारण बन सकती है।

गर्भाशय कैंसर को उसकी गंभीरता के आधार पर चार चरणों में बांटा गया है, जिसमें निम्न शामिल हैं :–

- **चरण 1** :– जब कैंसर केवल गर्भाशय में होता है तो उसे पहले चरण में रखा जाता है।
- **चरण 2** :– इस दौरान, कैंसर गर्भाशय और गर्भाशय ग्रीवा में फैल चूका होता है।
- **चरण 3** :– इस चरण में कैंसर गर्भाशय के बाहर जैसे कि श्रोणि लिम्फ नॉड्स में फैल चूका होता है, जैसे लेकिन मूत्राशय या मलाशय में नहीं होता है।
- **चरण 4** :– जब कैंसर पेल्विक क्षेत्र के बाहर फैल जाता है और मलाशय, मूत्राशय एवं शरीर के अन्य हिस्सों को भी सम्मलित करने लगता है तो उसे चौथे यानी आखिरी चरण में रखते हैं।

गर्भाशय (बच्चेदानी) में कैंसर के प्रकार

गर्भाशय कैंसर मुख्यत दो प्रकार के होते हैं जिन्हें यूटराइन सार्कोमा और एंडोमेट्रियल कार्सिनोमा के नाम से जानते हैं।

यूटराइन सार्कोमा (Uterine Sarcoma) :–

यह गर्भाशय की मांसपेशियों की परत यानी एंडोमेट्रियम या आसपास की उत्तकों में होने वाला कैंसर है।

एंडोमेट्रियल कार्सिनोमा (Endometrial Carsinoma) :–

यह गर्भाशय की भीतरी परत में होने वाला कैंसर है। गर्भाशय के लगभग सभी कैंसर इसी प्रकार के होते हैं।

सर्वाईकल कैंसर

भारत में प्रति वर्ष लाखों महिलायें गर्भाशय के कैंसर से ग्रसीत होती हैं इनमें से दो तिहाई में यह असाध्य रोग की हद तक बढ़ जाता है। जबकि सच यह है कि इस रोग से अधिकांश महिलायें

बच सकती हैं, क्योंकि सामान्य शारीरिक परीक्षण द्वारा इस रोग का पता लगाया जा सकता है। स्त्री का छोटी उम्र में विवाह एवं 18 वर्ष से कम उम्र में गर्भवती, कई पुरूषों के साथ संभोग, गुप्तांगों की स्वच्छता का ध्यान नहीं देना, स्त्री का गुप्त रोगों से ग्रसित होना तथा तम्बाकू के उपयोग से भी गर्भाशय ग्रिवा का कैंसर होता है। इसके अतिरिक्त गर्भाशय ग्रिवा कैंसर की चेतावनी देने वाले लक्षण हैं योनि द्वार से असामान्य रक्तस्त्राव, रजोनिवृति के पश्चात् रक्तस्त्राव आदि। ये किसी दूसरी बीमारी के लक्षण भी हो सकते हैं फिर भी स्त्री रोग विशेषज्ञ से परामर्श और जाँच कराना आवश्यक है।

जब कोशिकाएं असामान्य होकर अनियंत्रित रूप से विभाजित होने और बढ़ने लगती हैं तो कैंसर की समस्या पैदा होती है। सामान्य कोशिकाएं एक निर्धारित समय के बाद मर जाती हैं, लेकिन असामान्य कोशिकाएं मरती नहीं हैं और समय के साथ विभाजित होती रहती हैं। जब असामान्य कोशिकाएं एक जगह एकत्रित होती हैं तो ट्यूमर बनता है। सर्विक्स में असामान्य कोशिकाओं के बनने की स्थिति को सर्वाइकल कैंसर कहते हैं। हालॉकि, कुछ ऐसे कारक हैं जो सर्वाइकल कैंसर का खतरा बढ़ाते हैं। इसमें शामिल हैं :– असुरक्षित यौन संबंध बनाना, सिगरेट का सेवन करना, प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होना, लंबे समय तक तनाव से ग्रस्त होना, बहुत छोटी उम्र में गर्भधारण करना, लंबे समय तक गर्भनिरोधक दवाओं का सेवन करना, बार–बार गर्भधारण करना (आमतौर पर तीन से ज्यादा बच्चों को जन्म देना), यौन संचारित बीमारियों जैसे कि क्लैमाइडिया, सुजाक या उपदंश से पीड़ित होना।

सर्वाइकल कैंसर के लक्षण

योनि से असामान्य ब्लीडिंग (खासकर दो नियमित पीरियड्स के बीच), संभोग के बाद योनि से खून आना, संभोग के समय योनि में तेज दर्द होना, पेशाब के दौरान तेज दर्द अनुभव होना, पेल्विक दर्द जो पीरियड से संबंधित नहीं है, पेल्विक एक्जाम या मेनोपॉज के बाद ब्लीडिंग होना। योनि से भारी या असामान्य रक्तस्त्राव

होना (यह पानी जैसा या गाढ़ा हो सकता है और इससे तेज बदबू आती है)।

टेस्ट के परिणाम के आधार पर यह तय किया जाता है कि सर्वाइकल कैंसर किस स्टेज में हैं स्टेज से डॉ. को यह समझने में मदद मिलती हैं कि कैंसर किस हद तक फैला है। सर्वाइकल कैंसर के निम्न स्टेज हैं :–

स्टेज 0 – इस दौरान, सर्विक्स में कैंसर युक्त कोशिकाएं नहीं होती हैं, लेकिन कुछ जैविक परिवर्तन हो चुके होते हैं, जिससे भविष्य में कैंसर होने का खतरा होता है। इसे कार्सिनोमा इन सीटू या सर्वाइकल इंट्राएपिथेलियल नियोप्लाजिया कहते हैं।

स्टेज 1 – इस स्थिति में कैंसर सर्विक्स में ही मौजूद होता है।

स्टेज 2 – कैंसर सर्विक्स के आसपास के उतकों में फैल जाता है। लेकिन श्रोणि की लाइनिंग (परत) या योनि के निचले भाग तक नहीं पहुचा होता हैं।

स्टेज 3 – कैंसर योनि के निचले हिस्से और या श्रोणि की लाइनिंग तक पहुंच चुका होता हैं।

स्टेज 4 – कैंसर आँतों, मूत्राशय या अन्य अंगों जैसे कि फेफड़ों तक पहुंच जाता हैं।

यह कैंसर यूट्रस के सबसे निचले भाग सर्विक्स (गर्भाशय ग्रीवा) की सतह पर शुरू होता है, इसलिए इसे सर्वाइकल कैंसर कहां जाता है। यह मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं – स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा और एडेनोकार्सिनोमा लगभग 80 प्रतिशत से 90 प्रतिशत सर्वाइकल कैंसर स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा, बाकी 10 प्रतिशत से 20 प्रतिशत एडेनोकाकर्सिनोमा होते हैं।

अंडाशय का कैंसर (ओवरी कैंसर)

पश्चिमी देशों में पिछले पचास वर्षों में, अंडाशय के कैंसर से मरने वाली महिलाओं की संख्या दुगनी हो गई है। इसका कारण निदान के बेहतर तरीके हो सकते हैं या यह बीमारी अब सचमुच में ही अधिक मात्रा में होने लगी है। अंडाशय का कैंसर 35 वर्ष सें कम

उम्र की महिलाओं में बहुत कम पाया जाता है, तरंतु जैसे–जैसे उम्र बढ़ती जाती है इसका प्रकोप भी बढ़ता जाता है और 50 से 70 वर्ष की आयु में करीब यह सबसे अधिक संख्या में पाया जाता है। 45 प्रतिशत मरीज 45 से 65 वर्ष की आयु की होती हैं, केवल 3 प्रतिशत मरीज 35 वर्ष से कम उम्र की होती हैं।

ओवरी कैंसर के कारण :– यह कैंसर साधारणतया उन औरतों में पाया जाता है जिन्हें बच्चे नहीं होते, जिनकी माहवारी छोटी उम्र में आरंभ हो गई हो और लंबी उम्र तक चलती रहें। लगभग एक प्रतिशत मरीजों में अंडाशय, गर्भाशय एवं स्तन के कैंसर का पारिवारिक संबंध पाया जाता है। अगर एक महिला के दो नजदीकी रिश्तेदार अंडाशय के कैंसर के मरीज रहे हों तो 40 प्रतिशत खतरा है कि उस महिला के जीवन काल में उसे अंडाशय के कैंसर का सामना करना पड़ेगा। आधे मरीजों को इस खतरे का सामना 50 वर्ष से कम उम्र में करना होता है।

लक्षण और चिह्न

पेट में दर्द एवं आसुविधा इस बीमारी के साधारण लक्षण हैं। पेट का फूलना एवं पेट में गोले को अनुभव करना भी देखा जा सकता है। बदहजमी, पेशाब का बार–बार होना, वजन और भूख का कम होना, असाधारण माहवारी और महावारी बंद होने के बाद भी योनि में से खून का बहना आदि अंडाशय के कैंसर के अन्य लक्षण हैं।
प्रत्येक महिला को माहवारी बंद होने से कुछ वर्ष पूर्व से अपनी डॉक्टरी जांच प्रति वर्ष करानी चाहिए एवं साथ ही पूरे पेट की अल्ट्रासाउंड जांच भी। प्रति 6 या 12 महीने के बाद अल्ट्रासाउंड जांच कराने से अंडाशय के कैंसर को बहुत ही प्रारंभिक अवस्था में पकड़ा जा सकता है जब बीमारी के एकदम ठीक होने की उम्मीद बहुत अधिक होती है। आमतौर पर मरीज विशेषज्ञ के पास तीसरी अवस्था के साथ पहुंचते हैं जबकि एकदम ठीक होने की उम्मीद बहुत कम होती हैं।

अंडाशय कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

महिलाओं के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग में होने वाला यह कैंसर महिला की सब खुशियां छीन लेने के लिए प्रयाप्त हैं। पर आश्रम की रिसर्च और कारगार औषधियों के चलते इसके उत्तम परिणाम प्राप्त हो रहे है। गर्भाशय कैंसर में रोगी एक तो कैंसर के मोर्चे पर लड़ता हैं, और दुसरा इनफेक्शन के मोर्चे पर और तिसरा मोर्चा होता हैं रक्तस्त्राव इसके कारण बार–बार हिमोग्लोबीन कम होना और कभी–कभी स्वेत प्रदर का भी भारी मात्रा में हो जाना भी होता हैं।

अतः आश्रम द्वारा दी जाने वाली निम्न औषधियां जैसे प्रदर 4 चम्मच, रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, प्रतिरक्षा 3 चम्मच को लेकर सभी का काढ़ा बनाकर प्रातःकाल ग्रहण करें एवं इसी मात्रा का काढ़ा सांयकाल भी इतनी ही मात्रा में ग्रहण करें। हिमोग्लोबीन 2 चम्मच, आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच दोनों को एक साथ शहद में मिलाकर प्रातःकाल सेवन करें। हरे पत्तो को ज्यूस प्रातः और दोपहर को 2 बार सेवन करें। सफाई को विशेष ध्यान रखें।

कोलन कैंसर

कोलन कैंसर मुख्य रूप से बड़ी आंत में होता है जहां पाचन से अपशिष्ट पदार्थ बनने लगते हैं, कोलन पचे हुए भोजन से विटामिन और पोषक तत्वों को अवशोषित करता हैं। यह आमतौर पर तब शुरू होता है जब असामान्य कोशिकाएं नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं, मलाशय की दीवार और पड़ोसी ऊतक पर आक्रमण करती हैं। (कोलोरेक्टल)(सीआरसी) वयस्कों में सबसे आम प्रकार के कैंसर में से एक हैं। यह पुरूषों में होने वाले अधिकांश मामलों के साथ सबसे घातक में से एक है। हालांकि सीआरसी आमतौर पर पुरूषों में पाया जाता है, महिलाओं में भी यह रोग विकसित होना संभव हैं।

दुनिया भर में इस वक्त कैंसर के मामले तेजी से पैर पसार रहें हैं। कोलन कैंसर जिसे कोलोरेक्टल कैंसर भी कहा जाता है। दरअसल बड़ी आंत का कैंसर हैं, जो कोलोन यानी बड़ी आंत में

होता है, बड़ी आंत शरीर में पाचन और पानी के अवशोषण और टॉक्सिक पदार्थो को खत्म करने में अहम भूमिका निभाती हैं। हालांकि अभी तक कोलन कैंसर के सही कारणों का पता नहीं चल पाया है लेकिन युवा इसकी चपेट में ज्यादा आ रहे है जो चिंता का विषय हो सकता हैं।

कोलन कैंसर क्या हैं श्ुरूआती लक्षण :–

अगर कोलन कैंसर का पता शुरूआती स्टेज में लग जाए तो 90 प्रतिशत फिसदी मरीजों की जान बचाई जा सकती है, लेकिन कोलन कैंसर के लक्षणों के प्रति जागरूकता नहीं होना इसके चलते होने वाली मौतों का कारण हो सकता है। इसलिए इसके शुरूआती संकेतों और लक्षणों को जरूर जान लेना चाहिए।
(1) बार–बार पेट में दर्द होना, अगर आपके पेट में बार–बार दर्द हो रहा है या पेट में ऐंठन हो रही है तो इसकी जांच करवानी चाहिए। (2) बीमारी या दवा से वजन एकाएक गिरना शुरू हो जाता हैं। (3) कभी बार–बार शौच आता है और कभी एकाएक कब्ज हो जाती हैं। (4) मल त्याग करने में मलाशय में दर्द होता हैं। (5) अस्पस्टिकृत वनज घटाने। (6) मल त्याग करते वक्त खून आना भी इसका एक संकेत है जिसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। (7) थकान और बेचैनी महसूस होती हैं। (8) एक लगातार आदतों में परिवर्तन, जैसे कब्ज, दस्त, मल रंग में परिवर्तन, मल आकार में परिवर्तन, जैसे संकुचित मल। (9) मल में चमकीले लाल रक्त के साथ–साथ मैरून रंग या काला मल। (10) मलाशय से रक्तस्त्राव या मलाशय से रक्त आना। (11) कुछ समय तक खाना न खाने पर भरा हुआ महसूस होना। (12) अत्यधिक गैस और पेट दर्द। (13) ऐसा महसूस होना कि आपकी आंत पूरी तरह से खाली नहीं हुई हैं।

कोलन कैंसर के कारण :–

कोलन कैंसर के अधिकतर मामले जैनिटिक माने जाते है, इसके अलावा तेजी से बढ़ता मोटापा, रेड मीट का ज्यादा सेवन, धुम्रपान और अल्कोहल का ज्यादा सेवन, शुगर का ज्यादा सेवन और शौच की बदलती आदतों के चलते भी कोलन कैंसर के केस ज्यादा हो

सकते हैं, इन कारणों की वजह से मलाशय के अंदरूनी हिस्से में हेल्दी कोशिकाएं चेंज होने लगती हैं और कंट्रोल से बाहर हो जाती हैं, इस परिवर्तन की वजह से बड़ी आंत में ट्यूमर बन जाता है जिसे कोलन कैंसर कहते हैं।

कोलन कैंसर के लिए जोखिम कारक :– ऐसे कई जोखिम कारक हैं जो सीधे आपके पेट के कैंसर होने की संभावना को प्रभावित करतें हैं।

परिवारिक इतिहास :– कोलन कैंसर के जोखिम कारकों में से एक पारिवारिक इतिहास है, जिन व्यक्तियों का कोलन कैंसर का पारिवारिक इतिहास है, उनमें इस बीमारी के विकसित होने का अधिक जोखिम होता हैं।

कोलोरेक्टल कैंसर

कोलोरेक्टल कैंसर वह कैंसर है जो कोलन या मलाशय में होता है। इसे कोलन कैंसर या रेक्टल कैंसर भी कहा जा सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कैंसर कहां से शुरू होते हैं। कोलन कैंसर और रेक्टल कैंसर को अक्सर एक साथ रखा जाता है क्योंकि उनमें कई विशेषताएं एक जैसी होती हैं। कोलन बड़ी आंत या बड़ी बाउल है। कोलन और मलाशय की दीवार में ऊतक की चार परतें होती हैं। कैंसर तब होता है जब शरीर में कोशिकाएं अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती हैं। कोलोरेक्टल कैंसर की शुरूआत बड़ी आंत की दीवार के सबसे भीतरी परत में होती है। अधिकांश कोलोरेक्टल कैंसर छोटे पॉलीप्स से शुरू होते हैं। ये पॉलिप्स कोशिकाओं का एक समूह होते हैं। समय के साथ, इनमें से कुछ पॉलीप्स कैंसर में विकसित हो जाते हैं। यह कैंसर पहले बड़ी आंत की दीवार में, फिर आसपास के लिंफ नोड्स में और फिर पूरे शरीर में फैलता है।

सभी पॉलीप्स कैंसर में विकसित अगर कोलोरेक्टल कैंसर का समय पर पता लग जाए और उचित उपचार किया जाए तो इसका ईलाज संभव है।

कोलोरेक्टल कैंसर के लक्षणों में शामिल है :–
मल त्याग की आदतों में परिवर्तन; लगातार दस्त, कब्जियत या यह महसूस करना कि पेट पूरी तरह से खाली नहीं है, लगातार कमजोरी या थकान महसूस करना और भूख न लगना, वजन कम होना, हीमोग्लोबिन में कमी (एनीमिया), पेट में दर्द या बेचैनी, मल में लाल या काले रंग का खून का धब्बा, वृद्धावस्था।

कोलोरेक्टल कैंसर होने के कारण
पश्चिम आहार (अत्यधिक वसायुक्त आहार, लाल मांस और प्रोसेस्ड मांस से भरपूर आहार; कम फाइबर वाला आहार)। कोलोरेक्टल पॉलीप्स का इतिहास (एडिनोमेटस पॉलीप, बड़े पॉलीप्स और अनेक पॉलीप्स)। कोलोरेक्टल कैंसर का पारिवारिक इतिहास (एक तिहाई कोलोरेक्टल कैंसर के मरीजों के परिवार के सदस्यों में यह बीमारी होती है)। कोलोरेक्टल कैंसर का पिछला इतिहास (यदि आपका पहले कोलोरेक्टल कैंसर के लिए ईलाज हुआ हैं), कोलन की सूजन आंत्र रोग (inflammatory bowel disease); अल्सरेटिव कोलाइटिस और क्रोच (Crohn’s) रोग (कैंसर का खतरा अवधि और गंभीरता के साथ बढ़ जाता है), मधुमेह, मोटापा, शारीरिक निष्क्रियता, धुम्रपान और शराब का सेवन।

बड़ी आंत का कैंसर
बड़ी आंत का कैंसर (कोलेन, मलाशय, मलद्वार) आमतौर पर पाए जाने वाले कैंसर में से एक है। पश्चिमी देशों की तुलना में यह कैंसर भारत में कम तादाद में पाया जाता हैं।

यह कैंसर आमतौर पर अधिक उम्र के लोगों में पाया जाता है हालांकि इसे युवावस्था में देखा जा सकता है। यह देखा गया है कि कैंसर जब 40 वर्ष से कम उम्र में पाया जाता है तो उसका परिणाम आमतौर पर खराब होता हैं।

भोजन में फाईबर (सब्जियां, फल) की कमी एवं प्रोटीन और चर्बी वाले पदार्थों की अधिकता बड़ी आंत, मलाशय या मलद्वार के कैंसर की उत्पति में सहायक मानी जाती हैं। पशुओं में पाई जानी

वाली चर्बी में गाय की चर्बी बड़ी आंत के कैंसर के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार मानी जाती हैं।

यही कारण है कि एशिया एवं अफ्रीका की तुलना में पश्चिमी देशों में जहां गाय के मांस का अधिक सेवन किया जाता है, बड़ी आंत का कैंसर अधिक पाया जाता हैं।

कुछ बीमारियां जैसे कि फैमिलियल पॉलीपोसीस, अलसरेटिव कोलाइटिस, क्रोन्स की बीमारी इत्यादि एक लंबे समय तक रहने पर बड़ी आंत के कैंसर में बदल सकती हैं। अतः ऐसे मरीजों के लिए यह आवश्यक है कि वे समय–समय पर अपनी पूरी जांच कराते रहें। इस जांच में कोलोनोस्कोपी भी शामिल है। इस जांच से यह पता लगेगा कि कहीं बीमारी कैंसर में तो बदल नहीं गई हैं।

लक्षण और चिह्न

इस बीमारी के लक्षण कई बातों पर निर्भर हैं, जैसे कि उसकी स्थिति, आकार एवं फैलाव, और समस्याएं (कम्पलीकेशंस) जो ट्यूमर में मौजूद हों।

नियमित रूप से शारिरिक जांच के दौरान कराए गए कई लक्षणहीन मरीजों में, सिगमोइडोस्कोपी अथवा कोलोनोस्कोपी में ट्यूमर का पता लग सकता हैं। यह एक ठोस प्रमाण है कि ट्यूमर की मौजूदगी का जल्दी से जल्दी पता लगाने के लिए नियमित रूप से शारिरिक जांच कराते रहना चाहिए।

कोलन कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

आश्रम से चिकित्सा लेने वाले कैंसर रोगियों को रक्तशोधन 6–6 चम्मच, कैंसरकिट 6–6 चम्मच, किमो 50 दिनो तक 2–2 चम्मच शहद के साथ औषधियां लेनी होती हैं। कब्ज इस कैंसर में बिल्कुल नही रहनी चाहिये, इसलिए कब्ज औषधी के डेढ़–डेढ़ चम्मच चूर्ण सामान्य पानी से फाकी के रूप मे दें। हिमोग्लोबीन औषधी के 2–2 चम्मच प्रातः सांय शहद से चटाये। रोगी को सब्जियों का सूप व फलों का ज्यूस प्रयाप्त मात्रा में पिलाऐं।

प्रोस्टेट कैंसर

क्या है प्रोस्टेट कैंसर ये समझने के लिए जरूरी हैं कि हम इससे जुडी कुछ महत्वपूर्ण बातों को समझें। पहले समझना जरूरी है की प्रोस्टेट क्या है। प्रोस्टेट एक छोटी ग्रंथि है जो एक आदमी के पेट के निचले हिस्से में पाई जाती है। यह मूत्राशय के नीचे और मूत्रमार्ग के आसपास स्थित है। प्रोस्टेट हार्मोन टेस्टोस्टेरोन द्वारा विनियमित होता और एक तरल पदार्थ का उत्पादन करता है, जिसे वीर्य कहा जाता है। वीर्य शुक्राणु युक्त तरल पदार्थ है जो वीर्य स्ख्लन के दौरान मूत्रमार्ग से बाहर निकलता हैं।

50 वर्ष की उम्र के बाद, बड़ी तादाद के पुरूषों में प्रोस्टेट ग्रंथि, हारमोंस में बदलाव के कारण, आकार में बढ़ना शुरू करती है। भारतवर्ष में यह 45 से 50 वर्ष की आयु में होता है और आमतौर पर यह कैंसर नहीं होता है। इसे प्रोस्टेट की बिनाइन वृद्धि के नाम से जाना जाता है और इससे पेशाब के निकास में तकलीफ होती है। इसका ईलाज प्रोस्टेट ग्रंथि को ऑपरेशन द्वारा निकाल कर किया जा सकता है। परंतु कुछ प्रतिशत लोगों में, कोशिकाओं के अनियमित विभाजन एवं पैदाइश के कारण, प्रोस्टेट ग्रंथि में कैंसर की उत्पति हो सकती है। कैंसर की कोशिकाएं न केवल आसपास के टिशू में फैलती हैं, परंतु शरीर के अन्य अंगों में मेटास्टेसिस भी उत्पन्न कर सकती हैं। ये मेटास्टेसिस खून की नलियों में से होकर जाते हैं, अतएव फेफड़े, जिगर, रीढ़, कूल्हे और लंबी हड्डियों में आमतौर पर देखे जाते हैं।
जिंक की शारीरिक जरूरत अगर आप पूरी करते हैं, तो 51 प्रतिशत प्रोस्टेट कैंसर की आशंका कम हो जाती है। कैल्शियम पर काबू रखें : शरीर में कैंल्शियम की मात्रा ज्यादा होने से प्रोस्टेट ग्लैंड ग्रंथि को नुकसान होता है और कैंसर होने की आशंका बढ़ जाती है। ज्यादा विटामिन न लें : कई विटामिन्स शरीर में कैंसर के बढ़ने का कारण बन सकते हैं।

प्रोस्टेट कैंसर के लक्षण :– पेशाब करने या अपने मूत्राशय को खाली करने में कठिनाई, जब आप पेशाब करते है तो कमजोरी प्रवाह, ऐसा महसूस होना कि आपका मूत्राशय ठीक से खाली नहीं हुआ है, पेशाब करने के बाद पेशाब का टपकना, अधिक बार पेशाब करने की आवश्यकता, विशेष रूप से रात में, पेशाब करने की अचानक इच्छा कभी–कभी आप शोचालय जाने से पहले जुड़ाव कर सकते हैं, मूत्र अवरोधन, पेशाब में खून आना, गुर्दे की विफलता, पेट के निचले हिस्से में दर्द, प्रतिदिन मलाशय से रक्तस्त्राव, नई शुरूआत हड्डी में दर्द विशेष रूप से रीढ़ की हड्डी में, दोनों निचले अंगों में प्रोस्टेट कैंसर से पहले कमजोरी।

प्रोस्टेट कैंसर कैंसे फैलता है?

प्रोस्टेट कैंसर के फैलने की तेजी के ऊपर इसको दो मूल प्रकार में विभाजित किया जा सकता है :– (1) एग्रेसिव (Aggresslive) या आक्रामक ये बहुत तेजी से बढ़ता है। (2) नॉन–एग्रेसिव (non-aggressive) ये धीमी गति से बढ़ता है।

समय के साथ (non-aggressive) प्रोस्टेट कैंसर के साथ, टयूमर या तो बहुत धीमी गति से बढ़ता है या तो एकदम नहीं बढ़ता है। आक्रामक प्रोस्टेट कैंसर के साथ, टयूमर जल्दी से बढ़ सकता है और शरीर के अन्य क्षेत्रों में फैल सकता है, जैसे कि हड्डिया।

हड्डियों में इसके फैलने पर इसको मेटास्टैटिक कैंसर भी कहा जाता है। मेटास्टैटिक वह कैंसर है जो शरीर के अन्य क्षेत्रों में फैल गया है जहां से यह पहली बार हुआ था। जब प्रोस्टेट कैंसर मेटास्टेसिस करता है, तो यह अक्सर हड्डियों तक फैल जाता है। यदि कैंसर रीढ़ की हड्डी में फैलता है, तो आप अपने पैरों और मूत्राशय में महसूस कर सकते हैं।

प्रोस्टेट कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

मात्र पुरूषों में होने वाले इस कैंसर को ठीक करने में आश्रम की औषधियों के बहुत अच्छे परिणाम हैं। मूत्र के ब्लेडर के निचले हिस्से में प्रोस्टेट ग्रन्थि के इस कैंसर में रोगी को मूत्र त्याग में

आने वाली परेशानी को ठीक करने के लिए रोगी निम्न प्रकार से निम्नांकित मात्रा में औषधियों का सेवन करें। आश्रम द्वारा दि जाने वाली बहुमूत्र 4 चम्मच, रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, सोजिस 3 चम्मच का एक साथ काढ़ा बनाकर प्रातःकाल सेवन करें और इतनी ही मात्रा में इसी विधि से सांय 4–5 बजे तक पुनः सेवन करें। आयुर्वेदिक किमों 2 चम्मच का सेवन प्रातः और सांय शहद के साथ सेवन करें। हरे पत्तों का ज्यूस को प्रातः 5:00 बजे एवं दोपहर 2:00 बजे तक सेवन कर लें।

प्रोस्टेट कैंसर के रोगी को मूत्र अधिक समय तक होल्ड (रोककर रखना) नहीं करना चाहिये यानी 2–2 घण्टे के अन्तराल पर मूत्र त्याग करते रहना चाहिए। गोखरू, पूनर्नवा, पलास पुष्प जैसी हरी औषधियों की 10–10 ग्राम मात्रा हरे पत्तों के ज्यूस में मिलाने से बहुत उत्तम परिणाम प्राप्त होते हैं।

रक्त (ब्लड) कैंसर

रक्त कैंसर रक्त बनाने वाले ऊतकों को प्रभावित करता है और संक्रमण से लड़ने की शरीर की क्षमता को बाधित करता है। ये कैंसर कोशिकाओं अस्थि मज्जा को प्रभावित करती हैं – ऊतक जो शरीर में रक्त कोशिकाओं को बनाता है। रक्त कैंसर हमारे शरीर में रक्त कोशिकाओं के संचालन और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करता है। मानव शरीर में तीन प्रकार की रक्त कोशिकाएं होती हैं।

श्वेत रक्त कोशिकाएं – वे हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली के हिस्से के रूप में संक्रमण से लड़ती हैं, लाल रक्त कोशिकाएं – ये ऊतकों और अंगों को ऑक्सीजन के वाहक के रूप में कार्य करती हैं और फेफड़ों से कार्बन डाइऑक्साइड को वापस भेजती हैं जो हम बाहर छोड़ते हैं, प्लेटलेटस – वे छोटी रक्त कोशिकाएं होती हैं जो चोट या किसी स्थिति से रक्तस्त्राव को रोकने के लिए शरीर के थक्के बनाने में मदद करती हैं।

ब्लड कैंसर के सटीक कारण

ब्लड कैंसर के सटीक कारण वास्तव में अज्ञात है, लेकिन कुछ कारक आपमें ब्लड कैंसर के खतरे को बढ़ा सकते हैं, जिसमें शामिल है :–

परिवार में किसी का ब्लड कैंसर से पीड़ित होना, परमाणु रिएक्टर में काम करने या फिर पहले कभी कैंसर के ईलाज के कारण हाई फ्रिक्वेंसी के संपर्क में आना, आनुवंशिक विकार जैसे डाउन सिंड्रोम, बेंजीन जैसे हानिकारक रसायनों के संपर्क में आना, वायरल संक्रमण जैसे एचआईवी (मानव प्रतिरक्षा विकार) या ईबीवी (एपस्टीन बर वायरस) से ग्रस्त होना, धूम्रपान और तंबाकू का उपयोग करना, मोटापा, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली।

रक्त कैंसर के 3 विभिन्न प्रकार है :–

(1) ल्यूकेमिया (2) लिंफोमा (3) मायलोमा

ल्यूकेमिया – इस प्रकार के रक्त कैंसर को सफेद रक्त कोशिकाओं के अत्यधिक उत्पादन का कारण माना जाता है, जो संक्रमण से लड़ने में असमर्थ होता हैं। ल्यूकेमिया को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। जो इस प्रकार है –

- पहला – ALL एक्यूट लिम्फोसाइटिक ल्यूकेमिया (यह बोन मैनो की स्वेत रक्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है और बहुत तेजी से फैलता हैं)।
- दूसरा – AML एक्यूट माइलॉयड ल्यूकेमिया (यह माइलॉयड कोशिकाओं में उत्पन्न होता है, जो श्रवेत रक्त कोशिकाओं, लाल रक्त कोशिकाओं और प्लेटलेट्स पाया जाता है। ये भी बहुत तेजी से फैलता है।)
- तीसरा – CLL क्रोनिक लिम्फोसाइटिक ल्यूकेमिया (यह आपके बोन मैरो में स्थित लिम्फोसाइटों में शुरू होता है लेकिन धीरे–धीरे फैलता हैं)।
- चौथा – CML क्रोनिक माइलॉयड ल्यूकेमिया (यह माइलॉयड कोशिकाओं को प्रभावित करता है और धीरे–धीरे विकसित होता है)।

लिम्फोमा – रक्त कैंसर का यह रूप आपकी लिम्फ सिस्टम को प्रभावित करता है। यह आपके लिम्फ नोड्स, स्पलीन और थाइमस ग्लैंड में मौजूद नसों का एक नेटवर्क है। लिम्फोमा दो प्रकार के लिम्फोसाइटों में उत्पन्न होता हैं।

लिम्फोमा दो प्रकार के लिम्फोमासाईटों में उत्पन्न होता है –

(1) पहला :– बी कोशिकाएं (हॉजकिन लिम्फोमा) (2)। दूसरा :– टी कोशिकाएं (नॉन–हॉजकिन लिम्फोमा)

यह आपकी इम्यून गतिविधियों को बाधित करता है और लिम्फ नोड्स में सूजन का कारण बनता हैं।

मायलोमा – यह कैंसर आपके बोन मैरो की प्लाज्मा कोशिकाओं को प्रभावित करता है। ये सफेद रक्त कोशिकाएं संक्रमण को रोकने के लिए एंटीबॉडी बनाने के लिए जिम्मेदार होती हैं। मायलोमा आपकी हड्डी, रक्त और गुर्दे (किडनी) को नुकसान पहुचाता है, जिसके परिणामस्वरूप हड्डी में दर्द, हड्डी का कमजोर होना, रक्त में कैंल्शियम की अधिकता (हाइपरकैल्शिमिया), एनीमिया, रक्तस्त्राव, किडनी फेल्योर आदि जैसी बीमारियां होती हैं।

ब्लड कैंसर के प्रमुख लक्षण –

ब्लड कैंसर के प्रमुख लक्षण नहीं है। इसके अलावा आपके शारीरिक संकेत आपके रक्त कैंसर के प्रकार के आधार पर अलग–अलग हो सकते हैं। बल्ड कैंसर के कॉमन लक्षण निम्न हैं :–अत्यधिक थकान और कमजोरी, सांस लेने में कठिनाई, सिर चकराना, त्वचा का पीला पड़ना, छाती में दर्द, चोट लगना, मसूड़ो में रक्तस्त्राव, रक्त वाहिकाओं के फटने के कारण त्वचा पर छोटे लाल धब्बे पड़ना, भारी मासिक धर्म, काला मल शौच के वक्त खून आना, बुखार और रात को बहुत तेज पसीना आना, बेवजह वजन कम होना, हड्डी में दर्द, पेट दर्द के साथ मितली, बहुत ज्यादा प्यास लगना, कब्ज, भूख में कमी, टखनों में सूजन, त्वचा में खुजली हाथ–पैर का सुन्न होना और उनमें दर्द होना।

रक्त कैंसर के प्रमुख चरण –

स्टेज 1 – लिम्फोसाइट्स की संख्या अचानक बढ़ जाने के कारण लिम्फ नोड्स भी बढ़ जाते है। इस स्टेज में दूसरों की तुलना में कम खतरा होता है और इस स्टेज में कैंसर ईलाज योग्य होता है क्योंकि मेटास्टेसिस का विकास इस स्टेज में पूरी तरह से शुरू नहीं होता हैं।

स्टेज 2 – इस स्टेज में, रोगी के शरीर के अंग जैसे स्पलीन, यकृत (लीवर) और लिम्फ नोड्स बढ़ जाते हैं। सभी अंग एक समय में प्रभावित नहीं होते हैं बल्कि कैंसर इन अंगों पर धीरे–धीरे हमला करता हैं।

स्टेज 3 – इस स्टेज में, रोगी एनीमिया का शिकार हो जाता है और स्पलीन, यकृत (लीवर) और लिम्फ नोड्स कैंसर से प्रभावित होने लगते हैं। इस स्टेज में दो से ज्यादा अंग निश्चित रूप से प्रभावित होते हैं।

स्टेज 4 – यह आखिरी स्टेज होती है जिसमें कैंसर का शरीर पर प्रभाव अत्यंत भयंकर होता है और रोगी की मौत की संभावना बहुत ज्यादा बढ़ जाती है क्योंकि ब्लड प्लेटलेट बहुत तेजी से गिरने लगती हैं। इस स्टेज में फेफड़ों के साथ–साथ और भी महत्वपूर्ण अंग कैंसर सेल्स से प्रभावित होने लगते हैं।

ब्लड कैंसर का निदान

अगर आप ऊपर दिए गए लक्षणों का अनुभव करते हैं तो आपको अपने डॉ. से परामर्श करने की जरूरत हैं। ब्लड कैंसर का पता लगाने के लिए आपका डॉ. कुछ टेस्ट कराने की सलाह दे सकता है। ब्लड कैंसर के लिए सामान्य क्लीनिकल टेस्ट किए जा सकते हैं।

कंप्लीट ब्लड काउंट टेस्ट – यह ब्लड टेस्ट आपके डॉ. को सैंपल में एक विशेष प्रकार की रक्त कोशिका की मात्रा के बारे में विस्तृत जानकारी देता है। अगर रक्त कोशिकाओं की संख्या सामान्य से अधिक या कम है, तो यह रक्त कैंसर का संकेत हो सकता हैं। ऐसे मामलों में आपका डॉ. कैंसर कर पुष्टी के लिए दूसरे टेस्ट की भी सलाह दे सकता हैं।

ब्लड प्रोटीन टेस्ट – रक्त कोशिकाओं में इम्यूनोग्लोबुलिन भी होते हैं, जो इम्यून सेल प्रोटीन होते हैं और संक्रमण से लड़ने में आपकी सहायता करते हैं। मायलोमा कैंसर के मामले में, इन कोशिकाओं का असामान्य उत्पादन होता हैं। इसलिए, यह निर्धारित करने के लिए कि आप रक्त कैंसर से पीड़ीत हैं या नहीं, आपका डॉ. ब्लड प्रोटीन टेस्ट की सलाह दे सकता हैं।

बयोप्सी – अगर CBC की रिपोर्ट में रक्त कोशिका की संख्या बढ़ी हुई या कम हुई दिखाई देती है या फिर ब्लड प्रोटीन टेस्ट में इम्यूनोग्लोबुलिन का असामान्य स्तर दिखाई पड़ता है।

ब्लड कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

ब्लड कैंसर मूलतहः रक्त कोशिकाओं के विकार पूर्ण निमार्ण से होता हैं। इसमें हिमोग्लोबीन बार–बार कम होने और WBC बढने और प्लेटलेट कम होने की प्रमुख समस्या रहती हैं। रोगी बार–बार रक्त अल्पता का शिकार होता रहता हैं। श्री नवग्रह आश्रम द्वारा ब्लड कैंसर रोगियों को अलसी और देशी गाय के दूध के पनीर सहीत हरी सब्जियों और फलों के सलाद का अधिकतम उपयोग करने के साथ अच्छी मात्रा में दोपहर 2 बजे से रात्री 7:00 बजे तक अधिकांश हरी सब्जियों के सूप का सेवन करने की सलाह देता हैं। औषधी के रूप में 5 ग्राम हल्दी व 50 मी.ली. गौमूत्र को गर्म करके छान कर सेवन करें। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातः 5:00 बजे से 2:00 बजे दोपहर तक 2–3 बार रोगी की रूचि के फलों का ज्यूस(रस) सेवन करें, रोगी को प्रतिदिन 6 चम्मच रक्तशोधन, 6 चम्मच कैंसर किट का काड़ा बनाकर एंव 2 चम्मच हिमोग्लोबीन और 50 दिनों तक 2 चम्मच आयुर्वेदिक कीमों का सेवन शहद के साथ करें, अधिक कमजोरी होने पर आश्रम की कमजोरी नामक औषधी का सेवन दूध के साथ सेवन करें। ब्लड कैंसर रोगी हिमोग्लोबीन का स्तर 10 से निचे किसी हालत में नहीं आने दें। अगर अधिक कम होता हैं तो रक्त चढ़ा कर प्रारम्भिक दिनों में इसकी पुर्ति करें। हालत में सुधार होने पर फिर तो हिमोग्लोबीन 10 से उपर आसानी से बना रहता हैं। आश्रम की औषधियों को पुरे परहेज और आत्मविश्वास से सेवन करने से रोगी 7–8 माह में रोग मुक्त हो जाता हैं।

बोन कैंसर (हड्डियों का कैंसर)

बोन कैंसर तब होता है, जब आपकी हड्डियों में सामान्य कोशिकाएं नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं। यह सामान्य हड्डी को ट्यूमर में परिवर्तित कर देता हैं। इसका मतलब है कि यह आक्रामक रूप से बढ़ रहा है और शरीर के अन्य हिस्सों में फैल रहा है। इस ट्यूमर को अक्सर कैंसर के रूप में जाना जाता हैं। यह हड्डियों में शुरू होने वाला दुर्लभ कैंसर है। यह शरीर की किसी भी हड्डी में शुरू हो सकता है, लेकिन यह आमतौर पर पेल्विस या हाथ–पैरों की लंबी हड्डियों को प्रभावित करता हैं। कुछ प्रकार के बोन कैंसर बच्चों पर असर डालते हैं, जबकि ज्यादातर वयस्कों को प्रभावित करते हैं। सर्जिकल रिमूवल इसका सबसे आम उपचार है, लेकिन कीमो और रेडियोथैरेपी का भी उपयोग किया जा सकता हैं। हालांकि, विशेषज्ञ बोन कैंसर के कारणों का पता नहीं लगा पाए हैं, लेकिन उन्होंने हड्डी के कैंसर और अन्य कारकों के बीच कनेक्शन पाया है। सबसे जरूरी कारक अन्य कैंसर के ईलाज के दौरान रेडिएशन और ड्रग्स के संपर्क में आना है। देखा जाए, तो वर्तमान में इसके बचाव का कोई तरीका नहीं है।

बोन कैंसर शरीर के किसी भी हिस्से में मौजूद हड्डियों में विकसित हो सकता है, लेकिन यह बांह व टांगों की लंबी हड्डियों में पाया जाता हैं। यह किसी भी व्यक्ति को उसके शुरूआती 20 वर्षों में होता है, क्योंकि उस दौरान हड्डियां विकसित हो रही होती हैं। बोन कैंसर के आम प्रकारों में **ओस्टियोसार्कोमा, कोंड्रोसारकोमा और इविंग सारकोमा** आदि शामिल हैं। इसके अलावा बोन कैंसर के कुछ दुर्लभ प्रकार भी हैं, जैसे फाइब्रोसार्कोमा, लिमेयोसार्कोमा, मालिग्नेंट फाइब्रस हिस्टियोसाइटोमा, एंजियोसार्कोमा और कोरेडोमा आदि शामिल हैं। यदि कैंसर शरीर के किसी अन्य हिस्से से फैलक हड्डियों तक पहूंचा है तो उसे सेकेंडरी बोन कैंसर कहां जाता है। बोन कैंसर एक अनुवांशिक रोग के रूप में विकसित हो सकता है और कई अन्य वातावरणीय कारक भी हैं, जो इस रोग का कारण बन सकते हैं जैसे रेडियोथेरेपी के संपर्क में आना आदि। प्रभावित हड्डी

वाले हिस्से में सूजन व गंभीर दर्द होना आदि इसके प्रमुख लक्षणों में से एक हैं। बोन कैंसर का ईलाज रोग के कारण, लक्षणों की गंभीरता और व्यक्ति की शारीरिक स्थिति के आधार पर किया जाता हैं।

हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) विकसित होने के सबसे आम स्थान जांघ की हड्डी (फीमर) के निचले भाग में और पिंडली के ऊपरी भाग (टिबीया) में घुटने के पास होते हैं।

हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) विकसित होने का एक अन्य आम स्थान कंधे के पास ऊपरी बाजू की हड्डि (ह्यूमेरस) है। यह कभी–कभी सपाट हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) हड्डी के अलावा कोमल ऊतक में पाया जा सकता हैं।

हड्डियों के कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) हड्डी के अंदर (केंद्रीय ट्यूमर) या हड्डी की बाहरी सतह पर (सतह के ट्यूमर) निर्मित हो सकते हैं। बच्चों में होने वाले अधिकांश हड्डियों के कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) हड्डी के अंदर बिल्कुल मध्य में स्थित होते हैं।

हड्डियों के कैंसर का कारण :–

हड्डियों के कैंसर के सटीक कारण का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि यह आमतौर पर हड्डियों के बढ़ने के दौरान किसी असाधारण बदलाव के कारण कैंसर विकसित हो जाता हैं। कैंसर आमतौर पर कोशिका में किसी प्रकार की असामान्यता के कारण विकसित होता है। कोशिका की यह असामान्यता अनुवांशिक या बाहरी कारकों के कारण हो सकती है। इन स्थितियों में प्रभावित कोशिका विभाजन अनियंत्रित रूप से होता रहता है, जिससे ट्यूमर बन जाता है या फिर शरीर के अन्य हिस्सों में फैल जाता है। निम्न कुछ कारक दिए गए हैं, जों हड्डियों में कैंसर का कारण बन सकते हैं –

रेडिएशन के संपर्क में आना – रेडिएशन जैसे कई बाहरी कारक है, जो बोन कैंसर होने के खतरे को बढ़ा सकते हैं। जिन लोगों को किसी ईलाज के रूप में रेडिएशन थेरेपी करानी पड़ती है, उन्हें बोन कैंसर होने का खतरा बढ़ जाता हैं।

बीमारियां – ओस्टियोकांड्रोमा जैसे कुछ ट्यूमर भी हैं, जो कोंड्रोसारकोमा जैसे कैंसर होने के खतरे को बढ़ा सकते हैं।

पैजेटस रोग – जो वयस्क पैजेटस डिजीज नामक बीमारी से ग्रसित हैं, उनमें बोन कैंसर होने का खतरा रहता हैं।

हड्डियों के कैंसर के लक्षण :–

हड्डियों के कैंसर के दौरान विकसित होने वाले सभी लक्षण अन्य प्रकार के कैंसरों के समान नहीं होते हैं। हड्डियों या जोड़ो में दर्द व सूजन होना अक्सर हड्डियों के कैंसर का शुरूआती लक्षण होता हैं बच्चों के मामलों में इसे सामान्य चोट का दर्द या हड्डियां विकसित होने के लक्षण मान लिया जाता हैं। इस कारण से कई बार बच्चों में लंबे समय तक हड्डियों के कैंसर का निदान नहीं हो पाता है और बाद में यह स्थिति गंभीर हो जाती हैं। बच्चों में बोन कैंसर से निम्न लक्षण देखे जा सकते हैं –

किसी हड्डी में बार–बार दर्द व सूजन होना (दर्द कई बार गंभीर हो जाना जिसे पेन किलर से भी नियंत्रित न किया जा सके)। हड्डी में कोई गांठ या बढ़ी हुई चर्बी दिखाई देना। प्रभावित हड्डी हिस्से ठीक से हिल–डुल न पाना (जोड़ में कैंसर का ट्यूमर विकसित होने के कारण)। हड्डी में विकसित हुए ट्यूमर के आसपास तंत्रिका होने के कारण शरीर का कोई हिस्सा सुन्न होना और दर्द रहना। चक्कर आना और थकावट महसूस होना। शरीर का तापमान अधिक रहना और ठंड लगना। हल्की चोट के कारण ही हड्डियां टूट जाना (हड्डियां कमजोर पड़ने के)

हड्डियों के कैंसर के प्रकार :–

हड्डियों के कैंसर के प्रकार इस बात पर निर्भर करते हैं, कि कैंसर शरीर के किस हिस्से पर विकसित हुआ हैं। हड्डियों के कैंसर आमतौर पर दो प्रकार के होते हैं जिन्हें प्राइमरी और सेकेंडरी बोन कैंसर कहा जाता हैं।

प्राइमरी बोन कैंसर – यह बोन कैंसर का वह प्रकार है, जो हड्डियों के ऊतकों से ही शुरू होता है। हालांकि, प्राइमरी कैंसर हड्डियों से शुरू होकर किसी अन्य हिस्से में भी फैल सकता है।

प्राइमरी बोन कैंसर के प्रमुख प्रकारों में प्रमुख रूप से ओस्टियोसार्कोमा, कोंड्रोसारकोमा और इविंग सारकोमा आदि शामिल हैं।

सेकेंडरी बोन कैंसर – जब कैंसर शरीर के किसी अन्य हिस्से में विकसित होकर हड्डियों तक फैल जाए तो उसे सेकेंडरी बोन कैंसर कहां जाता है। लगभग हर प्रकार के कैंसर हड्डियों तक फैल सकते हैं, जिनमें अधिकतर निम्न हिस्सों में विकसित होने वाले कैंसर हड्डियों तक फैलने का खतरा अधिक होता है –
स्तन, पौरूष ग्रंथि (प्रोस्टेट), थायराइड, गुर्दे।

हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) क्या हैं ?

ओस्टियोसारकोमा एक प्रकार का हड्डी का कैंसर है जो ज्यादातर बच्चों और युवा वयस्कों में देखा जाता है। यह बच्चों में होने वाला एक सबसे आम केंद्रीय हड्डी का ट्यूमर हैं। भारत में हर वर्ष लगभग 400 बच्चों और किशोरों में यह रोग पाया जाता है। हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) किशोरों में होने वाला तीसरा सबसे आम कैंसर है।

हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) किसी भी हड्डी में हो सकता है, लेकिन यह आमतौर पर टांग और बाजू की लंबी हड्डियों के चौड़े सिरों में होता हैं। यह ज्यादातर हड्डी की अपरिपक्व कोशिकाओं (ओस्टियोसारकोमा) में होना शुरू होता है, जो हड्डी के नए ऊतक का निर्माण करती हैं।

हड्डियों के कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) के संकेत और लक्षण :–

हड्डियों का कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) हड्डी को क्षतिग्रस्त या कमजोर कर देता है। लक्षण ट्यूमर के स्थान पर निर्भर करते हैं। पहली बार में संकेतों को पहचानना कठिन हो सकता है और ये संकेत अन्य स्थितियों के लक्षणों के जैसे हो सकते हैं।

हड्डियों के कैंसर (ओस्टियोसारकोमा) के लक्षणों में निम्नलिखित शामिल है :– हड्डी या जोड़ों में दर्द होना। जोड़ वाली जगह को हिलाने में समस्याएं। हड्डी के ऊपर कोई गाँठ या सूजन।

लंगड़ाहट या चलने में समस्या। टूटने वाली हड्डी (फ्रैक्चर)। दर्द सप्ताह या महीनों में और बढ़ जाता हो। दर्द के कारण बच्चा आधी रात को जाग जाता हो। बिना पर्ची के दर्द निवारक दवाईयां जैसे आइबुप्रोफेन या एसिटामिनोफेन से अधिक समय तक प्र्याप्त रूप से दर्द में राहत न मिलती हो।

हड्डी कैंसर के प्रमुख चरण :–

स्टेज 1 – इस स्टेज में कैंसर सेल्स प्रभाविवत अंग में विकसित होना शुरू करते हैं। बोन कैंसर के पहले स्टेज में ट्यूमर की साइज 8 सेटीमीटर या इससे बड़ा और छोटा भी हो सकता है। इस स्टेज में कोशिकाएं जिस हिस्से में विकसित होती हैं, वहीं रहती हैं और किसी दूसरे हिस्से में फैलती नहीं हैं। इस स्टेज को लो ग्रेड स्टेज भी कहा जाता हैं।

स्टेज 2 – बोन कैंसर के स्टेज 2 में कोशिकाएं या कैंसर सेल्स तेजी से बढ़ना शुरू होती हैं। पहले स्टेज के मुकाबले इस स्टेज में कोशिकाओं का विकास तेजी से होता है और ज्यादा हिस्से को प्रभावित करती हैं।

स्टेज 3 – बोन कैंसर के तीसरे स्टेज में ट्यूमर या कैंसर सेल्स हड्डी के दो अलग–अलग हिस्सों में फैल जाता है। इस स्टेज को हाई ग्रेड स्टेज या हाई ग्रेड कैंसर माना जाता है। हालांकि स्टेज 3 तक कैंसर की कोशिकाएं लिम्फ नोड्स तक नहीं पहुंच पाती हैं।

स्टेज 4 – बोन कैंसर के चौथे स्टेज में कैंसर सेल्स लिम्फ नोड्स, फेफड़े और शरीर के अलग–अलग अंगों को प्रभावित करते हैं। इस स्टेज में कोशिकाएं शरीर के किसी भी अंग मे फैल सकती हैं। बोन कैंसर के स्टेज 4 को हाई ग्रेड और एडवांस कैंसर माना जाता है। इस स्टेज में शरीर की स्वस्थ कोशिकाएं भी बुरी तरह प्रभावित होने लगती हैं और मरीज की परेशानियां बढ़ जाती हैं।

बोन कैंसर की आयुर्वेदिक चिकित्सा

आयुर्वेद की मान्यता में बोन कैंसर यानी हड्डी का कैंसर अन्य कैंसर की तुलना में ठीक होने में अधिक समय लेता हैं, इसका

कारण शरीर रचना और क्रिया विज्ञान का सिद्धान्त यह कहता हैं, की रस, रक्त, मांस, चर्बी, हड्डी, बोनमेरो, शुक्ररज और औज के क्रम में हड्डी पांचवे क्रम पर आती हैं अतः इसके ठीक होने में अधिक समय लगता हैं।

आश्रम द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली औषधीयों में रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच का काढ़ा एक साथ बनाकर प्रातःकाल सेवन करें और इतनी ही मात्रा में सांयकाल 5:00 बजे पूर्व काढ़ा सेवन करना हैं। केल्शियम हल्दी 2.5 ग्राम आयुर्वेदिक कीमों 2 चम्मच और हिमोग्लोबीन 2 चम्मच इन इन तिनों को एक साथ शहद के साथ सेवन करें इतनी ही मात्रा में सांयकल 4:00 बजे के आस–पास पुनः सेवन करें। हरे पत्तों का ज्यूस प्रातः और दोपहर दो बार सेवन करना हैं। गौमूत्र 50 मी.ली. और केल्शियम हल्दी 5 ग्राम दोनों का एक उबाला लेकर छानकर अपनी रूची अनुसार पानी मिलाकर प्रातःकाल सेवन करें इतनी ही मात्रा में सांयकाल भी सेवन करें।

क्योंकि इस कैंसर में हड्डीयां अधिक कमजोर हो जोती हैं, अतः अधिक कठोर परिश्रम से बचने का प्रयास करें।

स्किन कैंसर

त्वचा का कैंसर क्या है ?

त्वचा के ऊतकों में घातक कोशिकाओं के विकसित होने के कई कारण हो सकते हैं। इस स्थिति को त्वचा कैंसर कहा जाता है। हालांकि एक प्रकार का कैंसर होने के कारण, त्वचा कैंसर का अगर जल्दी पता चल जाए तो इसका इलाज संभव है। इसलिए, यदि आपको अपनी त्वचा या आपकी त्वचा के किसी भाग पर कोई असामान्य निशान या गांठ मिलता है जो किसी भी तरह से रंग बदलने या आकृति या आकार में पतिवर्तन के लक्षण दिखाता है। त्वचा कैंसर के तीन सबसे आम प्रकार बीसीसी, एससीसी और मेलेनोमा हैं। एससीसी या स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा एक प्रकार का कैंसर है, जो त्वचा के एपिडर्मिस में घातक कोशिकाओं के निर्माण के कारण होते है। बीसीसी या बेसल सेल कार्सिनोमा एपिडर्मिस की स्क्वैमस कोशिकाओं को घरने वाली बेसल कोशिकाओं में

विकसित होता है। मेलेनोमा त्वचा कैंसर का सबसे खतरनाक प्रकार है। मानव त्वचा में मेलानोसाइट्स नामक कोशिकाएं होती हैं, जो त्वचा के रंग के वर्णक मेलेनिन का उत्पादन करती हैं। जब ये मेलानोसाइट्स कैंसरग्रस्त हो जाते हैं, तो स्थिति को मेलेनोमा या घातक मेलेनोमा कहा जाता हैं।

स्किन कैंसर के कारण

आनुवंशिक विकार जैसे डाउन सिंड्रोम, बेंजीन जैसे हानिकारक रसायनों के संपर्क में आना, धूम्रपान और तंबाकू का उपयोग करना, मोटापा।

स्किन कैंसर के शुरूआती लक्षण

कैंसर एक जैसे नहीं दिखते स्किन कैंसर शुरू में स्किन सरफेस पर एक नोडयूल, दाने या पैच के रूप में दिखाई दे सकता है, त्वचा का कैंसर शरीर के उन हिस्सों में भी विकसित हो सकता है जो आमतौर पर धूप के संपर्क में नहीं आते है इसलिए टांगों, आर्म्स, चेहरे और गर्दन की जांच करने के अलावा पैर की उंगलियों के बीच के एरिया में नाखूनों के नीचे, हाथों की हथेलियों और पैरो के तलवों, जननांगों तक में हो सकता हैं। जब मेलेनोमा गहरे रंग की त्वचा वाले लोगों में होता है, तो इसके उन क्षेत्रों में होने की संभावना अधिक होती है जो सामान्य रूप से सूर्य के संपर्क में नहीं आते हैं, जैसे हाथों की हथेलियां और पैरो के तलवे।

स्किन कैंसर के लक्षण :– त्वचा पर अचानक से बहुत अधिक तिल और निशान बनने लगना। किसी पुराने तिल या त्वचा लहसुन का आकार अचानक से बढ़ जाना। त्वचा पर दिख रहे किसी तिलनुमा निशान से लगातार पपड़ी उतरना। त्वचा पर लाल पपड़ीदार निशान बन जाना और समय के साथ इनका आकार बढ़ते जाना।

स्किन कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसमें त्वचा के टिश्यू में घातक (कैंसर) कोशिकाएं बनती है, यानी जब त्वचा की कोंशिकाएं

(स्किन सेल) असमान्य रूप से बढ़ने लगे तो उसे स्किन कैंसर कहते है। स्किन कैंसर कई प्रकार के होते है, ये समान्यत त्वचा के उन हिस्सो में होता है जो सूरज के किरणों के सम्पर्क में आते है जैसे चेहरा, गर्दन, और हाथ।

स्किन कैंसर के सबसे आम प्रकार

(1) बैसल सेल कर्सिनोमा –

बैसल सेल कार्सिनोमा आमतौर पर शरीर के उन हिस्सों में होता है जो सूरज के संपर्क में आते हैं, जैसे आपकी गर्दन या चेहरा।

(2) स्क्वैमस सेल्स कार्सिनोमा –

स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा आपके शरीर के सूर्य के संपर्क वाले क्षेत्रों पर होता है, जैसे कि आपका चेहरा, कान और हाथ यह गहरे रंग की त्वचा वाले लोगों में अधिक दिखाई देता है और उन क्षेत्रों में स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा विकसित होने की संभावना अधिक होती है जो अक्सर सूर्य के संपर्क में नहीं आते है।

(3) मेलेनोमा –

मेलेनोमा आपके शरीर पर कहीं भी विकसित हो सकता है, मेलेनोमा अक्सर प्रभावित पुरूषों के चेहरे या धड़ पर दिखाई देता हैं। महिलाओं में इस प्रकार का कैंसर ज्यादातर निचलें पैरों में विकसित होता है। पुरूषों और महिलाओं दोनों में, त्वचा पर मेलेनोमा हो सकता है जो सूर्य के संपर्क में नहीं आया हैं।

स्किन कैंसर की आयुर्वंदिक चिकित्सा

चमड़ी (त्वचा) के कैंसर की चिकित्सा आयुर्वेद में सफलता पूर्ण की जाती हैं। त्वचा कैंसर रोगी को सुती कपड़ो को धारण करना चाहिए, ढीले कपड़े पहनना चाहिए। स्नान करने के लिए साबुन और शेम्पु के बजाए मिट्टी या उबटन का प्रयोग करने की सलाह दी जाती हैं।

स्किन कैंसर के रोगी को रक्तशोधन 6 चम्मच, कैंसर किट 6 चम्मच, प्रतिरक्षा 3 चम्मच का काढ़ा बनाकर और 5 ग्राम हल्दी 50 मी.ली. गौमूत्र में गर्म करके छानकर सेवन करने के साथ हरे पत्तो के ज्यूस का सेवन करना अत्यधिक लाभप्रद रहता

हैं। उपरोक्त लिखी मात्रा को सांयकाल भी उपर लिखी विधी अनुसार सेवन करना आवश्यक हैं।

त्वचा कैंसर रोगी को विटामीन सी. का प्रयाप्त मात्रा में सेवन करना अधिक लाभप्रद रहता हैं। विटामीन सी. की आपुर्ति के लिए निंबु, अनार, संतरा, किनु, मोसम्मी, अनानास, आम जैसे खट्टे और विटामीन सी. युक्त फलों और सब्जियों का सेवन करना बहुत लाभप्रद हैं। त्वचा कैंसर के प्रभावित स्थान पर ऐलोवेरा, चंदन, देशी गाय के घी व हल्दी का मलहम बनाकर लेप करने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

मुझे पूरा विश्वास हैं की, इस पूरी पुस्तक को पढ़ने के बाद, पूरी दुनिया में अगर 10 व्यक्ति भी कैंसर के खिलाफ उठ खड़े होते हैं, या 10 लोग भी गुटखा, तम्बाकू, का परित्याग कर देते हैं तो मैं समझुगां की मैरा ये पुस्तक लिखना सार्थक हो गया।

आपने क्या फैसला किया हैं कृपया अपने हाथ से लिखें
फैसला.. ।